VISIONIAS

www.visionias.in

Classroom Study Material

आधुनिक भारत का इतिहास

विश्व इतिहास : भाग 1B

VISION IAS
Downloaded From www.studymasterofficial.com
www.UPSCPDF.com

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

विषय सूची

25. 1914 में विश्व ____ 4
25.1. यूरोप का अभी भी शेष विश्व पर प्रभुत्व ____ 4
25.2. विश्व शक्तियों की राजनीतिक व्यवस्था में व्यापक भिन्नता ____ 4
25.3. 1880 के बाद साम्राज्यवादी विस्तार ____ 4
26. यूरोप में होने वाले संघर्ष के कारण ____ 5
27. प्रथम विश्व युद्ध से पूर्व की कुछ प्रमुख घटनाएं ____ 6
28. आर्कड्यूक की हत्या और प्रथम विश्व युद्ध में इसकी परिणति के लिए उत्तरदायी कारण ____ 8
29. प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान ____ 11
30. वुडरो विल्सन के 14 सूत्र (1918) ____ 13
31. मित्र शक्तियों का दृष्टिकोण और शांति समझौते ____ 14
31.1. वर्साय की संधि ____ 14
31.2. अन्य संधियाँ ____ 15
31.2.1. सेंट जर्मेन की संधि (1919) और ट्रायनॉन की संधि (1920) ____ 15
31.2.2. सेवर्स/सेव्रे की संधि (Treaty of Sevres; 1920) ____ 16
31.3. शांति संधियों की समालोचना ____ 16
32. प्रथम विश्व युद्ध के प्रभाव (1914-19) ____ 18
33. लीग ऑफ़ नेशन्स (राष्ट्र संघ) ____ 21
33.1. लीग ऑफ़ नेशन्स (राष्ट्रसंघ) के उद्देश्य ____ 21
33.2. लीग की संविदा ____ 21
33.3. लीग ऑफ़ नेशन्स (राष्ट्रमंडल) का संगठनात्मक ढांचा ____ 21
33.4. राष्ट्रसंघ के प्रदर्शन का मूल्यांकन ____ 22
33.4.1. राष्ट्रसंघ की सफलता ____ 22
33.4.2. राष्ट्र संघ की विफलता/प्रभावहीनता के कारण ____ 23
33.5. राष्ट्र संघ की विफलता का प्रभाव ____ 26
33.6. राष्ट्रसंघ के साथ संयुक्त राष्ट्र संघ की तुलना ____ 26
33.7. संयुक्त राष्ट्र और राष्ट्रसंघ के बीच समानताएं : ____ 27
34. 1919-29 तक का विश्व ____ 28
35. प्रथम विश्व युद्ध के बाद अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में सुधार की दिशा में किए गए प्रयास ____ 29
36. 1929 के बाद की घटनाएं ____ 31
36.1. 1929 का आर्थिक संकट ____ 31

36.2. लॉसेन सम्मेलन (1932) 31
36.3. विश्व निःशस्त्रीकरण सम्मेलन 31
37. फ्रांस-जर्मनी संबंध (1919-33) 32
38. ब्रिटेन-सोवियत रूस संबंध (1919-33) 34
39. सोवियत रूस-जर्मनी संबंध (1919-33) 34
40. सोवियत संघ और फ्रांस के परस्पर सम्बन्ध (1919-33) 35
40.1. वर्साय की संधि 36
41. संयुक्त राज्य अमेरिका की विदेश नीति 36
42. अंतर्राष्ट्रीय संबंध (1933-39) 38
42.1. एडोल्फ हिटलर और नाजी 44
42.1.1. हिटलर के उद्देश्य 45
42.1.2. हिटलर की सफलताएँ 45

VISION IAS
Downloaded From www.studymasterofficial.com
www.UPSCPDF.com

25. 1914 में विश्व

25.1. यूरोप का अभी भी शेष विश्व पर प्रभुत्व

- 1914 ई. में शेष विश्व पर यूरोप का प्रभुत्व कायम था, लेकिन यूरोप से बाहर संयुक्त राज्य अमेरिका और जापान जैसी महत्वपूर्ण शक्तियाँ भी उपस्थित थीं। इसके अतिरिक्त यूरोप के भीतर सभी यूरोपीय देश शक्तिशाली नहीं थे। जर्मनी, फ्रांस और ब्रिटेन ही प्रमुख शक्तियाँ थे। शेष यूरोप अभी भी आर्थिक आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में था।
- 1914 तक, जर्मनी कच्चे लोहे और स्टील के उत्पादन के मामले में ब्रिटेन से आगे था, लेकिन कोयले के उत्पादन में पीछे था। वहीं दूसरी ओर फ्रांस, इटली, बेल्जियम और ऑस्ट्रिया-हंगरी जैसे देश ब्रिटेन और जर्मनी से काफी पीछे थे। रूस औद्योगीकरण आरंभ करने वाला अंतिम देश था। 1914 में रूसी उद्योगों का तेजी से विस्तार हो रहा था लेकिन फिर भी इसकी अर्थव्यवस्था प्रमुख रूप से कृषि अर्थव्यवस्था थी एवं जर्मनी और ब्रिटेन से बहुत पीछे थी। रूस राजनीतिक अशांति का भी सामना कर रहा था। 1905 में एक रूसी क्रांति हो चुकी थी और दूसरी 1917 में हुई थी।
- यूरोप से बाहर, संयुक्त राज्य अमेरिका और जापान ने 1870 के दशक के आसपास औद्योगीकरण आरंभ किया। 1914 में जर्मनी और ब्रिटेन की तुलना में संयुक्त राज्य अमेरिका कच्चे लोहे, इस्पात और कोयले का अधिक उत्पादन कर रहा था। संयुक्त राज्य अमेरिका ने 1823 में मुनरो सिद्धांत अपनाया था और 1914 तक इसने लगभग सारे अमेरिकी महाद्वीप पर अपना वर्चस्व सुनिश्चित कर लिया था, लेकिन यूरोप के मामलों से यह काफी अलग-थलग था। जापान एक प्रमुख वस्त्र निर्यातक देश के रूप में उभर चुका था। 1904-05 के रूस-जापान युद्ध में रूस को हराकर जापान एक प्रमुख विश्व शक्ति के रूप में मान्यता प्राप्त कर चुका था। जापानी साम्राज्यवाद चीन की ओर निर्देशित था। जापान के प्रति तुष्टीकरण की अमेरिकी नीति ने उसे प्रशांत क्षेत्र में मजबूत प्रतिद्वंद्वी बना दिया था। इस प्रकार 1914 तक, संयुक्त राज्य अमेरिका और जापान दोनों साम्राज्यवादी शक्तियों के रूप में उभर चुके थे।

25.2. विश्व शक्तियों की राजनीतिक व्यवस्था में व्यापक भिन्नता

- संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस की राजनीतिक व्यवस्था लोकतांत्रिक सिद्धांतों पर आधारित थी। जर्मनी में निम्न सदन था लेकिन वास्तविक शक्ति चांसलर और कैसर (सम्राट) के पद में निहित थी। इटली में संवैधानिक राजतंत्र था, लेकिन मताधिकार केवल समृद्ध लोगों के लिए ही उपलब्ध था। मेइजी पुनर्स्थापना (1868) के बाद जापान ने 1889 में एक संविधान बनाया था, जिसमें निम्न सदन (डायट) का प्रावधान किया गया था। लेकिन डायट के पास सीमित शक्तियां थीं, मताधिकार केवल 3% आबादी को ही उपलब्ध था और वास्तविक शक्ति सेना, नौसेना, सम्राट (मेइजी) और प्रिवी कौंसिल के हाथों में थी।

25.3. 1880 के बाद साम्राज्यवादी विस्तार

- 1870 के दशक में औद्योगिक क्रांति के बाद, कई यूरोपीय राष्ट्र अपने औपनिवेशिक साम्राज्य में वृद्धि करने के लिए उत्सुक थे। 1914 तक प्रमुख यूरोपीय शक्तियाँ पूरे अफ्रीका का बंदरबांट कर चुकी थीं। यद्यपि, चीन मांचू राजवंश उखाड़ फेंके जाने के बाद 1911 से ही नाममात्र का एक गणराज्य था, लेकिन इसे संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, फ्रांस, ब्रिटेन और जर्मनी द्वारा एक अंतर्राष्ट्रीय उपनिवेश में परिवर्तित कर दिया गया था।

VISION IAS
Downloaded From www.studymasterofficial.com
www.UPSCPDF.com

26. यूरोप में होने वाले संघर्ष के कारण

निम्नलिखित तथ्यों को यूरोपीय शक्तियों के बीच होने वाले संघर्ष के कुछ प्रमुख कारणों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है:

- अफ्रीका, एशिया और प्रशांत क्षेत्रों में **उपनिवेशों के लिए प्रतिद्वंद्विता**।
- **नौसैनिक प्रतिद्वंद्विता:** यह औपनिवेशिक प्रतिद्वंद्विता का ही एक परिणाम था जोकि ब्रिटेन और जर्मनी के बीच सबसे अधिक देखने को मिला। जर्मनी ने उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद की दौड़ में विलंब से प्रवेश किया था। अपने औपनिवेशिक साम्राज्य के विस्तार के लिए यह अन्य औपनिवेशिक शक्तियों को धमकाने हेतु अपनी नौसेना का उपयोग करना चाहता था। जर्मनी राष्ट्रीय सुरक्षा का हवाला देकर अपनी नौसैनिक शक्ति बढ़ाने के लिए उत्सुक था जबकि अंग्रेजों ने यह तर्क देते हुए जर्मन नौसेना के गठन का विरोध किया कि केवल ब्रिटेन के पास नौसैनिक सर्वोच्चता का अधिकार है। ब्रिटेन का तर्क था कि अपने औपनिवेशिक साम्राज्य का निरंतर संरक्षण सुनिश्चित करने के लिए वह नौसैनिक शक्ति के मामले में सर्वोच्चता का अधिकारी है, जो 20वीं शताब्दी तक सबसे विस्तृत और विशाल था।
- 1870 के फ्रांस-प्रशा युद्ध में जर्मनी द्वारा फ़्रांस के हाथों से **अल्सेस-लॉरेन के क्षेत्र को ले लेना** जर्मन-फ्रांस प्रतिद्वंद्विता का कारण थी।

चित्र: अल्सेस-लॉरेन क्षेत्र

- **बाल्कन में हैब्सबर्ग साम्राज्य की महत्वाकांक्षा पर रूस को संदेह** था। बाल्कन भूमध्य सागर के उत्तर पूर्व में स्थित क्षेत्र है। यहाँ स्लाव लोगों की जनसंख्या सर्वाधिक थी। रूसी ज़ार शासन / रोमनोव राजवंश स्लावों के समूह से संबंधित था और बाल्कन में उसकी अपनी महत्वाकांक्षाएं भी थीं।
- **सर्बियाई राष्ट्रवाद:** सर्बिया स्लाव लोगों द्वारा आबाद बाल्कन क्षेत्र को यूगोस्लाविया के रूप में एकीकृत करना चाहता था। इस प्रकार के यूगोस्लाविया के निर्माण हेतु हैब्सबर्ग साम्राज्य से कुछ भागों को अलग करने की आवश्यकता पड़ती, जिसमें स्लाव सहित विभिन्न नृजातीय समूहों के लोग निवास करते थे। एक बार जब स्लाव लोग यूगोस्लाविया के रूप में एकीकृत हो जाते तो अन्य समूह भी अलग होने की मांग करते। ऐसे एकल यूगोस्लाविया के विचार से हैब्सबर्ग साम्राज्य की अखंडता को खतरा उत्पन्न हो गया था।
- **यूरोप स्वयं दो गठबंधनों में विभाजित हो गया था: ट्रिपल एलायंस** जिसमें *जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी और इटली* थे और **ट्रिपल एंटेंट** जिसमें *ब्रिटेन, फ्रांस और रूस* सम्मिलित थे। लेकिन इन गठबंधनों में दृढ़ता नहीं थी। वास्तव में, प्रथम विश्व युद्ध में इटली ने ब्रिटेन और फ्रांस की ओर से युद्ध लड़ा था। प्रथम विश्व युद्ध **धुरी शक्तियों** (Central Powers) (जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी, ऑटोमन साम्राज्य और बुल्गारिया) और **मित्र राष्ट्रों** (Allied Powers) (इटली, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस और संयुक्त राज्य अमेरिका) के बीच लड़ा गया था।

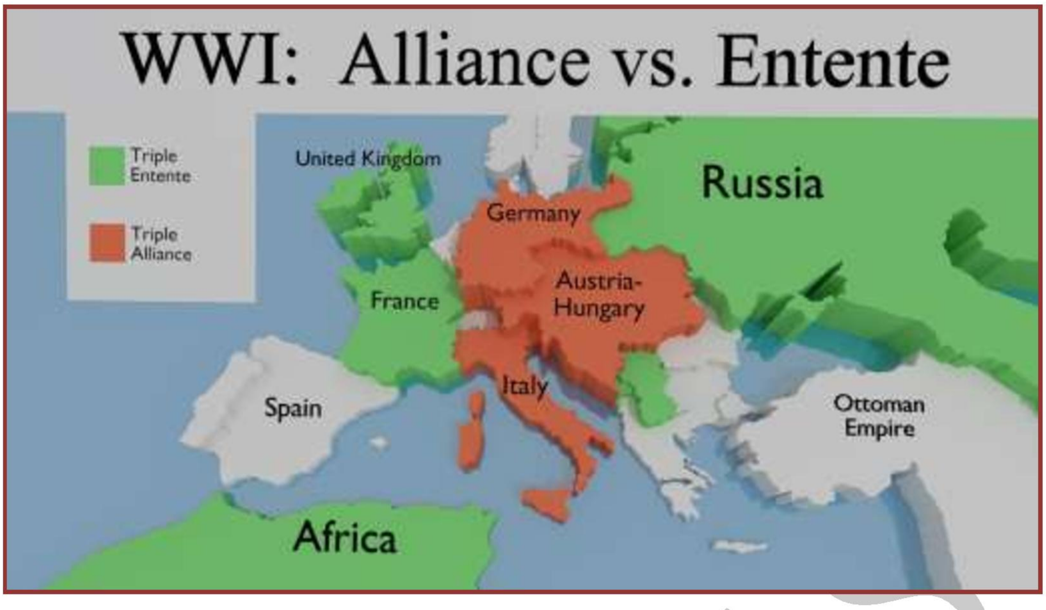

27. प्रथम विश्व युद्ध से पूर्व की कुछ प्रमुख घटनाएं

- **मोरक्को संकट (1905-06):** 1904-05 में ब्रिटेन और फ्रांस ने एंटेंट कॉर्डियल (Entente Cordiale) पर इस शर्त के साथ हस्ताक्षर किया था कि सूडान और मिस्र पर ब्रिटेन के नियंत्रण को फ्रांस द्वारा मान्यता प्रदान की जाएगी और मोरक्को पर फ्रांस के विशेष अधिकारों को ब्रिटेन द्वारा मान्यता प्रदान की जाएगी। मोरक्को में बढ़ते फ्रांसीसी प्रभाव से जर्मनी बेचैन था। उसने मोरक्को की स्वतंत्रता बनाए रखने का वचन दिया और एक सम्मेलन बुलाया। लेकिन सम्मेलन में इटली, स्पेन, रूस और ब्रिटेन ने फ्रांस का समर्थन किया और फ्रांस को मोरक्को के बैंकों और पुलिस पर नियंत्रण प्राप्त हो गया। यह जर्मनी के लिए एक राजनयिक हार थी।
- **1907 का ब्रिटेन-रूस समझौता:** इस समझौते से एशिया में इनका विवाद समाप्त हो गया। अफगानिस्तान और तिब्बत को ब्रिटिश प्रभाव क्षेत्र मान लिया गया और ईरान को तीन क्षेत्रों में विभाजित कर दिया गया। उत्तरी ईरान को रूसी क्षेत्र के रूप में, केंद्रीय क्षेत्र को मध्यस्थ क्षेत्र के रूप में और दक्षिण भाग को ब्रिटिश क्षेत्र के रूप में मान्यता दे दी गई। रूस को इस समझौते के बाद अपने औद्योगिक विकास के लिए ब्रिटिश निवेश प्राप्त होने की भी आशा थी।
- **बोस्निया संकट (1908):** ऑस्ट्रिया-हंगरी ने दुर्बल ऑटोमन साम्राज्य से बोस्निया को हड़प लिया। बोस्निया में स्लाव लोगों की काफी बड़ी आबादी थी और इस प्रकार सर्बिया भविष्य के यूगोस्लाविया के अभिन्न अंग के रूप में बोस्निया को प्राप्त करने के लिए भी उत्सुक था। सर्बिया ने रूस से सहायता मांगी। रूस ने इस मुद्दे पर सम्मेलन आयोजित करने का प्रयास किया। लेकिन जब यह स्पष्ट हो गया कि सैन्य संघर्ष की स्थिति में जर्मनी हैब्सबर्ग साम्राज्य की सहायता करेगा तो कोई सम्मेलन आयोजित नहीं किया गया क्योंकि ब्रिटेन और फ्रांस ने सर्बिया से समर्थन वापस ले लिया था। वे जर्मनी के साथ सीधे सैन्य संघर्ष से बचना चाहते थे। रूस सर्बिया के पक्ष में कोई कार्रवाई करने के लिए सैन्य रूप से मजबूत नहीं था। इस अपमान के बाद रूस ने अपना सैन्यीकरण आरंभ किया ताकि यदि भविष्य में आवश्यकता उत्पन्न हो तो वह सर्बिया की सहायता कर सके। रूस अब बाल्कन में हैब्सबर्ग साम्राज्य की महत्वाकांक्षा को लेकर अधिक संदिग्ध था; और सर्बिया ऑस्ट्रिया-हंगरी का कटु प्रतिद्वंद्वी बन गया।
- **अगादीर संकट (1911):** जब फ्रांस ने मोरक्को में सैनिक तैनात कर दिए तो जर्मनी मोरक्को के फ्रांसीसी नियंत्रण में आ जाने को लेकर चिंतित हो उठा। उसने मोरक्को के निकट अगादीर द्वीप पर अपने युद्धपोत भेज दिए। उसने फ्रांस को धमकी दी कि यदि वह अपने सैनिक वापस नहीं बुलाएगा

VISION IAS
Downloaded From www.studymasterofficial.com
WWW.UPSCPDF.com

तो जर्मनी अगादीर पर कब्जा कर लेगा। ब्रिटेन को इस बात की चिंता थी कि यदि जर्मनी अगादीर पर कब्जा कर लेगा तो वह ब्रिटिश व्यापारिक मार्गों के लिए खतरा पैदा करने की स्थिति में आ जाएगा। ब्रिटेन ने पुन: फ्रांस का पक्ष लिया। समझौते के अंतर्गत, जर्मनी को फ्रांसीसी कांगो में एक छोटी सी पट्टी दे दी गई और बदले में जर्मनी को मोरक्को पर फ्रांसीसी नियंत्रण को मान्यता देने के लिए विवश किया गया। जर्मन जनमत फ्रांस और ब्रिटेन के विरूद्ध कटु हो गया और इस घटना ने ब्रिटेन और जर्मनी के बीच नौसैनिक प्रतिद्वंद्विता को और बढ़ावा दिया।

- **प्रथम बाल्कन युद्ध (1912):** बाल्कन लीग (मोंटेनेग्रो, सर्बिया, ग्रीस, बुल्गारिया) ने तुर्की पर आक्रमण कर दिया और यूरोप में ऑटोमन साम्राज्य (तुर्क साम्राज्य) के अधिकांश क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया। जर्मनी और ब्रिटेन ने युद्ध विराम करने के लिए मध्यस्थता की। शांति समझौते के अंतर्गत, यूरोप में ऑटोमन साम्राज्य का क्षेत्र बाल्कन राज्यों के बीच विभाजित कर दिया गया। सर्बिया अप्रसन्न था क्योंकि वह अल्बानिया चाहता था जो उसे समुद्र तक पहुंच प्रदान करता लेकिन अल्बानिया को एक स्वतंत्र राज्य बना दिया गया। स्पष्ट रूप से सर्बिया के विरूद्ध ऑस्ट्रिया काम कर रहा था, जिसका माध्यम जर्मनी था।

- **द्वितीय बाल्कन युद्ध 1913:** यह युद्ध बुल्गारिया के विरूद्ध ग्रीस, रोमानिया, तुर्की और सर्बिया ने लड़ा था। बुल्गारिया ने सर्बिया पर आक्रमण कर दिया क्योंकि वह प्रथम बाल्कन युद्ध के अंत में मकदूनिया (मेसीडोनिया) का अधिकांश भाग सर्बिया को दिए जाने से अप्रसन्न था। युद्ध में अपनी हार के बाद बुल्गारिया ने प्रथम बाल्कन युद्ध से प्राप्त सभी क्षेत्रों को खो दिया। जर्मनी ने ऑस्ट्रिया-हंगरी को बुल्गारिया की सैन्य सहायता करने से रोक दिया था। वहीं दूसरी ओर, ब्रिटेन सर्बिया की सहायता के लिए नहीं आया। जर्मनी ने इसे रूसियों से अंग्रेजों के विलगाव के संकेत के रूप में लिया। द्वितीय बाल्कन युद्ध के परिणाम स्वरूप एक मजबूत सर्बिया उभरा, जो अब यूगोस्लाविया का लक्ष्य साकार करने के लिए हैब्सबर्ग साम्राज्य के क्रोट और सर्ब (दोनों स्लाव) को उकसाने के लिए कटिबद्ध था।

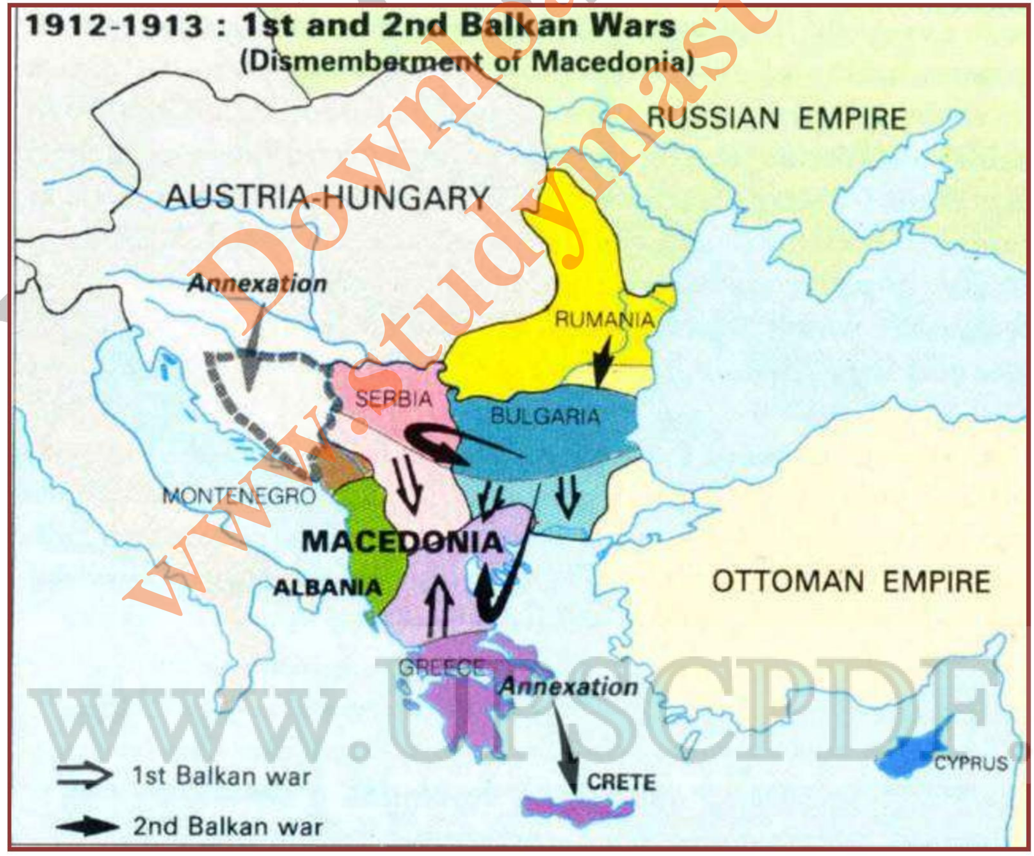

Downloaded From www.studymasterofficial.com
www.UPSCPDF.com

- **ऑस्ट्रिया के आर्कड्यूक फ्रैन्ज़ फर्डिनेंड की बोस्निया की राजधानी सेराजेवो में हत्या (28 जून 1914):** बोस्निया को हैब्सबर्ग साम्राज्य ने हड़प लिया था और बोस्नियाई लोग सर्बिया के साथ थे। एक गुप्त समाज ने हत्या की साजिश रची और बोस्नियाई सरकार इस षडयंत्र से अवगत थी लेकिन इसे रोकने के लिए उसने कुछ नहीं किया। यह घटना निश्चित रूप से एक आतंकवादी कृत्य थी। ऑस्ट्रिया-हंगरी ने इस घटना को सर्बिया पर कब्जे का प्रयास करने के एक अवसर के रूप में लिया। उसने सर्बिया के समक्ष कुछ मांगें रखीं और इसके लिए समय सीमा निर्धारित की। सर्बिया ने अधिकांश मांगों को स्वीकार कर लिया, लेकिन वह सभी मांगों पर सहमत नहीं था क्योंकि सभी मांगों को स्वीकार करने का अर्थ था हैब्सबर्ग साम्राज्य के समक्ष सर्बिया की संप्रभुता का आत्मसमर्पण। आक्रमण से डरकर सर्बिया ने सैन्य लामबंदी का आदेश दे दिया। समय सीमा समाप्त होने के बाद, ऑस्ट्रिया-हंगरी ने सर्बिया के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इस हत्याकांड ने प्रथम विश्व युद्ध के तात्कालिक कारण के रूप में कार्य किया।

चित्र: आर्कड्यूक फ्रैन्ज़ फर्डिनेंड अपनी सेराजेवो यात्रा के दौरान

28. आर्कड्यूक की हत्या और प्रथम विश्व युद्ध में इसकी परिणति के लिए उत्तरदायी कारण

निश्चित रूप से सर्बिया और हैब्सबर्ग साम्राज्य के मध्य विवाद सर्बिया और ऑस्ट्रिया के बीच युद्ध के प्रस्फोट के लिए उत्तरदायी था, लेकिन इसे प्रथम विश्व युद्ध का एकमात्र कारण नहीं माना जा सकता। सर्बिया और ऑस्ट्रिया का युद्ध निम्नलिखित कारणों से विश्व युद्ध में परिणत हुआ:

- **गठबंधनों का संजाल:** यह उस गठबंधन प्रणाली को संदर्भित करता है, जिसमें यूरोप ने स्वयं को संगठित किया था। इसने प्रत्येक पक्ष के मित्रों का युद्ध में प्रवेश कराया। सर्बिया द्वारा सभी मांगों को पूरा करने में विफल रहने पर जब ऑस्ट्रिया ने सर्बिया के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी तो रूस ने सर्बिया के साथ अपने गठबंधन का सम्मान करते हुए पूर्ण लामबंदी का आदेश दिया। परिणामस्वरूप जर्मनी ने सैनिकों की लामबंदी की और रूस के विरूद्ध युद्ध घोषित कर दिया क्योंकि रूस ने ऑस्ट्रिया के विरूद्ध सैनिकों की लामबंदी न करने की जर्मन मांग को ठुकरा दिया था। पुनः जर्मनी का ऑस्ट्रिया के साथ गठबंधन था। तत्पश्चात जर्मनी ने ऑटोमन साम्राज्य के साथ गठबंधन किया और फ्रांस के विरूद्ध युद्ध घोषित कर दिया। जर्मनी का मानना था कि 1894 के फ़्रांसीसी-रूसी गठबंधन का सम्मान करते हुए फ़्रांस रूस के पक्ष में युद्ध में प्रवेश कर सकता है।

जर्मन युद्ध योजना को **श्लीफेन योजना** के रूप में भी जाना जाता है, जिसका उद्देश्य मात्र 6 सप्ताह में फ्रांस पर जर्मनी की विजय थी। ऐसा केवल तभी संभव था जब जर्मनी बेल्जियम से होकर फ्रांस पर हमला करता, जो फ़्रांस और जर्मनी के बीच अवस्थित था। चूँकि ब्रिटेन बेल्जियम का मित्र था और इसने उसकी तटस्थता की गारंटी दी थी, अत: उसने बेल्जियम पर हमला होने पर जर्मनी के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। जापान ने ब्रिटेन के साथ अपने गठबंधन का सम्मान करते हुए युद्ध में प्रवेश किया। इस प्रकार, गठबंधन प्रणाली के कारण सभी प्रमुख शक्तियां एक-दूसरे के साथ युद्धरत हो गईं। लेकिन यही एकमात्र कारण नहीं था क्योंकि इससे पहले भी ऐसे संघर्ष हो चुके थे और वे विश्व युद्ध में परिणत नहीं हुए थे।

- **साम्राज्यवाद:** अफ्रीका और सुदूर पूर्व में औपनिवेशिक प्रतिद्वंद्विता भी इसके लिए उत्तरदायी थी। फ़्रांस, ब्रिटेन और अन्य देशों ने जर्मनी की औपनिवेशिक महत्वाकांक्षाओं का गला घोंटते हुए मोरक्को संकट में उसके विरूद्ध गठबंधन बना लिया था। जापान प्रशांत महासागर क्षेत्र में अवस्थित जर्मनी के नियंत्रण वाले द्वीपों पर कब्ज़ा चाहता था। अतः इसने मित्र शक्तियों के पक्ष में युद्ध में प्रवेश किया। इटली ने और अधिक भू-क्षेत्र मिलने के वादे पर 1915 में मित्र शक्तियों की ओर से युद्ध में प्रवेश किया।
- जर्मनी और ब्रिटेन के बीच **नौसैनिक प्रतिद्वंदिता** से तनाव में वृद्धि हुई और दोनों प्रतिद्वंदी बन गए। समुद्री युद्ध में एक-दूसरे को हराकर दोनों शक्तियाँ सदैव के लिए अपना नौसैनिक वर्चस्व स्थापित करने की महत्वाकांक्षा रखती थीं।
- लेनिन ने लाभ के उद्देश्य से हो रही आर्थिक प्रतिद्वंद्विता को युद्ध के मूल कारण के रूप में देखा, अतः उसने पूंजीवाद को युद्ध के लिए दोषी ठहराया।
- रूस ने सर्बिया का समर्थन करके युद्ध की संभावना को और अधिक बढ़ा दिया। यदि रूस ने सर्बिया को ऑस्ट्रिया से अकेले निपटने दिया होता तो शायद जर्मनी ने युद्ध में प्रवेश नहीं किया होता। रूस हमेशा पूर्वी यूरोप में अपना प्रभाव स्थापित करना चाहता था। लेकिन साथ ही उसकी कुछ वास्तविक चिंताएं भी थीं। ऑटोमन साम्राज्य पहले से ही जर्मनी और ऑस्ट्रिया के प्रभाव में था। यदि ऑस्ट्रिया सर्बिया को पराजित कर देता तो डारडेनल्स ऑस्ट्रिया और जर्मनी के नियंत्रण में आ जाता। डारडेनल्स काला सागर से होकर रूस के लिए निकास का मार्ग प्रदान करता था और इस प्रकार यह रूसी व्यापार के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण था। अतः ऑस्ट्रिया और जर्मनी यदि इस पर नियंत्रण प्राप्त कर लेते तो वे रूसी व्यापार पर नियंत्रण प्राप्त कर सकते थे।
- **जर्मनी द्वारा ऑस्ट्रिया को दिया गया समर्थन** भी निर्णायक रूप से महत्वपूर्ण था। जर्मनी स्वयं को रूस, फ्रांस और ब्रिटेन से घिरा हुआ महसूस करता था। रूस और फ्रांस ने 1894 में एक समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। 1904 में इस क्षेत्र के पारंपरिक प्रतिद्वंदी ब्रिटेन और फ्रांस ने एंटेंट कॉर्डियल नामक एक मित्रता समझौते पर हस्ताक्षर किया था। इस समझौते के अंतर्गत इन्होंने अफ्रीका में उपनिवेशों के संबंध में अपने विवादों का निपटारा किया। 1907 में रूस और ब्रिटेन ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किया जिससे एशिया में उनका विवाद समाप्त हो गया। इस प्रकार 1907 तक जर्मनी इस क्षेत्र में अन्य प्रमुख शक्तियों के बीच बढ़ती निकटता के कारण बहुत चिंतित था। यद्यपि कि तकनीकी रूप से ये समझौते सैन्य समझौते न होकर क्षेत्रीय विवादों और व्यापार एवं निवेश से संबंधित समझौतों तक ही सीमित थे।
- बड़ी शक्तियों की **लामबंदी की योजना** से तनाव और आपसी संदेह में वृद्धि हुई। यूरोप में सर्बिया और आस्ट्रिया के झगड़े के अतिरिक्त भी कई आंतरिक विवाद थे। जब एक शक्ति सेनाओं की लामबंदी का आदेश देती थी तो प्रतिद्वंद्वी शक्तियों को भी अपनी लामबंदी करनी पड़ती थी, जिससे वे अपनी सीमाओं के लिए उत्पन्न होने वाले किसी भी संभावित सैन्य खतरे से निपटने में सक्षम हो सकें।

VISION IAS
Downloaded From www.studymasterofficial.com
WWW.UPSCPDF.com

- **गलत अनुमानों की त्रासदी:**
  - जर्मनी का मानना था कि 1894 में हुए फ्रांस-रूस समझौते के कारण फ्रांस निश्चित रूप से रूस के पक्ष में लड़ेगा।
  - द्वितीय बाल्कन युद्ध में ब्रिटेन के निष्क्रिय रूख के बाद जर्मनी को यह लगा कि ब्रिटेन रूस या फ्रांस की सहायता के लिए नहीं आएगा।
  - इसके अतिरिक्त जर्मनी का यह अनुमान गलत था कि श्लीफ़ेन योजना उसे शीघ्र ही विजय दिला देगी।
  - जर्मनी का यह अनुमान भी गलत सिद्ध हुआ कि ऑस्ट्रिया का समर्थन करके वे तटस्थता के लिए रूस को धमकाने में सक्षम होंगे।
  - ऑस्ट्रिया का यह अनुमान गलत था कि जर्मनी द्वारा उसका समर्थन करने से रूस सर्बिया की सहायता करने नहीं आएगा।
  - जर्मनी और रूस के राजनेताओं का यह मानना था कि लामबंदी अनिवार्य रूप से युद्ध में परिणत नहीं होगी।
- कई पश्चिमी देशों में यह **सांस्कृतिक विश्वास** था कि युद्ध अच्छा, आवश्यक और गौरवशाली होता है। इस प्रकार दूसरों की तुलना में अपनी श्रेष्ठता की भावना ने युद्ध के पक्ष में लोगों को लामबंद किया।

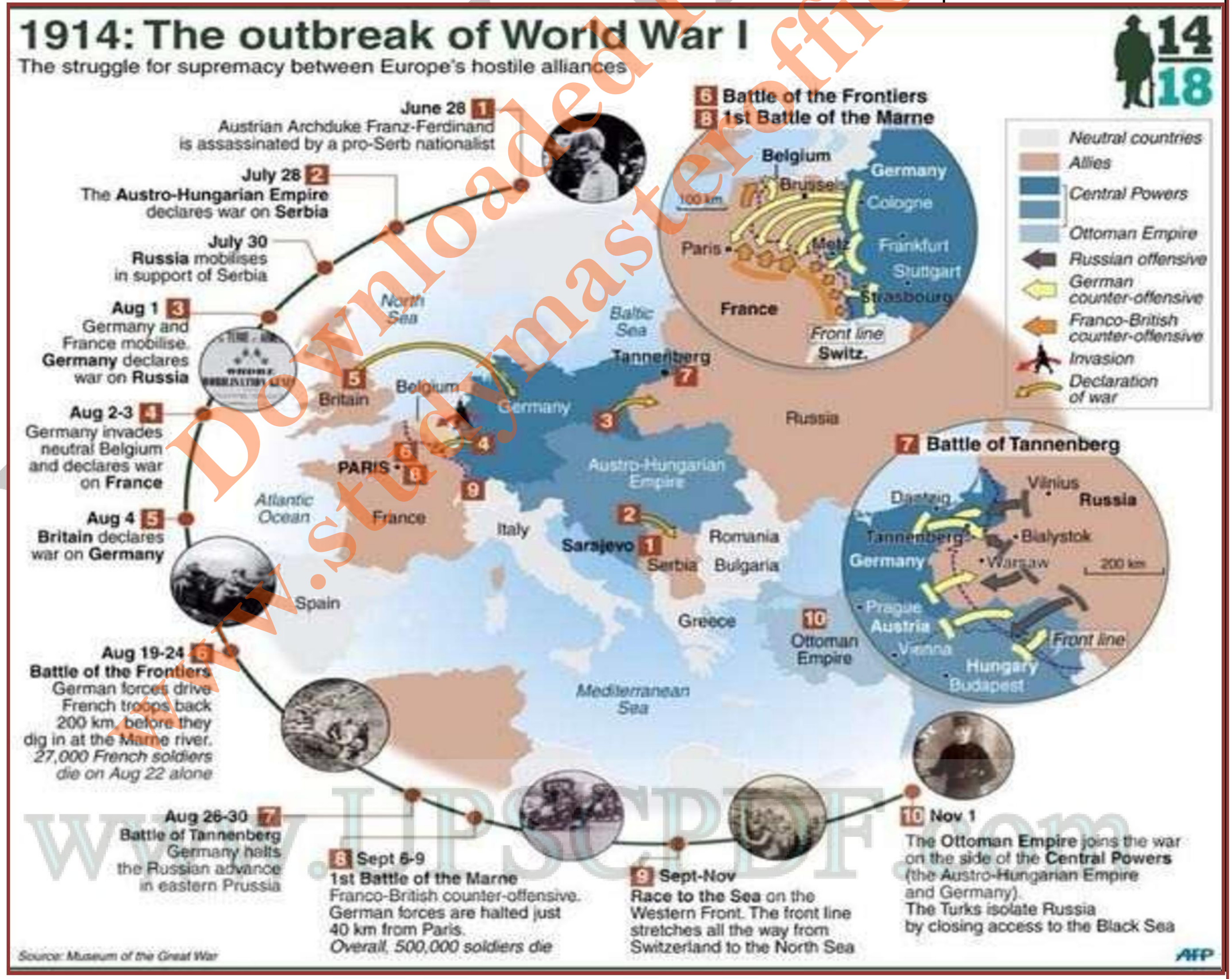

Downloaded From www.studymasterofficial.com

29. प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान

जर्मनी द्वारा छह सप्ताह के नियोजित समय में फ़्रांस को पराजित करने में विफल रहने के कारण श्लीफेन योजना असफल रही। इसके पश्चात् यह स्पष्ट हो गया था कि यह लम्बे समय तक खिंचने वाला युद्ध है। खाई युद्ध (Trench Warfare) और समुद्री-युद्ध (war at the sea), प्रथम विश्वयुद्ध की दो महत्त्वपूर्ण विशेषताएं थी।

- **खाई युद्ध** मुख्य रूप से फ़्रांस में हुआ था जिसमें दोनों पक्षों की सेनाएं खाईयां (खंदकें) खोदती थीं। सैनिक इन खाईयों में बैठ कर गोलीबारी करते थे। जब कभी सैनिक टुकडियां खाईयों के बाहर शत्रु के विरुद्ध कार्यवाही करती थीं तो खुले मैदान में शत्रु के समक्ष आ जाने से वे शत्रु का सहज लक्ष्य बन जाती थीं। इस प्रकार से, बड़ी संख्या में दोनों पक्षों के सैनिक हताहत हुए। शीघ्र ही दोनों पक्षों की खाईयों में तैनात सैनिकों के लिए गतिरोध उत्पन्न हो गया। खाईयों में रहने वाले सैनिकों का जीवन काफी दयनीय था। जलभराव से कई रोग उत्पन्न होने लगे, जिनके परिणामस्वरूप उनकी मृत्यु हो रही थी।

www.UPSCPDF.com

चित्र: खाई युद्ध (Trench Warfare)

- **समुद्री-युद्ध:**
  - **अवरोध की नीति (Blockade Policy):** इस नीति का अनुसरण मुख्य रूप से ब्रिटेन और जर्मनी ने किया। यह तीन तरीकों को लक्षित करती थी:
    - प्रतिद्वंदी के व्यापारिक मार्गों को अवरुद्ध करना ताकि वह वस्तुओं (शस्त्र, राशन आदि) की आपूर्ति के अभाव में व्याकुल होकर आत्मसमर्पण के लिए विवश हो जाए।
    - अपने व्यापारिक मार्गों को सुरक्षा प्रदान करना ताकि जो देश दूसरे देश के लिए अवरोध उत्पन्न कर रहा है वह स्वयं ही असुरक्षित न हो जाए और उसको वस्तुओं की निर्बाध आपूर्ति होती रहे।
    - सैनिक टुकड़ियों का आवागमन।

    ब्रिटेन जर्मनी के कई युद्धपोतों को नष्ट करने में सफल रहा।
  - **मित्र देशों द्वारा की गई नाकेबंदी ने संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए समस्याएँ उत्पन्न कर दीं** क्योंकि अंग्रेजों ने जर्मनी को होने वाली किसी भी प्रकार की आपूर्ति को रोकने के लिए सभी पोतों को रोक कर उनकी तलाशी ली। इससे स. रा. अमेरिका के व्यापारिक पोतों की गति भी धीमी हो गई। इसके अतिरिक्त अमेरिका दोनों पक्षों के साथ व्यापार करना चाहता था अतः उसने मित्र देशों द्वारा की गई नाकेबंदी को अस्वीकार कर दिया।
  - **जर्मनी ने विस्फोटक समुद्री सुरंगों और पनडुब्बियों की सहायता लेकर खुद पर होने वाले हमलों का प्रतिकार किया।** 'जर्मन युद्धपोतों को ब्रिटिश नौसेना के हाथों अत्यधिक क्षति पहुँचने के बाद उसके पास विस्फोटक समुद्री सुरंगों और पनडुब्बियों से हमला करने के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं बचा था। परन्तु इससे संयुक्त राज्य अमेरिका क्रोधित हो गया, क्योंकि उसके कुछ पोत डूब गये थे और एक घटना में एक पोत पर उपस्थित कई अमेरिकी नागरिक मारे गए थे। इस घटना के बाद से स. रा. अमेरिका में जनता की राय अंग्रेजों के पक्ष में हो गई थी।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

- **जुट्लैंड का युद्ध (1916):** यह एक समुद्री युद्ध था और इसके परिणामस्वरूप ब्रिटेन का विस्तृत समुद्री क्षेत्र पर नियंत्रण हो गया। इससे जर्मनी के पास पनडुब्बियों के उपयोग के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं बचा था और मित्र राष्ट्रों की नाकेबंदी के लिए अनियंत्रित पनडुब्बी युद्ध प्रारम्भ हो गया।
- **1917 में अटलांटिक महासागर में जर्मनी द्वारा अनियंत्रित पनडुब्बी युद्ध:** जर्मन नाकेबंदी का उद्देश्य अंग्रेजों की आपूर्ति लाईनों को अवरुद्ध करना था। फलतः इसने अटलांटिक महासागर में "सभी" पोतों पर आक्रमण प्रारम्भ कर दिया। इस नीति के अंतर्गत तटस्थ पोत और मित्र राष्ट्रों के पोतों में कोई अंतर नहीं किया गया। इसने स. रा. अमेरिका को और अधिक क्रोधित कर दिया। परन्तु जर्मनी यह सोच रहा था कि अमेरिका के युद्ध में प्रवेश करने से पहले ही वह मित्र शक्तियों को भूखा रख कर आत्मसमर्पण के लिए विवश कर देगा। अनियंत्रित पनडुब्बी युद्ध वह प्रमुख कारण था जिसके परिणामस्वरूप स. रा.अमेरिका मित्र राष्ट्रों की ओर से युद्ध में शामिल हो गया।

30. वुडरो विल्सन के 14 सूत्र (1918)

वुडरो विल्सन के 14 सूत्रों ने न्यूनाधिक मात्रा में मित्र राष्ट्रों के युद्ध उद्देश्यों को ही रूपरेखा प्रदान की। संक्षेप में उनके 14 सूत्र इस प्रकार थे:

- गुप्त कूटनीतिक समझौतों की समाप्ति।
- सभी राष्ट्रों के लिए युद्ध और शांति दोनों ही स्थितियों में मुक्त समुद्री आवागमन।
- जहाँ तक संभव हो सभी आर्थिक प्रतिबंधों को समाप्त किया जाए तथा राष्ट्रों के बीच व्यापार के लिए समान परिस्थितियों की स्थापना की जाए।
- हथियारों में सर्वांगीण कटौती। शस्त्रों को उस न्यूनतम स्तर तक कम कर दिया जाए जितना राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए पर्याप्त हो।
- स्थानीय जनता के हितों को ध्यान में रखते हुए सभी औपनिवेशिक दावों का स्वतंत्र और निष्पक्ष समाधान किया जाए।
- रूस के सभी अधिकृत प्रदेशों को खाली करवाया जाए।
- बेल्जियम को सम्पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की जाए।
- फ़्रांस को शत्रु से मुक्त करवाकर स्वतंत्रता दिलवाई जाए तथा अल्सेस-लॉरेन के प्रदेश उसको वापस दिलवाए जाएं।
- राष्ट्रीयता के स्पष्ट आधार पर इटली की सीमाओं का पुनर्निर्धारण किया जाए।
- ऑस्ट्रिया-हंगरी की जनता के लिए स्वशासन।
- रोमानिया, सर्बिया और मॉन्टेनेग्रो को मुक्त करवाकर उसकी प्रभुसत्ता सुनिश्चित की जाए तथा सर्बिया को सागर तट की सुविधा प्राप्त करवाई जाए।
- ऑटोमन साम्राज्य के गैर-तुर्की लोगों के लिए स्वायत्त विकास के अवसर उपलब्ध करवाए जाएं तथा डारडेनल्स को स्थाई रूप से खोल दिया जाए।
- समुद्र तक सुरक्षित पहुंच के साथ एक स्वतंत्र पोलैंड की पुनर्रचना की जाए।
- राजनीतिक स्वतंत्रता तथा प्रादेशिक अखंडता की रक्षा के लिए राष्ट्रों के एक सामान्य संघ की स्थापना की जाए।

विल्सन ने ब्रिटेन और फ़्रांस के दबाव में जर्मनी के लिए दो और बिंदु जोड़ दिए यथा जर्मनी का निःशस्त्रीकरण और जर्मनी द्वारा अधिकृत क्षेत्रों में नागरिकों की क्षति के लिए क्षतिपूर्ति का प्रावधान। युद्ध की समाप्ति पर इन 14 सिद्धांतों को शांति और शांति-वार्ता के आधार के रूप में सभी राष्ट्रों ने स्वीकार किया, परन्तु व्यवहार में शान्ति स्थापकों द्वारा इन सभी 14 सिद्धांतों का पूर्ण पालन नहीं किया गया।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

31. मित्र शक्तियों का दृष्टिकोण और शांति समझौते

- ब्रिटेन जर्मनी के साथ एक उदार संधि चाहता था क्योंकि उसे लगता था कि एक समृद्ध जर्मनी ब्रिटिश निर्यात के लिए एक बाजार के रूप में उपलब्ध होगा। फ्रांस जर्मनी के साथ एक कठोर संधि चाहता था ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि निकट भविष्य में यह फ्रांस की सीमाओं के लिए संकट न बने। स. रा. अमेरिका भी जर्मनी के साथ एक उदार संधि चाहता था। परन्तु वह जर्मनी द्वारा रूस के साथ कठोर संधि पर हस्ताक्षर किए जाने से और फ्रांस तथा बेल्जियम से जर्मन सेनाओं के पीछे हटने के दौरान वहां के नागरिक ढांचों को जर्मनों द्वारा नष्ट किए जाने के कारण अत्यंत निराश था। अंततः एक समझौता हुआ जिसमें जर्मनी को युद्ध की पूरी लागत का भुगतान नहीं करना था, परन्तु नागरिकों और उनकी सम्पत्तियों की क्षति की लागत के लिए क्षतिपूरक भुगतान करना था।

31.1. वर्साय की संधि

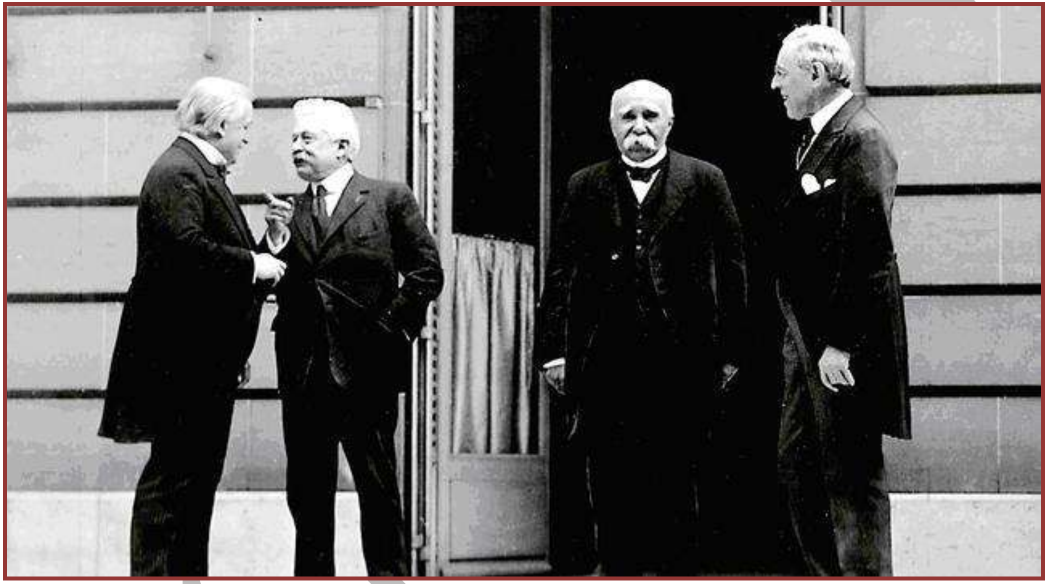

चित्र: लॉयड जॉर्ज- इंग्लैंड, वेटोरिओ ऑर्लैंडो-इटली, जॉर्ज क्लेमेंसो-फ्रांस, वुड्रो विल्सन-स.रा. अमेरिका (L-R) प्रथम विश्व युद्ध के बाद पेरिस शांति सम्मेलन के दौरान

इस संधि पर मित्र राष्ट्रों तथा जर्मनी ने 28 जून, 1919 को हस्ताक्षर किए। इसके निम्नलिखित मुख्य बिंदु थे:

- **जर्मनी को यूरोप में अपने क्षेत्र गंवाने पड़े:** जर्मनी से अल्सेस-लॉरेन के प्रदेश वापस लेकर फ्रांस को लौटा दिए गए। एस्टोनिया, लाटविया और लिथुआनिया को स्वाधीन राष्ट्र बना दिया गया। जर्मन क्षेत्रों के कुछ भाग डेनमार्क, बेल्जियम, पोलैंड और लिथुआनिया को दिए गए। सार और डैंज़िग में जर्मन जनसंख्या थी, परन्तु उनको लीग ऑफ़ नेशंस (राष्ट्र संघ) के अधीन कर दिया गया। सार को 15 वर्ष तक राष्ट्रसंघ के अधीन रहना था और उसके पश्चात् एक जनमत संग्रह से यह निर्णय होना था कि यह फ़्रांस या जर्मनी किसी के साथ भी शामिल हो सकता था। तब तक के लिए सार प्रदेश की कोयला खानों से 15 वर्ष तक कोयला प्राप्त करने का अधिकार फ़्रांस को दे दिया गया। डैंज़िग पश्चिमी प्रशा का एक प्रमुख बन्दरगाह था। इसे एक स्वतंत्र नगर के रूप में परिवर्तित किया गया और एक संधि द्वारा डैंज़िग के बंदरगाह को प्रयोग करने का अधिकार पोलैंड को प्राप्त हो गया।
- ऑस्ट्रिया में जर्मन जनसंख्या अधिक थी, परन्तु फिर भी **ऑस्ट्रिया और जर्मनी के बीच संघ निर्माण को प्रतिबंधित किया गया।**

- **जर्मनी के अफ़्रीकी उपनिवेशों** को उससे ले लिया गया और उन्हें राष्ट्र संघ की मैंडेट प्रणाली के अधीन रख दिया गया। इन मैंडेट प्रदेशों का शासन मैंडेटरी शक्तियों को तब तक चलाने का अधिकार दिया गया जब तक वे स्वशासन के योग्य न हो जाएं। इस प्रकार जर्मनी से केवल यूरोप में ही उसके प्रदेश नहीं छीने गए बल्कि यूरोप के बाहर भी उसके समस्त उपनिवेशों से उसे वंचित कर दिया गया।

Mandates in the Middle East and Africa, included:

1. Syria,
2. Lebanon,
3. Palestine,
4. Transjordan,
5. Mesopotamia,
6. British Togoland,
7. French Togoland,
8. British Cameroons,
9. French Cameroun,
10. Ruanda-Urundi,
11. Tanganyika and
12. South-West Africa

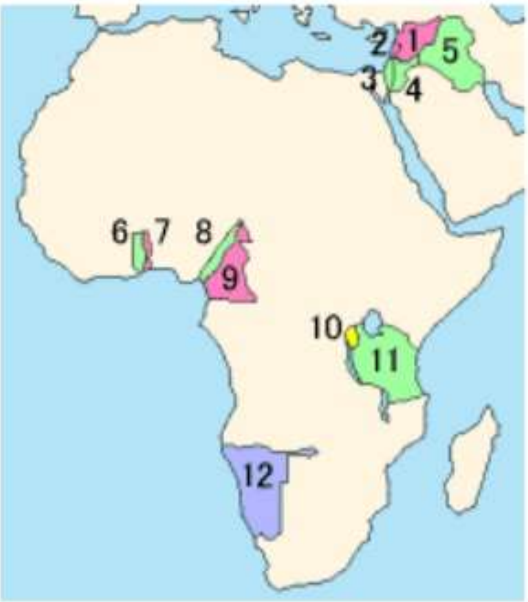

- **जर्मनी का निःशस्त्रीकरण:** जर्मनी को अनिवार्य सैन्य सेवा आरम्भ करने से प्रतिबंधित कर दिया गया। राइनलैंड (जर्मनी) को फ़्रांस और जर्मनी के बीच मध्यस्थ क्षेत्र बनाया गया और जर्मनी का स्थाई रूप से असैन्यीकरण किया गया। जर्मनी को केवल छह युद्धपोत और अधिकतम एक लाख सैनिक रखने की अनुमति थी। इसे वायुयान, टैंक और पनडुब्बियां रखने की भी अनुमति नहीं थी। इस प्रकार जर्मनी के विरुद्ध कठोर निःशस्त्रीकरण लागू कर इसे सैनिक रूप से पंगु बना दिया गया।
- **युद्ध अपराध अनुच्छेद:** प्रथम विश्व युद्ध के लिए अकेले जर्मनी और उसके सहयोगियों को उत्तरदायी घोषित किया गया।
- **युद्ध क्षतिपूर्तियाँ:** विल्सन युद्ध हर्जाने के विरुद्ध थे, अतः जर्मनी से युद्ध का पूरा हर्जाना लेने का विचार त्याग दिया गया। बहुत मंत्रणा के पश्चात् यह निर्णय लिया गया कि जर्मनी को 6600 मिलियन पाउंड का भुगतान करना होगा। परन्तु इसे घटा कर 2000 मिलियन पाउंड कर दिया गया क्योंकि पहली राशि अनुपातहीन रूप से अधिक थी और जर्मनी इतनी बड़ी राशि के भुगतान की स्थिति में नहीं था। इस क्षतिपूर्ति का मुख्य उद्देश्य यह था कि जर्मनी लम्बे समय तक अपनी अर्थव्यवस्था में ही उलझा रहे और निकट भविष्य में वह कभी भी फ़्रांस और ब्रिटेन के लिए संकट न बन सके।

VISION

31.2. अन्य संधियाँ

31.2.1. सेंट जर्मेन की संधि (1919) और ट्रायनॉन की संधि (1920)

- सेंट जर्मेन की संधि मित्र राष्ट्रों द्वारा 1919 में ऑस्ट्रिया के साथ संपन्न की गई और ट्रायनॉन की संधि 1920 में हंगरी के साथ की गई। इन संधियों के निम्नलिखित परिणाम निकले:
  - हैब्सबर्ग साम्राज्य की तुलना में ऑस्ट्रिया और हंगरी का आकार घट कर बहुत ही छोटा हो गया।
  - अन्य यूरोपीय देशों के बीच क्षेत्रों का बंटवारा आत्मनिर्णय के सिद्धांत पर किया गया। इस प्रकार इन क्षेत्रों के लोग अपनी राष्ट्रीयता से संबंधित सरकार के अंतर्गत रहने लगे।
  - ऑस्ट्रिया और हंगरी का निःशस्त्रीकरण कर दिया गया।

www.UPSCPDF.com

31.2.2. सेवर्स/सेव्रे की संधि (Treaty of Sevres; 1920)

यह संधि टर्की (तुर्की) के साथ की गई थी। इसमें निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण बिंदु थे:

- तुर्की को भू-क्षेत्र की बहुत अधिक हानि हुई। ईस्टर्न थ्रेस और स्मिर्ना ग्रीस को देना पड़ा। इटली को भी कुछ क्षेत्र प्राप्त हुए।
- डारडेनल्स जलडमरूमध्य को स्थाई रूप से खोल दिया गया (इस प्रकार काला सागर से निकास का मार्ग प्रदान किया गया)।
- ऑटोमन साम्राज्य के उपनिवेशों को मैंडेट में परिवर्तित किया गया और उन्हें ब्रिटेन तथा फ़्रांस को दे दिया गया। सीरिया फ़्रांस का मैंडेट बना और ब्रिटिश मैंडेट में ट्रांस जॉर्डन, इराक और फिलिस्तीन को शामिल किया गया।

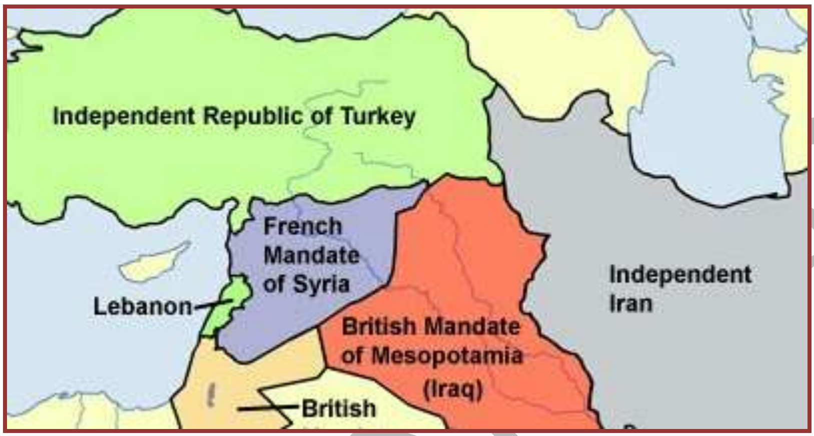

31.3. शांति संधियों की समालोचना

स्वशासन के सिद्धांत, नृजातीयता के आधार पर राज्यों का पुनर्गठन, सम्पूर्ण विश्व के निःशस्त्रीकरण के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा की स्थापना ऐसे मुख्य सिद्धांत थे जिन्हें मित्र शक्तियों ने शांति संधियों के लक्ष्यों के रूप में अग्रेषित किया था। इसे वुडरो विल्सन के 14 सूत्रों में देखा जा सकता है। जब इन सिद्धान्तों के आधार पर वर्साय की संधि का मूल्यांकन किया जाता है तो उसका औचित्य नहीं ठहराया जा सकता। यह एक उपकरण मात्र बन कर रह गया था, जिसे बाद में हिटलर के फासीवादी शासन ने द्वितीय विश्व युद्ध छेड़ने के लिए उपयोग किया था। इस सम्बन्ध में कुछ महत्वपूर्ण बिंदु निम्नलिखित हैं:

- **वर्साय की संधि एक आरोपित (दबावयुक्त) शांति थी,** क्योंकि जर्मनों को वार्ताओं का अंग बनने की अनुमति नहीं थी। वे केवल अपने विचार और आलोचनाएँ लिखित रूप में प्रेषित कर सकते थे। उनकी सभी आलोचनाओं की उपेक्षा की गई थी। केवल एक ही उपबंध (खंड) के अंतर्गत क्षेत्र की हानि के लिए जर्मनी को क्षतिपूर्ति का भुगतान किया गया। पश्चिमी प्रशा के ऊपरी सिलेसिया का औद्योगिक क्षेत्र एक मतदान के पश्चात् जर्मनी को सौंप दिया गया था। परन्तु तब सहयोगी शक्तियों ने तर्क दिया कि ब्रेस्ट लिटोवस्क की संधि (Treaty of Brest Litovsk) भी तो रूस पर थोपी गई शांति थी।
- **जर्मनी के निःशस्त्रीकरण के उपबंध** ने उसे लगभग निःशक्त बना दिया था और जर्मनी पर लगाई गयी क्षतिपूर्ति भी सर्वथा अनुचित थी। विल्सन के 14 सूत्रों में 'हथियारों की व्यापक कटौती' का प्रावधान था, परन्तु केवल जर्मनी का ही निःशस्त्रीकरण हुआ और अन्य किसी भी यूरोपीय शक्ति ने निःशस्त्रीकरण प्रारम्भ नहीं किया। सैन्यबल और शस्त्रों पर लगाई गई सीमा के कारण जर्मनी में कानून और व्यवस्था बनाए रखना भी कठिन हो गया था।

- **राष्ट्रीयता, नृजातीयता और आत्म-निर्णय का सिद्धांत:** यूरोप की आंतरिक सीमाओं के पुनर्गठन और हैब्सबर्ग साम्राज्य से अलग एक नए स्वतंत्र राज्य बनाने का औचित्य सिद्ध करने के लिए मित्र शक्तियों द्वारा प्रतिपादित यह एक प्रमुख सिद्धांत था। परन्तु इसका पूरी तरह पालन नहीं किया गया था:
    - **जर्मन:** जर्मन जनसंख्या के साथ जर्मन क्षेत्र का महत्वपूर्ण भाग नव निर्मित राष्ट्रों को दे दिया गया था। पोलैंड में एक मिलियन से अधिक जर्मन जनसंख्या थी। आस्ट्रिया और जर्मनी के बीच एकीकरण प्रतिबंधित था, जबकि आस्ट्रिया में कई नृजातीय जर्मन रहते थे। क्रमशः आस्ट्रिया और हंगरी के साथ हुई सेंट जर्मेन और ट्रायनॉन की संधियों के पश्चात् सुडेटनलैंड के जर्मन निवासी अब चेकोस्लोवाकिया का अंग थे। इस प्रकार प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् संपन्न संधियों के कारण कई जर्मन निवासी जर्मनी के बाहर रह रहे थे और द्वितीय विश्व युद्ध से पहले हिटलर ने इसका उपयोग जर्मनी की आक्रामकता और विस्तार को सही ठहराने के लिए किया था।
    - **तुर्की:** सेवर्स की संधि आत्म-निर्णय के सिद्धांत का उल्लंघन करती थी, क्योंकि इसके अंतर्गत ग्रीस को दिया जाने वाला क्षेत्र, विशेषकर स्मिर्ना का क्षेत्र तुर्की की मुख्य भूमि पर था। इसके परिणामस्वरूप तुर्की में राष्ट्रवाद का उदय हुआ और मुस्तफा कमाल पाशा के नेतृत्व में राष्ट्रवादियों ने सेवर्स की संधि को अस्वीकार कर दिया। ग्रीक वासियों को स्मिर्ना से भगा दिया गया और मुस्तफा कमाल पाशा ने संधि पर फिर से पुनर्विचार के लिए विवश कर दिया। स्मिर्ना और तुर्क साम्राज्य के कुछ अन्य प्रदेश **लोसेन की संधि (1923)** के अंतर्गत तुर्की को लौटा दिए गए।
    - **अरब:** टी. ई. लॉरेंस एक अंग्रेज अधिकारी था, जिसने अरब वासियों को तुर्क वासियों के विरुद्ध भड़काने में मुख्य भूमिका निभाई थी। उसने ऑटोमन साम्राज्य के विरुद्ध 1916-18 तक हुए विद्रोह का नेतृत्व किया। प्रथम विश्व युद्ध में मित्र शक्तियों को समर्थन देने के पश्चात् अरब वासियों को स्वतंत्रता प्राप्ति की आशा थी, परन्तु उनकी आशाएँ अपूर्ण रहीं। फिलिस्तीन के अंदर एक यहूदी राज्य की रचना की बातों से अरब वासी भी अप्रसन्न थे।
    - **भारतीय:** अंग्रेजों की ओर से कई भारतीय सैनिकों ने युद्ध में भाग लिया था, फिर भी भारत को कोई वास्तविक स्वायत्तता प्राप्त नहीं हुई थी। मित्र शक्तियों के युद्ध के उद्देश्यों में स्वशासन और आत्म-निर्णय सम्मिलित थे। 1919 का भारत सरकार अधिनियम भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरा। तुर्की को छिन्न-भिन्न किया जाना भी मुस्लिम लोगों के लिए एक बड़ी शिकायत थी। अंग्रेजों ने भारतीयों को प्रथम विश्वयुद्ध में भाग लेने के बदले में ऑटोमन साम्राज्य के प्रति उदार व्यवहार का वचन दिया था, परन्तु उन्होंने अपना वचन नहीं निभाया। जलियांवाला बाग नरसंहार और रौलेट एक्ट के रूप में औपनिवेशिक उत्पीड़न के साथ इन कारकों ने भारत में खिलाफत और असहयोग आन्दोलन के लिए एक चिंगारी के रूप में कार्य किया।

चित्र: प्रथम विश्व युद्ध के दौरान भारतीय सैनिक

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

- **आर्थिक व्यवहार्यता का सिद्धांत:** विडम्बना यह है कि मित्र शक्तियों ने 'आर्थिक व्यवहार्यता' के सिद्धांत का उपयोग यह सिद्ध करने के लिए किया कि नवनिर्मित राज्यों में जर्मन जनसंख्या वाले क्षेत्रों की जरूरत है, लेकिन आस्ट्रिया और जर्मनी के बीच एकीकरण की उपेक्षा की गई थी। जबकि आर्थिक रूप से यह बहुत ही व्यवहार्य था।
- **उपनिवेशों की हानि:** जर्मनी द्वारा अपने अफ़्रीकी उपनिवेशों की हानि पर आपत्ति स्वाभाविक थी। यह वितरण निष्पक्ष नहीं था और केवल मित्र शक्तियों की साम्राज्यवादी आकांक्षाओं को संतुष्ट करने वाला था। **लीग ऑफ़ नेशंस** (राष्ट्रसंघ) ने इन उपनिवेशों को केवल मित्र शक्तियों के सदस्यों को मैंडेट के रूप में सौंप दिया था। मैंडेट प्रणाली वास्तव में जर्मनी के उपनिवेशों का अधिग्रहण ही था। ब्रिटेन को पूर्वी अफ्रीका के जर्मन क्षेत्र मिले और फ़्रांस को कैमरून और टोगोलैंड के अधिकांश भाग प्राप्त हुए तथा इन दोनों उपनिवेशों के शेष भाग ब्रिटेन को सौंप दिए गए। साउथ अफ्रीका को दक्षिणी पश्चिमी अफ्रीका के जर्मन क्षेत्र प्राप्त हुए।
- **युद्ध अपराध उपबंध:** यह बहुत ही स्पष्ट है कि सभी साम्राज्यवादी शक्तियाँ प्रथम विश्व युद्ध के लिए उत्तरदायी थीं। परन्तु युद्ध अपराध उपबंध में प्रथम विश्व युद्ध का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व जर्मनी और उसके सहयोगियों पर थोपा जाना सर्वथा अनुचित था। इसने जर्मनी को अपमानित करने का कार्य किया। मित्र शक्तियों ने इस बात पर बल दिया कि कानूनी रूप से जर्मनी से युद्ध की क्षतिपूर्ति वसूली जाए।
- **युद्ध की क्षतिपूर्ति:** इस भयावह युद्ध की क्षतिपूर्ति के परिणामस्वरूप जर्मनी को अपमानित होना पड़ा। 6600 मिलियन पाउंड की धनराशि बहुत अधिक थी और इसका उद्देश्य निकट भविष्य में जर्मनी को आर्थिक रूप से निर्बल बनाए रखना था।
- **क्षेत्र में कटौती:** आस्ट्रिया और हंगरी को क्षेत्र और जनसंख्या के मामले में घटा कर बहुत ही छोटा कर दिया गया था। आस्ट्रिया की अधिकांश औद्योगिक सम्पदा चेकोस्लोवाकिया और पौलेंड को प्राप्त हो गयी। शीघ्र ही यह आर्थिक संकट से घिर गया जिसके कारण उसे लीग ऑफ़ नेशंस (राष्ट्र संघ) से ऋण लेना पड़ा था।
- **मुक्त व्यापार अनुच्छेद की अवहेलना:** राष्ट्रों के बीच मुक्त व्यापार विल्सन के 14 सूत्रों का एक भाग था। परन्तु अधिकांश नवनिर्मित राष्ट्र-राज्यों ने व्यापार में अवरोध खड़े किए जिसके कारण ऑस्ट्रिया की अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाना बहुत ही कठिन सिद्ध हुआ।
- **रूस को शांति समझौतों से बहुत अधिक लाभ नहीं हुआ** था क्योंकि वार्ताओं के लिए कम्युनिस्ट शासन को आमंत्रित ही नहीं किया गया था।

32. प्रथम विश्व युद्ध के प्रभाव (1914-19)

- **शांति संधियाँ:** इन्होंने जर्मनी को केवल अस्थाई रूप से ही क्षीण किया था, क्योंकि निःशस्त्रीकरण और भारी युद्ध क्षतिपूर्ति जैसे कुछ उपबंधों को कार्यान्वित करना असम्भव था। शीघ्र ही जर्मनी ने रूस की सहायता से अपना शस्त्रीकरण करना पुन: प्रारम्भ कर दिया था और क्षतिपूर्ति के भुगतान में भी आनाकानी करने लगा था।
  - इन संधियों ने केवल असंतोष और चरम राष्ट्रीय प्रतिद्वंद्विता के बीज बोने का कार्य किया, जिसका परिणाम द्वितीय विश्व युद्ध था।
  - इन संधियों ने यूरोप को राज्यों के दो समूहों में विभाजित कर दिया। जहाँ एक समूह शांति की व्यवस्था को संशोधित करना चाहता था वहीं दूसरा समूह शांति व्यवस्था के संरक्षण के लिए प्रयासरत था।
  - स. रा. अमेरिका ने शांति व्यवस्था की पुष्टि नहीं की थी और कभी भी लीग ऑफ़ नेशन्स में सम्मिलित नहीं हुआ क्योंकि वहां के जन-सामान्य ने विल्सन की निंदा की थी। भविष्य में किसी भी प्रकार के सैन्य गठजोड़ को रोकने के लिए स. रा. अमेरिका अपनी अलगाव की नीति पर लौट आया।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

- इटली अपने आप को ठगा हुआ अनुभव कर रहा था क्योंकि उसे 1915 में युद्ध में प्रवेश करने के लिए वह सभी क्षेत्र प्राप्त नहीं हुए जिनके लिए उसे गुप्त संधि में वचन दिया गया था।

- **लीग ऑफ़ नेशन्स** (राष्ट्र संघ) की रचना विश्व शांति और सामाजिक कार्य सुनिश्चित करने के लिए की गई थी।
- **रूस ने कम्युनिस्ट विचारधारा को अपना लिया:** प्रथम विश्व युद्ध बोल्शेविक विद्रोहियों के उद्भव में सहायक रहा। युद्ध में रूस की भागीदारी के कारण वहां की जनता आर्थिक संकट का सामना करने पर विवश थी, अतः बोल्शेविक विद्रोही युद्ध में रूस की भागीदारी के विरुद्ध थे। 1917 की रूसी क्रांति के दो चरण थे। फरवरी की क्रांति (1917) में सैनिक विद्रोहों और नागरिक अशांति के कारण जार को सत्ता से बाहर कर दिया गया था। एक अंतरिम सरकार की स्थापना की गई, परन्तु यह वादे के अनुसार चुनाव आयोजित करने में विफल रही। जर्मनी की सहायता से लेनिन निर्वासन को छोड़कर रूस वापस आ गया और अक्टूबर क्रांति (1917) का मार्ग प्रशस्त हुआ जिसने अस्थाई सरकार को उखाड़ फेंका। लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविक सत्ता में आए और जर्मनी के साथ 1917 में एक अलग शांति संधि (ब्रेस्ट लिटोवस्क की संधि) पर हस्ताक्षर किए गए। यह संधि रूसियों के प्रति बहुत ही कठोर थी। जब जर्मनी ने वर्साय की संधि को अनैतिक और अत्यधिक कठोर होने की बात की तो रूस ने इस बात को जर्मनी के विरुद्ध उपयोग किया गया।

चित्र: लेनिन

- **अमेरिका का सामरिक शक्ति के रूप में उदय:** स. रा. अमेरिका ने युद्ध में 1917 में प्रवेश किया जब अटलांटिक महासागर में जर्मनी द्वारा पोतों की नाकेबंदी (1917) में अमेरिका सहित सभी देशों के व्यापारिक पोतों को निशाना बनाना प्रारंभ कर दिया गया। जिम्मरमैन योजना (Zimmerman Plan) एक अन्य कारक थी जिसने अमेरिका के जनमानस की राय को युद्ध में प्रवेश करने के पक्ष में परिवर्तित कर दिया। यह योजना जर्मन राजनयिक जिम्मरमैन के मस्तिष्क की उपज थी। इस योजना में मैक्सिको को अमेरिका पर आक्रमण करने के लिए सहमत करना था। इसके पूर्व स. रा. अमेरिका निरंकुश ज़ार की ओर से युद्ध में प्रवेश नहीं करना चाहता था। स. रा. अमेरिका की अनिच्छा के पीछे अमेरिकी क्रांति की भावना थी, परन्तु रूस में ज़ार के शासन के पतन से यह बाधा भी समाप्त हो गयी थी। निम्नलिखित कारकों ने स. रा. अमेरिका की प्रथम विश्व युद्ध में वास्तविक विजेता के रूप में उभरने में सहायता की थी:
  - युद्ध स. रा. अमेरिका की भूमि पर नहीं लड़ा गया था। इसलिए स. रा. अमेरिका आधारभूत ढांचे को होने वाली सामान्य क्षति और युद्ध के परिणामस्वरूप पुनर्निर्माण पर होने वाले आर्थिक व्यय से बच गया।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

- अमेरिका ने सैन्य हस्तक्षेप केवल प्रथम विश्व युद्ध के अंतिम चरण में ही किया था। इस प्रकार युद्ध में अन्य यूरोपीय देशों की तुलना में इसने अपने न्यूनतम सैनिकों को ही खोया, जिन्हें बमबारी और खाई युद्ध से नहीं निबटना पड़ा था।
- स. रा. अमेरिका ने मित्र शक्तियों को युद्ध के दौरान तथा जर्मनी को युद्ध के पश्चात् वर्साय की संधि के अंतर्गत उन पर लगाई गई क्षतिपूरक लागत की भरपाई के लिए ऋण दिए। इस प्रकार अमेरिका ने प्रथम विश्व युद्ध के माध्यम से बहुत सा धन अर्जित किया। इसकी युद्ध मशीनों अर्थात सैन्य उद्योगों ने युद्ध के समय और युद्ध के पश्चात् हथियार बेच कर सबसे अधिक लाभ अर्जित किया। 1929 की आर्थिक मंदी में घिरने से पूर्व का दशक स. रा. अमेरिका के लिए सबसे अधिक समृद्ध समय था।
- वर्साय की वार्ताओं में राष्ट्रपति वुडरो विल्सन द्वारा निभाई गयी अग्रणी भूमिका प्रथम विश्व युद्ध के समय और इसके बाद स. रा. अमेरिका की महत्ता और उसके बढ़ते वर्चस्व की परिचायक है।

इस प्रकार यद्यपि प्रथम विश्व युद्ध की संध्या पर अमेरिका एक प्रमुख औद्योगिक अर्थव्यवस्था था परन्तु विश्व मंच पर इसके एक वास्तविक वैश्विक शक्ति के रूप में आगमन को प्रथम विश्व युद्ध ने ही उत्प्रेरित किया था।

- युद्ध के कारण **यूरोपीय अर्थव्यवस्था को संकट का सामना करना पड़ा** और वे पुनर्निर्माण के लिए स. रा. अमेरिका के ऋण पर निर्भर हो गये।
- **ऑटोमन (तुर्क) साम्राज्य का विभाजन:** प्रथम विश्व युद्ध में पराजय के चलते ऑटोमन साम्राज्य का विघटन हो गया, तत्पश्चात एक नये राष्ट्र के रूप में तुर्की का उदय हुआ।
- **हैब्सबर्ग साम्राज्य का विघटन:** प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति से पूर्व ही आस्ट्रिया एवं हंगरी स्वयं ही अलग हो गये थे। इस प्रकार हैब्सबर्ग साम्राज्य का अंत हो गया।
- **नए राष्ट्र राज्यों का उदय:** जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है; तुर्की, आस्ट्रिया और हंगरी जैसे नए राष्ट्र-राज्यों का उदय हुआ। इसके अतिरिक्त चेकोस्लोवाकिया और पौलैंड का भी गठन हुआ। सर्बिया ने युगोस्लाविया के अंतर्गत स्लाव लोगों को एकजुट करने के अपने स्वप्न को पूरा किया, जिसे सर्बिया और मॉन्टेनेग्रो का विलय कर के बनाया गया था। एस्टोनिया और लिथुआनिया को भी स्वाधीन राष्ट्र बनाया गया। ब्रेस्ट लिटोवस्क की संधि (1917) के पश्चात् जर्मनी ने उन्हें रूस से ले लिया था।

VISION IAS
WWW.UPSCPDF.com

- **साम्राज्यवाद का अस्तित्व बना रहा:** जर्मन उपनिवेशों को मैंडेट में परिवर्तित कर दिया गया था। भविष्य में एक उपयुक्त तिथि को उन्हें स्वाधीन करने के लिए तैयार करने हेतु उन्हें मैनडेट्स के रूप में विजयी राष्ट्रों को सौंप दिया गया था। ब्रिटेन को जर्मनी के अफ़्रीकी उपनिवेश प्राप्त हो गए। ऑटोमन साम्राज्य के क्षेत्र इराक, सीरिया, ट्रांस-जॉर्डन और फिलिस्तीन को फ़्रांस और ब्रिटेन के बीच मैंडेट के रूप में वितरित कर दिया गया था।
- **नए हथियारों का इस्तेमाल:** प्रथम विश्व युद्ध में कई नए प्रकार के हथियारों का उपयोग किया गया था। कांटेदार तार, मशीन गन, टैंक, विषैली गैस आदि का उपयोग किया गया था। इसने विश्व को शांति से और दूर कर दिया और भविष्य में होने वाले युद्धों को बहुत ज्यादा खतरनाक बना दिया।
- **प्रथम विश्व युद्ध ने युद्ध के प्रति लोगों के दृष्टिकोण को परिवर्तित कर दिया:** बहुत अधिक संख्या में नागरिकों के मारे जाने से अब कई विचारकों ने युद्ध की निंदा की। प्रथम विश्व युद्ध से पहले युद्ध को गौरवशाली कहा जाता था और प्रकाशित साहित्य में रूमानियत के पुट की प्रधानता होती थी। प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् हेमिंग्वे जैसे लेखकों ने युद्ध को अमानवीय करार देते हुए उसकी निंदा करनी आरम्भ कर दी थी। अधिकांश लोगों ने प्रथम विश्व युद्ध को त्रासदी के रूप में देखा, जिसका होना कोई आवश्यक नहीं था। इसने केवल ऐसी सामाजिक-आर्थिक स्थितियाँ उत्पन्न कीं जिसने द्वितीय विश्व युद्ध की सम्भावनाओं को बढ़ा दिया।

33. लीग ऑफ़ नेशन्स (राष्ट्र संघ)

- लीग ऑफ़ नेशन्स (राष्ट्रसंघ) का उद्भव मित्र शक्तियों के युद्ध उद्देश्यों में निहित था। वुडरो विल्सन के 14 सूत्रों में एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था के निर्माण की परिकल्पना की गई थी जो विश्व शांति को बनाए रखने के लिए कार्य करेगी। ब्रिटेन ने भी इस तरह के एक संगठन का निर्माण विश्व युद्ध के दौरान अपने युद्ध लक्ष्य के रूप में किया था। इस अनुच्छेद ने जनवरी 1920 में लीग ऑफ़ नेशन्स का रूप धारण किया, जिसका मुख्यालय जेनेवा में था। इसी दिन वर्साय की संधि भी प्रभाव में आई थी।

33.1. लीग ऑफ़ नेशन्स (राष्ट्रसंघ) के उद्देश्य

लीग ऑफ़ नेशन्स (राष्ट्रसंघ) के निम्नलिखित उद्देश्य थे:

- **भविष्य में हो सकने वाले युद्धों को रोकने के लिए अंतर्राष्ट्रीय विवादों का निपटान करना।** इसे सामूहिक सुरक्षा के सिद्धांत के माध्यम से प्राप्त करना था। सभी सदस्य राष्ट्र सामूहिक रूप से उस देश के विरुद्ध कार्यवाही करेंगे जो युद्ध को छेड़ने का प्रयास करता है। आक्रमणकारी राष्ट्र के विरुद्ध कार्यवाही सामूहिक रूप से आर्थिक प्रतिबन्ध के रूप में होगी, यदि आवश्यक हुआ तो सैनिक कार्यवाही भी की जाएगी। इस प्रकार लीग का प्राथमिक लक्ष्य अंतर्राष्ट्रीय शांति को बनाए रखना था।
- **आर्थिक और सामजिक कार्य:** लीग ऑफ़ नेशन्स का उद्देश्य सम्पूर्ण विश्व में सामाजिक आर्थिक विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग प्राप्त करना था। इस प्रयोजन के लिए राष्ट्रसंघ में विभिन्न संगठन बनाए गये थे।

33.2. लीग की संविदा

- यह उन नियमों की सूची थी, जिनसे राष्ट्रसंघ को संचालित किया जाना था। इन नियमों को एक अंतर्राष्ट्रीय समिति द्वारा बनाया गया था, जिसमें विश्व के महत्त्वपूर्ण नेता सम्मलित थे।

VISION IAS
WWW.UPSCPDF.com

33.3. लीग ऑफ़ नेशन्स (राष्ट्रमंडल) का संगठनात्मक ढांचा

- **सदस्यता:** 42 सदस्य राष्ट्रों के साथ इसका आरम्भ हुआ था। 1926 तक जब जर्मनी को इसकी सदस्यता प्रदान की गयी तो सदस्यों की कुल संख्या 55 तक पहुंच गई थी।

- **सुरक्षा परिषद:** राष्ट्रसंघ में सुरक्षा परिषद जैसी एक संयुक्त सुरक्षा परिषद थी। आरम्भ में इसमें आठ सदस्य थे, चार स्थाई सदस्य और चार अस्थाई सदस्य। अस्थाई सदस्यों को तीन वर्ष की अवधि के लिए महासभा द्वारा चुना गया था। 1926 तक इस परिषद के तेरह सदस्य थे, जिनमें अस्थाई सदस्यों की सीटों की संख्या को बढ़ा कर अब 9 कर दिया गया। चार स्थाई सदस्य फ़्रांस, इटली, जापान और ब्रिटेन थे। परिषद में सभी निर्णय सर्वसम्मति से होने थे। राष्ट्रसंघ के इस सुरक्षा परिषद का अधिदेश (मुख्य कार्य) राजनीतिक मुद्दों से निबटना था।
- **शांति बनाए रखने का कार्य:** वे सभी विवाद जो युद्ध का कारण बन सकते थे, उन्हें परिषद को भेजा जाना था। कोई भी सदस्य जो युद्ध छेड़ता है उसे शेष सदस्यों की सामूहिक कार्यवाही का सामना करना पड़ता था। सुरक्षा परिषद को उन नौसेनिक, वायु और सैन्य संसाधनों की अनुशंसा का अधिकार होगा जिनका योगदान प्रत्येक सदस्य को आक्रमणकारी के विरुद्ध कार्यवाही के लिए करना होगा।
- **महासभा:** राष्ट्रसंघ के सदस्यों द्वारा महासभा का गठन किया गया। महासभा की बैठकें वार्षिक रूप से होती थी और सभी निर्णय सर्वसम्मति से लिए जाते थे। महासभा के सभी सदस्यों का एक वोट था। महासभा लीग की नीति निर्माणकारी संस्था थी और इस प्रकार इसे सामान्य नीति के मुद्दों पर निर्णय करने का अधिदेश प्राप्त था। यह राष्ट्रसंघ की वित्तीय व्यवस्था को भी नियंत्रित करती थी और इसे किसी शांति संधि में संशोधन करने का अधिकार भी प्राप्त था। महासभा के विशेष अधिकारों में; नये सदस्यों का प्रवेश, परिषद के अस्थाई सदस्यों का आवधिक चुनाव, स्थायी न्यायालय के न्यायाधीशों की परिषद का चुनाव और बजट पर नियन्त्रण सम्मिलित था। व्यवहार में महासभा के पास राष्ट्रसंघ की गतिविधियों के सामान्य निर्देशन की शक्ति थी।
- **अंतर्राष्ट्रीय न्याय का स्थायी न्यायालय:** इसकी स्थापना हेग (नीदरलैंड) में की गई थी। इसका अधिदेश केवल राष्ट्रों के बीच कानूनी विवादों को निपटाना था न कि राजनैतिक विवादों का निपटान। इसमें विभिन्न राष्ट्रीयताओं के पन्द्रह न्यायाधीश थे। यह आज भी संयुक्त राष्ट्र संघ के भाग के रूप में कार्यरत है और इसे अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय के रूप में जाना जाता है।
- **सचिवालय:** इसकी स्थापना एक सहायक इकाई के रूप में की गई थी। यह कागज़ी कार्यवाही, रिपोर्ट्स और एजेंडा तैयार करने का कार्य करता था।
- **आयोग और समितियाँ:** कई आयोगों की स्थापना की गयी थी जिसमें प्रत्येक आयोग एक विशिष्ट समस्या से निबटता था। जैसे- 'मैंडेट्स', निःशस्त्रीकरण, सैन्य मामलों आदि से सम्बंधित मुद्दों से निपटने के लिए कुछ महत्वपूर्ण आयोगों का गठन किया गया था। दूसरी ओर कुछ महत्वपूर्ण समितियाँ स्वास्थ्य, श्रम, महिलाओं के अधिकारों, नशीली दवाओं, बालकल्याण आदि विषयों से सम्बन्धित थीं।

33.4. राष्ट्रसंघ के प्रदर्शन का मूल्यांकन

- राष्ट्रसंघ की सफलता या असफलता का निर्धारण हम पहले उल्लेख किए गए राष्ट्र संघ के दो प्रमुख उद्देश्यों से सम्बन्धित प्रदर्शन के विश्लेषण के आधार पर कर सकते हैं। यदि राष्ट्र संघ के प्रदर्शन का संक्षेप में मूल्यांकन किया जाए तो यह कहा जा सकता है कि यह अंतर्राष्ट्रीय विवादों के समाधान के लिए एक प्रमुख मंच होने और शांतिपूर्ण विश्व सुनिश्चित करने के अपने उद्देश्य में विफल रहा है। परन्तु पूरे विश्व में इसने सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किया। विशेषकर श्रमिकों के कल्याण के लिए अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन का कार्य और प्रथम विश्वयुद्ध के शरणार्थियों के पुनर्वास के लिए राष्ट्रसंघ का योगदान सराहनीय था।

33.4.1. राष्ट्रसंघ की सफलता

राष्ट्रसंघ दो क्षेत्रों में सफल रहा था:

- **अपने आयोगों और समितियों के माध्यम से आर्थिक और सामाजिक कार्य:**
  - **अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO):** यह राष्ट्रसंघ का प्रमुख संगठन नहीं था, अपितु उसका एक अभिकरण था। (यह 1946 में संयुक्त राष्ट्र का प्रथम विशिष्ट अभिकरण बना।) ILO सबसे सफल संगठन था। ILO के लक्ष्यों में सम्मिलित था - अधिकतम कार्य दिवस और न्यूनतम

VISION IAS
UPSCPDF.com

मजदूरी तय करना, यह सुनिश्चित करना कि सदस्य राष्ट्र बेरोजगारी लाभ और वृद्धावस्था पेंशन प्रदान करें। इसके कार्यों में विभिन्न सदस्य राष्ट्रों के प्रदर्शन के संबंध में सूचना का प्रचार-प्रसार करना और श्रमिकों के कल्याण के क्षेत्र में कार्रवाई के लिए सरकारों को प्रेरित करना सम्मिलित था।

- **शरणार्थी संगठन:** इसने रूस में युद्धबंदियों को रूस से बाहर अपने घर लौटने में सहायता की। 1933 में नाजी उत्पीड़न से बचने के लिए भाग रहे यहूदियों की अलग-अलग देशों में फिर से बसने में सहायता की। इस प्रकार के दयालुतापूर्ण कार्य से लीग ने उन्हें सुरक्षा प्रदान की।
- **स्वास्थ्य संगठन:** इसने विभिन्न महामारियों का कारण पता लगाने की दिशा में अच्छा कार्य किया। यह विशेष रूप से रूस में टाइफस महामारी से लड़ने में सफल रहा, जिसमें यूरोप के शेष हिस्सों में फैलने की संभाव्यता थी।
- **मैंडेट आयोग**: इसके ऊपर मैंडेट (ऑटोमन साम्राज्य और जर्मनी के पूर्व उपनिवेश) के रूप में सदस्य राष्ट्रों को सौंपे गए प्रदेशों के शासन की निगरानी करने का उत्तरदायित्व था। सार (SAAR) प्रदेश में शासन की निगरानी करने के लिए स्थापित पृथक आयोग बहुत कुशल था और इसने 1935 में वहां सफलतापूर्वक जनमत संग्रह आयोजित किया। जनमत संग्रह के बाद सार प्रदेश जर्मनी को लौटा दिया गया। हालांकि मैंडेट आयोग ने अच्छी तरह कार्य किया, लेकिन यह तर्क दिया जा सकता है कि इसने पूर्ववर्ती अफ्रीकी उपनिवेशों में उपनिवेशवाद के विरूद्ध कुछ विशेष नहीं किया, जिन्हें मैंडेट में परिवर्तित कर दिया गया था। मैंडेट को स्वशासन के लिए तैयार किया जाना था लेकिन आयोग यह सुनिश्चित करने में विफल रहा कि औपनिवेशिक शक्तियाँ मैंडेट के शासन में स्थानीय लोगों की भागीदारी के लिए प्रावधान करें।

- **छोटे अंतर्राष्ट्रीय विवादों का निपटारा:** यहां राष्ट्रसंघ को आंशिक सफलता ही मिली। इसने ग्रीस को बुल्गारिया पर आक्रमण करने के लिए क्षतिपूर्ति का भुगतान करने हेतु विवश किया। जब तुर्की ने ब्रिटेन के मैंडेट मोसुल प्रांत पर दावा करना आरंभ किया तो राष्ट्रसंघ ने ब्रिटेन के पक्ष में निर्णय दिया। राष्ट्रसंघ ने पेरू और कोलंबिया के बीच क्षेत्रीय विवाद का समाधान किया। इसके साथ ही 1921 में, जब जर्मनी और पोलैंड के बीच ऊपरी सिलेसिया (एक औद्योगिक क्षेत्र) के संबंध में विवाद पैदा हो गया तो राष्ट्रसंघ ने सफलतापूर्वक दोनों पक्षों के लिए समझौते पर पहुँचना संभव बनाया और ऊपरी सिलेसिया दोनों के बीच बांट दिया गया।

स्पष्ट है कि इन विवादों में से किसी से भी विश्व शांति के लिए खतरा उत्पन्न नहीं हुआ। हालाँकि इन विवादों में जब भी कोई प्रमुख शक्ति संबद्ध होती थी तो राष्ट्रसंघ का निर्णय सदैव प्रमुख शक्ति के पक्ष में होता था।

33.4.2. राष्ट्र संघ की विफलता/प्रभावहीनता के कारण

- **मित्र राष्ट्रों का संगठन:** राष्ट्रसंघ को मित्र राष्ट्रों- विशेषकर फ्रांस और ब्रिटेन के संगठन के रूप में देखा जाने लगा था, जिसकी स्थापना अन्यायपूर्ण शांति संधियों के कार्यान्वयन के लिए की गई थी। इसलिए यह सभी देशों को संतुष्ट करने में विफल रहा।
    - तुर्की और इटली दोनों शांति संधियों से असंतुष्ट थे। जहां तुर्की उन क्षेत्रों को ग्रीस को सौंपे जाने से व्यथित था, जिन्हें वह अपना अभिन्न अंग मानता था; वहीं इटली 1915 में मित्र राष्ट्रों के पक्ष में युद्ध में प्रवेश करने के एवज में प्रादेशिक लाभ न मिलने के कारण असंतुष्ट था।
    - हस्ताक्षरित शांति संधियाँ आत्म-निर्णय के सिद्धांत के विरूद्ध थीं। उदाहरण के लिए शांति संधियों के बाद लाखों जर्मन जर्मनी से बाहर चेकोस्लोवाकिया और पोलैंड में रह रहे थे। इसी तरह कई तुर्क अब ग्रीस के निवासी थे।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

- **राजदूतों का सम्मेलन (Conference of Ambassadors):** राष्ट्र संघ के गठन होने और इसके पूरी तरह से क्रियाशील होने तक शांति संधियों के संबंध में विवादों का समाधान करने के लिए एक अस्थायी निकाय के रूप में इस निकाय की स्थापना की गई थी। लेकिन राष्ट्रसंघ के गठन के बाद भी यह निकाय अस्तित्व में बना रहा। इससे राष्ट्रसंघ की वैधता और प्राधिकार को चोट पहुंची। कई बार राजदूतों के सम्मेलन ने राष्ट्रसंघ के निर्णयों की अवहेलना की। उदाहरण के लिए कोर्फू घटना (1923); जिससे इटली और ग्रीस संबंधित थे।
- **निःशस्त्रीकरण की विफलता:** केवल जर्मनी का ही वर्साय की संधि के अंतर्गत निःशस्त्रीकरण किया गया था। राष्ट्रसंघ अन्य प्रमुख शक्तियों को निःशस्त्रीकरण के लिए मनाने में विफल रहा। ब्रिटेन और फ्रांस स्व-निःशस्त्रीकरण नहीं चाहते थे। जब 1932-33 में विश्व निःशस्त्रीकरण सम्मेलन आयोजित किया गया तो हिटलर ने फ्रांस के साथ शस्त्रीकरण की समानता की मांग की। लेकिन फ्रांस ने अस्वीकार कर दिया क्योंकि उसे डर था कि जर्मनी समकक्ष सैन्य शक्ति बन जाएगा और शीघ्र ही उसकी सीमाओं के लिए खतरे के रूप में उभर आएगा। हिटलर ने विश्व निःशस्त्रीकरण सम्मेलन को छोड़ने के बहाने के रूप में इसका उपयोग किया। शीघ्र ही वह राष्ट्रसंघ की निंदा करने लगा और साथ ही जर्मनी ने इसकी सदस्यता त्याग दी।
- **सामूहिक सुरक्षा का मजाक:** राष्ट्रसंघ प्रथम विश्वयुद्ध के बाद शांति संधियों के माध्यम से स्थापित सीमाओं के किसी भी उल्लंघन की रोकथाम करने में विफल रहा।
    - **1923 का प्रस्ताव:** इसने प्रत्येक सदस्य को सामूहिक सुरक्षा सिद्धांत की प्राप्ति हेतु सैन्य संसाधनों की आपूर्ति करने के निर्णय की स्वतंत्रता प्रदान की। इस स्वतंत्रता ने किसी सदस्य राष्ट्र के द्वारा युद्ध के किसी भी कृत्य को रोकने के सभी राष्ट्रों के उत्तरदायित्व को प्रभावहीन बना दिया।
    - **जेनेवा प्रोटोकॉल की विफलता (1924):** ब्रिटेन और फ्रांस की सरकारों ने जेनेवा प्रोटोकॉल का प्रस्ताव किया था। राष्ट्रसंघ की सभा ने सर्वसम्मति से "अंतर्राष्ट्रीय विवादों के शांतिपूर्ण समाधान का प्रलेख" स्वीकार किया। इसमें विवादों की अनिवार्य मध्यस्थता का प्रावधान किया गया था। इसने राष्ट्रसंघ के सदस्यों को आक्रमण से पीड़ित राष्ट्र की तत्काल सैन्य सहायता उपलब्ध कराने हेतु प्रतिबद्ध किया। जेनेवा प्रोटोकॉल में यह व्यवस्था थी कि सदस्य राष्ट्र स्वयं को "राष्ट्र संघ के पक्ष में अपनी संप्रभुता पर महत्वपूर्ण सीमाबंधन के लिए सहमति देने हेतु तैयार हों"। लेकिन संयुक्त राज्य अमेरिका ने (अपनी अलगाव की नीति के कारण) इस प्रस्ताव की निंदा की और ब्रिटेन की अगली कंजर्वेटिव सरकार ने इस प्रोटोकॉल से ब्रिटिश समर्थन वापस ले लिया। इस प्रकार इस प्रोटोकॉल की पुष्टि कभी नहीं हो पाई।
    - **1929 के आर्थिक संकट** से गरीबी और बेरोजगारी में वृद्धि हुई और परिणामस्वरूप पूरे विश्व में दक्षिणपंथी सरकारें सत्ता में आ गईं। ये सरकारें अधिक आक्रामक थीं और उन्होंने राष्ट्रसंघ की प्रसंविदा का उल्लंघन किया। उदाहरण के लिए, जापान ने 1931 में मंचूरिया पर आक्रमण कर दिया, 1935 में इटली ने अबीसीनिया पर आक्रमण कर दिया, 1936 का स्पेन का गृहयुद्ध फ्रैंकों के पक्ष में मुसोलिनी और हिटलर द्वारा सैन्य हस्तक्षेप का साक्षी बना। 1937 में जापान ने चीन पर आक्रमण कर दिया और हिटलर ने 1938 में ऑस्ट्रिया को हड़प लिया। इन सभी प्रकरणों में राष्ट्रसंघ शक्तिहीन सिद्ध हुआ और ऐसे सैन्य आक्रामणों को रोकने में विफल रहा। 1931 में मंचूरिया पर जापानी आक्रमण के प्रकरण में राष्ट्रसंघ का यह निर्णय था कि जापान को मंचूरिया को खाली कर देना चाहिए। जापान ने इस निर्णय को अस्वीकार कर दिया और परिणामस्वरूप इसने 1933 में राष्ट्रसंघ की सदस्यता त्याग दी। जापान के विरूद्ध सैन्य या आर्थिक प्रतिबंधों पर चर्चा तक नहीं की गई क्योंकि महामंदी के

VISION IAS
www.upscpdf.com

कारण ब्रिटेन और फ्रांस आर्थिक दबाव में थे। इसी तरह जब अबीसीनिया ने 1935 में इटली के आक्रमण के विरूद्ध राष्ट्रसंघ में अपील की तो राष्ट्रसंघ ने प्रतिबंध लगाया, लेकिन केवल आधे मन से। इटली को अभी भी कोयला, तेल और इस्पात जैसी महत्वपूर्ण वस्तुएँ आयात करने की अनुमति दी गई और इस प्रकार ये प्रतिबंध इटली को अबीसीनिया से पीछे हटने के लिए विवश करने में विफल रहे।

उपर्युक्त चर्चा से तीन बातें स्पष्ट होती हैं तथा विश्व राजनीति पर 1929 के आर्थिक संकट के निम्नलिखित प्रभाव पड़े:

- दक्षिणपंथी सरकारों; विशेषकर जापान, इटली और जर्मनी में फासीवादी शासन व्यवस्थाओं ने विश्व आर्थिक संकट का लाभ उठाया क्योंकि उन्हें पता था कि आर्थिक चिंताओं के कारण ब्रिटेन और फ्रांस जैसे राष्ट्रसंघ के महत्वपूर्ण सदस्य कार्यवाही नहीं करेंगे।
- युद्ध रोकने के लिए ब्रिटेन, फ्रांस और संयुक्त राज्य अमेरिका फासीवादी शासन व्यवस्थाओं के प्रति तुष्टीकरण की नीति अपना रहे थे। यह विनाशकारी साबित हुआ और धीरे-धीरे फासीवादी शासन व्यवस्थाएँ विश्व शांति को चुनौती देने के लिए शक्तिशाली होती गईं।
- साथ ही यह स्पष्ट है कि राष्ट्रसंघ के समर्थक राष्ट्रों सहित प्रत्येक राष्ट्र अपने स्वयं के आर्थिक हितों को लेकर चिंतित था। चाहे यह अलगाव की अमेरिकी नीति हो या जेनेवा प्रोटोकॉल का ब्रिटिश परित्याग हो, प्रमुख शक्तियाँ ऐसा कोई उत्तरदायित्व नहीं उठाना चाहती थीं जिससे कोई प्रत्यक्ष क्षेत्रीय या आर्थिक लाभ न हो। यहां तक कि राष्ट्रसंघ में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले ब्रिटेन और फ्रांस ने भी तब तक कार्यवाही नहीं की जब तक कि उन्हें संयुक्त राज्य अमरीका, सोवियत रूस आदि जैसी अन्य महत्वपूर्ण आर्थिक और सैन्य शक्तियों का समर्थन नहीं मिल गया। इस काल में राष्ट्रीय आर्थिक चिंताएं और राजनीतिक लाभ विश्व शांति की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हो गए थे।
- **राष्ट्र संघ वास्तव में कोई प्रतिनिधि संगठन नहीं था** और इसकी सदस्यता सीमित थी। इसका परिणाम राष्ट्रसंघ के कार्यों के लिए धन की कमी के रूप में भी सामने आया। 1920 में राष्ट्रसंघ के गठन के समय तीन प्रमुख विश्व शक्तियाँ अर्थात् संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत रूस और जर्मनी इसके सदस्य नहीं थे। इस प्रकार यह फ्रांसीसियों और अंग्रेजों का संगठन बनकर रह गया था, फलतः एक वास्तविक विश्व संगठन कहलाने के लिए इसके पास वैधता का अभाव था। जर्मनी को कहीं 1926 में जाकर प्रवेश दिया गया, जबकि सोवियत रूस को 1934 में सदस्यता मिली। संयुक्त राज्य अमेरिका कभी भी राष्ट्रसंघ में सम्मिलित नहीं हुआ और न ही उसने शांति संधियों की पुष्टि ही की। प्रथम विश्व युद्ध के बाद अमेरिकी जनता ने वुडरो विल्सन और उसके चौदह सूत्रों को अस्वीकार कर दिया और अमेरिका अलगाव की अपनी नीति पर वापस लौट गया। रिपब्लिकन राष्ट्रसंघ को एक विश्व सरकार के रूप में देखते थे, जिससे अमेरिका की राष्ट्रीय संप्रभुता और स्वतंत्रता के लिए खतरा था। वे भविष्य के किसी भी सैन्य संघर्ष में सम्मिलित नहीं होना चाहते थे या यूरोपीय मामलों में सम्मिलित नहीं होना चाहते थे। 1933 तक जापान राष्ट्रसंघ से बाहर निकल चुका था और इसके तुरंत बाद ही हिटलर के समय जर्मनी ने भी राष्ट्रसंघ को छोड़ दिया। इस प्रकार द्वितीय विश्व युद्ध की पूर्व संध्या पर राष्ट्र संघ खंडहर बन गया था और विफल हो चुका था।
- **सारांश:** जहां भी राष्ट्रसंघ का निर्णय किसी भी प्रमुख शक्ति के विरूद्ध होता था, राष्ट्रसंघ ऐसे विवादों में अपने निर्णय लागू कराने में विफल रहता था। जापान, इटली और जर्मनी जैसी आक्रामक शासन व्यवस्थाओं ने राष्ट्रसंघ की अवहेलना की। ब्रिटेन और फ्रांस ने राष्ट्रसंघ को प्रभावी बनाने के लिए कुछ विशेष नहीं किया। इस हेतु 1929 का आर्थिक संकट भी अपने तरीके से उत्तरदायी था। राजदूतों के सम्मेलन ने राष्ट्रसंघ का प्राधिकार कम किया। जर्मनी, अमेरिका, सोवियत रूस जैसी महत्वपूर्ण शक्तियाँ इसके सदस्य नहीं थे। राष्ट्रसंघ की प्रसंविदा कमजोर थी और यह वास्तविक सामूहिक सुरक्षा प्रदान करने में विफल रहा।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

33.5. राष्ट्र संघ की विफलता का प्रभाव

- मंचूरिया और अबीसीनिया में आक्रमण के विरूद्ध इसकी निष्क्रियता के कारण धीरे-धीरे छोटे राज्यों ने राष्ट्र संघ में अपना विश्वास खो दिया।
- फासीवादी शासन व्यवस्थाओं को प्रोत्साहन मिला। हिटलर वर्साय की संधि का उल्लंघन करने को लेकर आश्वस्त हो गया।
- द्वितीय विश्व युद्ध नहीं रोका जा सका।

33.6. राष्ट्रसंघ के साथ संयुक्त राष्ट्र संघ की तुलना

संयुक्त राष्ट्र संघ	**राष्ट्रसंघ**
द्वितीय विश्व युद्ध के बाद 1945 में स्थापित	प्रथम विश्व युद्ध के बाद 1920 में स्थापित
संयुक्त राष्ट्र चार्टर	राष्ट्रसंघ प्रसंविदा
स. रा. अमेरिका और सोवियत रूस की सक्रिय भागीदारी	स. रा. अमेरिका सम्मिलित नहीं हुआ। सोवियत रूस का भी बहुत बिलंब से प्रवेश हुआ (1934)
स. रा. अमेरिका और सोवियत रूस का वर्चस्व	ब्रिटेन और फ्रांस का वर्चस्व
स. रा. अमेरिका, सोवियत रूस, चीन और ब्रिटेन के प्रस्तावों पर संयुक्त राष्ट्र का चार्टर आधारित है	स. रा. अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस द्वारा राष्ट्रसंघ की प्रसंविदा तैयार की गई थी क्योंकि रूस को वर्साय की संधि में आमंत्रित नहीं किया गया था।
संयुक्त राष्ट्र का उद्देश्य विश्व शांति, सभी के व्यक्तिगत मानवाधिकारों की सुरक्षा और सामाजिक-आर्थिक विकास है।	राष्ट्रसंघ में व्यक्ति के अधिकारों की सुरक्षा सम्मिलित नहीं थी।
संयुक्त राष्ट्र महासभा का निर्णय सर्वसम्मति के सिद्धांत पर आधारित नहीं है।	राष्ट्रसंघ की महासभा सर्वसम्मति के सिद्धांत के आधार पर निर्णय लेती थी। इसका परिणाम निरंतर गतिरोध निकला।
संयुक्त राष्ट्र में विकासशील देशों की बहुत अधिक भागीदारी है।	राष्ट्रसंघ में उपनिवेशों की कोई भागीदारी नहीं थी।
संयुक्त राष्ट्र अधिका प्रतिनिधित्व वाला संगठन है। लगभग सभी राष्ट्र इसके सदस्य हैं। पूर्व के उपनिवेशों द्वारा स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद यह तृतीय विश्व का कहीं अधिक प्रतिनिधि बन गया है। सोवियत रूस के विघटन के बाद नए राज्यों का उद्भव हुआ और परिणामस्वरूप इसकी सदस्यता में और अधिक वृद्धि हुई।	सभी राष्ट्रों की सदस्यता के अभाव के चलते राष्ट्रसंघ कम प्रतिनिधित्व वाला संगठन था।
निर्णयों के प्रभावी होने के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में मतदान सर्वसम्मति से होने की आवश्यकता नहीं है।	राष्ट्रसंघ की सुरक्षा परिषद में मतदान सर्वसम्मति से होना आवश्यक था।

VISION IAS
WWW.UPSCPDF.com

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, रूस और चीन हैं। अस्थायी सदस्यों की संख्या 10 है जो 2 वर्षों के लिए चुने जाते हैं।	राष्ट्रसंघ की परिषद के स्थायी सदस्य फ्रांस, ब्रिटेन, जापान और इटली थे। 1926 में अस्थायी सदस्यों की संख्या 9 थी जबकि 1920 में जब राष्ट्रसंघ का गठन हुआ था तो इनकी संख्या 4 थी। इन्हें 3 वर्षों के लिए चुना जाता था।

- आर्थिक और सामाजिक विकास कार्यों के प्रति अधिक समय और धन समर्पित किए जाने के कारण संयुक्त राष्ट्र अधिक सफल रहा। साथ ही, राष्ट्रसंघ की तुलना में सामाजिक-आर्थिक विकास के क्षेत्र में संयुक्त राष्ट्र का दायरा भी काफी अधिक व्यापक है। ILO को छोड़कर, संयुक्त राष्ट्र की सभी विशेषज्ञ एजेंसियों की स्थापना 1945 के बाद हुई। संयुक्त राष्ट्र सुशासन पर अधिक केंद्रित है। उदाहरण के लिए इसने सतत विकास लक्ष्यों जैसे विकास संबंधी लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सदस्य राष्ट्रों के साथ कार्यक्रम तैयार किया है और इस दिशा में प्रमुख कार्य कर रहा है। संयुक्त राष्ट्र महत्वपूर्ण निर्णायक कार्रवाई करने में सक्षम रहा है क्योंकि संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA) को सर्वसम्मति वाले मतों की आवश्यकता नहीं होती है। 1950 के **यूनाइटिंग फॉर पीस रेजोल्यूशन** (1950 के कोरियाई युद्ध के दौरान) के प्रावधानों के चलते संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA) अब संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) के वीटो को भी रद्द कर सकता है। उल्लेखनीय है कि साम्यवादी चीन को UNO में प्रवेश न दिए जाने के कारण सोवियत रूस UNSC का बार-बार बहिष्कार कर रहा था, इसीलिए यह प्रावधान लाया गया था। कुछ विश्लेषकों का तर्क है कि प्रस्ताव पर मतदान नहीं करने का अर्थ वीटो करना है। इस प्रकार UNGA से परामर्श किया गया और UNGA ने यह धारा (**यूनाइटिंग फॉर पीस रेजोल्यूशन)** पारित की जिसने वीटो को रद्द करना संभव बनाया और इस प्रकार संयुक्त राष्ट्र कोरिया युद्ध में हस्तक्षेप कर सका। प्रस्ताव में कहा गया कि "ऐसी किसी भी स्थिति में जहां सुरक्षा परिषद, अपने पांच स्थायी सदस्यों में मतैक्य की कमी के कारण अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए आवश्यक कार्यवाही करने में विफल रहती है, महासभा तुरंत उस मामले पर विचार करेगी और ऐसी कोई भी अनुशंसा कर सकती है जो वह अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा पुनर्स्थापित करने के लिए आवश्यक समझे।"
- इसके साथ ही संयुक्त राष्ट्र के महासचिव की उसके राष्ट्रसंघ के समकक्ष की तुलना में बहुत अधिक प्रतिष्ठा है। कोफी अन्नान (1997-2006) अपनी संघर्ष समाधान की क्षमता के लिए बहुत प्रसिद्ध हो गए थे। यहां तक कि यदि संयुक्त राष्ट्र युद्ध नहीं भी रोक पाया तो भी वह विभिन्न अवसरों पर युद्धविराम के लिए मध्यस्थता करके त्वरित समाप्ति में सफल रहा।
- वैश्विक शासन के युग में संयुक्त राष्ट्र और अधिक महत्वपूर्ण बन गया है और क्योंकि उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण तथा पर्यावरण और अन्य ग्लोबल कॉमन्स की सुरक्षा जैसी वैश्विक चिंताओं के मुद्दों के कारण विश्व अधिक एकीकृत हो गया है।

33.7. संयुक्त राष्ट्र और राष्ट्रसंघ के बीच समानताएं :

- विश्व शांति और सामाजिक-आर्थिक विकास का समान उद्देश्य
- सुरक्षा परिषद में सदस्यों की वीटो शक्तियाँ

अपनी स्वयं की स्थायी सेना का अभाव और इस प्रकार सैनिकों के योगदान के लिए सदस्यों पर निर्भरता

साझा कमजोरियां:

- महाशक्तियों का उपकरण मात्र होने का आरोप

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

- पश्चिम समर्थक
- शक्तिशाली राष्ट्रों के अधीन होना

अमेरिका और यूरोप पर वित्तीय निर्भरता: संयुक्त राष्ट्र मुख्य रूप से अमेरिकी वित्त पोषण पर निर्भर है, जबकि राष्ट्रसंघ ब्रिटेन और फ्रांस पर निर्भर था।

34. 1919-29 तक का विश्व

- **तुर्की राष्ट्रवादः** तुर्की सेवर्स की संधि (1920) से अप्रसन्न था क्योंकि उसे ग्रीस के हाथों अपना बहुत सा प्रदेश खोना पड़ा था। इस संधि के उपरांत तुर्की की जनसंख्या का एक हिस्सा ग्रीस के कब्जे वाले क्षेत्र में चला गया। इसने राष्ट्रवाद के उदय का मार्ग प्रशस्त किया और मुस्तफा कमाल पाशा ने ग्रीस को उसके कब्जे वाले इलाकों से बाहर खदेड़ दिया।
- **शांति संधियों से इटली की अप्रसन्नता:** इटली प्रथम विश्व युद्ध के बाद प्राप्त क्षेत्रीय लाभों से अप्रसन्न था। जब 1915 में मित्र देशों की ओर से सम्मिलित होने के लिए उसे राजी किया गया था तो उसे बहुत कुछ देने का वादा किया गया था। अतः जब 1922 में मुसोलिनी इटली में सत्ता में आया तो इटली ने युगोस्लाविया से फ्यूम छीन लिया। कोर्फू की घटना 1923 में घटित हुई। कोर्फू ग्रीस का एक द्वीप था। अल्बानिया और ग्रीस के बीच क्षेत्रीय विवाद के समाधान के लिए स्थापित सीमा आयोग के अंतर्गत काम कर रहे कुछ इतालवी श्रमिकों को मार दिया गया। प्रत्युत्तर में, इटली ने ग्रीस पर बमबारी की और कोर्फू पर कब्जा कर लिया और इटली ने मांगी गई क्षतिपूर्ति का भुगतान होने के बाद ही उसे छोड़ा।
- **यूरोप पर अमेरिकी युद्ध ऋण:** अमेरिका प्रथम विश्व युद्ध से बहुत लाभान्वित हुआ था। उसने खूब हथियार बेचे और मित्र शक्तियों को ऋण दिया। ब्रिटेन, फ्रांस और अन्य मित्र देशों को आशा थी कि अमेरिका उन्हें ऋण पर कुछ रियायत प्रदान करेगा। लेकिन अमेरिका ने युद्ध ऋण के पूर्ण पुनर्भुगतान की मांग जारी रखी।
- **जर्मन युद्ध क्षतिपूर्ति का प्रश्न:** ब्रिटेन और फ्रांस आर्थिक दबाव से जूझ रहे थे। उन्हें युद्ध के बाद अमेरिका का युद्ध ऋण चुकाना था और अपने यहां अवसंरचना के पुनर्निर्माण के लिए भी धन का निवेश करना था। जर्मनी भी युद्ध से तहस-नहस हो गया था और युद्ध क्षतिपूर्ति का भुगतान करना उसके लिए बहुत कठिन हो गया था। उसे उदार व्यवहार और भुगतान की जाने वाली राशि पर पुनर्विचार की आशा थी। ब्रिटेन भुगतान की शर्तें सरल करने के पक्ष में था, क्योंकि इससे जर्मन अर्थव्यवस्था में तेजी से सुधार होता, जिससे उसके लिए युद्ध क्षतिपूर्ति का भुगतान करना वास्तव में संभव होता। इसके साथ ही समृद्ध जर्मनी ब्रिटिश वस्तुओं के लिए निर्यात बाजार के रूप में काम करता। वहीं दूसरी ओर, फ्रांस कठोर नीति अपनाए हुए था और चाहता था कि जर्मनी युद्ध क्षतिपूर्ति का पूरा भुगतान करे। ऐसा दो कारणों से था। पहला, यह निकट भविष्य में जर्मनी को आर्थिक रूप से कमजोर रखने की फ्रांसीसी रणनीति थी जिससे वह फ्रांसीसी सीमाओं के लिए खतरा न पैदा कर सके। दूसरा, फ्रांस अमेरिका से लिए गए ऋणों का पुनर्भुगतान करने के लिए वास्तव में जर्मन युद्ध क्षतिपूर्ति पर निर्भर था।
- **रूसी गृह युद्ध (1918-20):** बोल्शेविकों ने सत्ता में आने के बाद दूसरे देशों में साम्यवादियों की सहायता करने के लिए अपने एजेंटों को भेजकर शेष विश्व में साम्यवादी क्रांति का निर्यात करने का प्रयास किया। इससे रूस लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था वाले अधिकांश देशों का शत्रु बन गया। रूस में लेनिन ने क्रांति के बाद लोकतांत्रिक चुनावों के माध्यम से गठित विधानसभा को भंग कर दिया और साम्यवादी शासन की स्थापना करके सत्ता हड़प ली। यह लोकतंत्र चाहने वाले अन्य समूहों के बीच असंतोष का प्रमुख कारण बन गया। पश्चिमी राष्ट्रों और जापान ने रूसी गृहयुद्ध में बोल्शेविकों से लड़ने के लिए सेनाएँ भेजीं। यह गृहयुद्ध बोल्शेविकों और अन्य समूहों (जिन्हें व्हाइट्स के रूप में जाना जाता था) के बीच लड़ा गया। शेष यूरोप में साम्यवादी क्रांति विफल हो गई थी, लेकिन रूस में सफल रही क्योंकि बोल्शेविक गृहयुद्ध (1918-20) में विजेता के रूप में उभरे थे।

VISION IAS
www.upscpdf.com

35. प्रथम विश्व युद्ध के बाद अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में सुधार की दिशा में किए गए प्रयास

- **राष्ट्रसंघ (लीग ऑफ़ नेशन्स)**: बातचीत के माध्यम से विवादों के समाधान के जरिए विश्व शांति स्थापित करने के उद्देश्य से 1920 में राष्ट्रसंघ की स्थापना की गई। सामूहिक सुरक्षा के सिद्धांत के अंतर्गत आक्रमणकारी राष्ट्र के विरूद्ध सेना का उपयोग और आर्थिक प्रतिबंध अपरिहार्य था। राष्ट्रसंघ छोटे विवादों का समाधान करने में सफल रहा परन्तु बड़ी शक्तियों की आक्रामकता की रोकथाम करने में यह विफल रहा।
- **आंग्ल-रूसी व्यापार संधि (1921)**: रूसी गृहयुद्ध (1918-20) के बाद, ब्रिटेन और रूस के बीच सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध थे। शेष यूरोप में साम्यवादी क्रांति विफल रही थी, पश्चिमी शक्तियाँ रूसी गृहयुद्ध में बोल्शेविकों को हराने में असफल रहीं थीं और रूस गृहयुद्ध से थक गया था। अब वह ब्रिटेन से निवेश और मित्रता चाहता था।
- **वाशिंगटन सम्मेलन (1921-22):** सुदूर पूर्व में बढ़ते जापानी प्रभाव को रोकने के लिए वाशिंगटन सम्मेलन अमेरिका द्वारा आयोजित किया गया था। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान, जापान मित्र शक्तियों के पक्ष में लड़ा था और उसने चीन के कियाचाओ द्वीप और शांतुंग प्रांत पर कब्जा कर लिया था। साथ ही उसने प्रशांत महासागर में स्थित जर्मनी के अधिकार वाले सभी द्वीपों पर भी कब्जा कर लिया था। इस प्रकार, प्रथम विश्व युद्ध के बाद जापान प्रशांत क्षेत्र में अमेरिका का प्रतिद्वंद्वी बनकर उभरा था और उसने मजबूत नौसेना का विकास कर लिया था जो अमेरिकी हितों को खतरे में डाल सकती थी। वाशिंगटन सम्मेलन के माध्यम से अमेरिका जापान के साथ युद्ध और नौसैनिक प्रतिद्वंदिता रोकना चाहता था। इस सम्मेलन के बाद सहमति व्यक्त की गई कि जापान चीन के कियाचाओ द्वीप और शांतुंग प्रांत से हट जाएगा। बदले में, जापान को जर्मनी के अधिकार वाले प्रशांत महासागर के द्वीपों पर कब्ज़ा बनाए रखने की अनुमति दी गई। इसके साथ ही, ब्रिटेन, फ्रांस और अमेरिका ने जापान की सीमा के समीप नौसैनिक बेस का निर्माण न करने पर सहमति व्यक्त की। अमेरिका, जापान, ब्रिटेन और फ्रांस द्वारा चीन पर तटस्थ रहने की गारंटी दी गई। इसके साथ ही इन शक्तियों ने सुदूर पूर्व में एक-दूसरे के अधिकार क्षेत्रों का सम्मान करने पर भी सहमति व्यक्त की। यह समझौता अमेरिका, ब्रिटेन और जापान के नौसैनिक बेड़े पर सीमा आरोपित करता था जिनकी नौसेना 5:5:3 के अनुपात में होनी थी, अर्थात जापानी नौसेना ब्रिटेन और अमेरिका की नौसेना का ⅗ वां भाग होती।

वाशिंगटन सम्मेलन का प्रभाव:

- हालांकि जापान की नौसेना का आकार ब्रिटेन और अमेरिका की नौसेना का 3/5 था फिर भी जापान प्रशांत क्षेत्र में सर्वोच्च शक्ति के रूप में उभरा क्योंकि जापानी नौसेना प्रशांत क्षेत्र में संकेंद्रित थी, जबकि ब्रिटेन और अमेरिका की नौसैनाएँ सभी महासागरों में फैली थीं।
- 1930 के दशक में जापान द्वारा चीन पर आक्रमण करने पर जब अमेरिका ने जापान के विरूद्ध हस्तक्षेप करने से मना कर दिया तो ब्रिटेन और फ्रांस ने भी कोई कार्यवाही नहीं की क्योंकि उन्हें लगा कि अमेरिका के बिना जापान के विरुद्ध युद्ध करने में उन्हें भारी क्षति उठानी पड़ेगी।
- **जेनोवा सम्मेलन (1922):** जेनोवा सम्मेलन ब्रिटेन द्वारा आयोजित किया गया था। निम्नलिखित समस्याओं का समाधान करना इस सम्मेलन का उद्देश्य था:
    - **फ्रांस-जर्मनी की शत्रुता**: जर्मनी फ्रांस को युद्ध क्षतिपूर्ति का भुगतान रोकने की धमकी दे रहा था।
    - **अमेरिकी युद्ध ऋण:** अमेरिका ने प्रथम विश्व युद्ध के दौरान संबद्ध मित्रशक्तियों को मुक्त रूप से ऋण दिया था और युद्ध के बाद कमजोर अर्थव्यवस्था के कारण, ब्रिटेन और फ्रांस के लिए पुनर्भुगतान करना मुश्किल हो रहा था।
    - ब्रिटेन रूस के साथ राजनयिक संबंध स्थापित करना चाहता था।

VISION IAS
WWW.UPSCPDF.com

जेनोवा सम्मेलन का परिणाम: जेनोवा सम्मेलन उपरोक्त समस्याओं का समाधान करने में विफल रहा क्योंकि फ्रांस जर्मनी से पूर्ण युद्ध क्षतिपूर्ति की मांग कर रहा था। इसके साथ ही, अमेरिका ने सम्मेलन में भाग लेने से मना कर दिया और सभी ऋणों का पूर्ण भुगतान करने की मांग की। युद्ध क्षतिपूर्ति के प्रश्न पर फ्रांस द्वारा लचीलापन न दिखाने के कारण जर्मनी ने सम्मेलन का परित्याग कर दिया। रूस ने भी सम्मेलन का परित्याग कर दिया क्योंकि ब्रिटेन ने मांग की कि प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ज़ार शासन द्वारा लिए गए युद्ध ऋणों का भुगतान बोल्शेविक करें।

जेनोवा सम्मेलन का प्रभाव

- जर्मनी और रूस ने एक अलग समझौते **{रैपलो (Rapallo) समझौता 1922}** पर हस्ताक्षर किया जिसके माध्यम से उन्होंने एक दूसरे को दी जाने वाली किसी भी युद्ध क्षतिपूर्ति को रद्द कर दिया।
- फ्रांस ने 1923 में रूर क्षेत्र पर कब्जा कर लिया और लगभग 40 मिलियन पाउंड कीमत की वस्तुओं को जब्त कर लिया। रुर एक महत्वपूर्ण औद्योगिक क्षेत्र था। फ्रांस इस पर कब्ज़ा कर जर्मनी को युद्ध क्षतिपूर्ति का भुगतान करने के लिए विवश करना चाहता था। इस घटना के उपरांत वहां के जर्मन निवासियों ने निष्क्रिय प्रतिरोध का मार्ग अपनाया और वहां किसी भी प्रकार का कार्य करने से मना कर दिया। इससे न केवल फ्रांसीसी कब्जा विफल हो गया बल्कि जर्मन अर्थव्यवस्था पर भी इसका प्रभाव पड़ा। वस्तुओं की आपूर्ति में कमी के कारण जर्मनी में मुद्रास्फीति में अत्यधिक वृद्धि हुई और इस कारण जर्मन फ्रैंक का इतना अवमूल्यन हुआ कि वस्तुतः वह मूल्यहीन हो गई।
- **डेविस योजना (Dawes Plan-1924):** इस योजना का उद्देश्य रुर पर फ्रांसीसी कब्ज़े से उत्पन्न समस्याओं और इसके फलस्वरूप जर्मनी में आई गैलोपिंग मुद्रास्फीति एवं जर्मन फ्रैंक के भारी अवमूल्यन का समाधान करना था। अमेरिका ने इसका नेतृत्व किया और डेविस योजना के अंतर्गत यह सहमति व्यक्त की गई कि जर्मनी पर्याप्त समृद्ध होने तक प्रतिवर्ष उतनी ही धनराशि का भुगतान करेगा जितना वह वहन कर सकता है। लेकिन जर्मनी द्वारा भुगतान की जाने वाली कुल राशि में कोई कमी नहीं की गई। जर्मनी को अपनी अर्थव्यवस्था का पुनर्निर्माण करने के लिए अमेरिकी ऋण भी मिला। इसके साथ ही, फ्रांस ने रुर से हट जाने पर सहमति व्यक्त की। डेविस योजना सफल रही और अमेरिकी ऋणों के कारण जर्मनी की अर्थव्यवस्था सुधरने लगी। डेविस योजना के बाद अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में सुधार आया और इसने 1925 की लोकार्नो की संधियों के लिए जमीन तैयार की।
- **लोकार्नो की संधियाँ (1925):** इसमें सम्मिलित होने वाली मुख्य शक्तियों में ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी और इटली थे। पोलैंड, बेल्जियम और चेकोस्लोवाकिया इसमें शामिल होने वाले अन्य देश थे। इन संधियों को यूरोप में शांति और मित्रता के नए युग की पूर्व-संध्या के रूप में देखा गया। लोकार्नो संधियों के अंतर्गत हस्ताक्षरकर्ता देशों ने प्रथम विश्व युद्ध के बाद शांति संधि द्वारा निर्धारित सीमाओं को मान्यता प्रदान करने पर सहमति व्यक्त की। इसका अर्थ यह था कि राष्ट्रों ने एक दूसरे पर आक्रमण नहीं करने का वचन दिया और यदि किसी एक देश पर आक्रमण होता तो अन्य राष्ट्र आक्रामक देश के विरूद्ध एवं पीड़ित राष्ट्र के पक्ष में हस्तक्षेप करते। जर्मनी ने फिर से पुष्टि की कि वह वर्साय की संधि के अनुसार राइनलैंड को विसैन्यीकृत रखना जारी रखेगा।

लोकार्नो संधियों का प्रभाव

- यूरोप में इन संधियों को लोकार्नो भावना या फ्रांस और जर्मनी के बीच लोकार्नो हनीमून के रूप सराहा गया। 1926 में जर्मनी को राष्ट्रसंघ में प्रवेश करने की अनुमति दी गई। यूरोप में आर्थिक समृद्धि आई और मित्रता का वातावरण बना। स्ट्रेसमैन (जर्मनी), ब्रियान्ड (फ्रांस) और चेम्बरलेन (ब्रिटेन) ने 1929 तक अनवरत मुलाकात की।
- **कमियाँ:** ब्रिटेन और जर्मनी ने पोलैंड और चेकोस्लोवाकिया के साथ लगी जर्मन सीमाओं की गारंटी नहीं दी। यह वह क्षेत्र था जहां विवाद होने की संभावना सर्वाधिक थी। इस समस्या की उपेक्षा करके, ब्रिटेन ने यह संदेश दिया कि यदि जर्मनी पोलैंड या चेकोस्लोवाकिया पर आक्रमण करेगा तो वह हस्तक्षेप नहीं करेगा। लोकार्नो भावना भ्रम थी, क्योंकि यह आर्थिक समृद्धि पर इतना अधिक निर्भर थी कि जब 1929 की महामंदी में आर्थिक समृद्धि का काल समाप्त हो गया तो पुरानी शत्रुताएं पुनः जागृत हो गईं।

VISION IAS
WWW.UPSCPDF.com

- **केलॉग-ब्रियान्ड संधि (1928)**
    - यह अमेरिका एवं फ्रांस की अगुवाई वाली पहल थी और इसमें 65 देशों ने भाग लिया था जिन्होंने राष्ट्रीय नीति के उपकरण के रूप में युद्ध की निंदा करते हुए एक समझौते पर हस्ताक्षर किया।
    - **प्रभाव**: इस संधि का बहुत महत्व नहीं था क्योंकि आक्रमणकारी के विरूद्ध प्रतिबंधों का कोई उल्लेख नहीं किया गया था। जापान ने भी इस समझौते पर हस्ताक्षर किया था लेकिन शीघ्र ही उसने 1931 में मंचूरिया पर आक्रमण कर दिया।
- **यंग योजना (1929):** इसका उद्देश्य जर्मन युद्ध क्षतिपूर्ति के प्रश्न का समाधान करना था। इस योजना के अनुसार, भुगतान की जाने वाली कुल राशि पूर्व के 6600 मिलियन पाउंड से घटाकर 2000 मिलियन पाउंड कर दी गई। इसके साथ ही, इस नव निर्धारित राशि का 59 वर्षों के दौरान भुगतान किया जाना था। अमेरिका द्वारा संचालित यंग योजना का कारण यह था कि डेविस योजना ने जर्मनी द्वारा भुगतान की जाने वाली कुल राशि अपरिवर्तित छोड़ दी थी और जर्मनी उक्त राशि में कमी चाहता था। इसके अतिरिक्त फ्रांस भी लोकार्नो भावना के कारण अब समझौता करने के लिए तैयार था।

36. 1929 के बाद की घटनाएं

- वर्ष 1929 विश्व इतिहास में एक महत्वपूर्ण प्रस्थान बिंदु है क्योंकि 1929 के बाद यूरोप ने द्वितीय विश्व युद्ध की दिशा में आगे बढ़ना आरंभ कर दिया था। स्ट्रेसमान की मृत्यु (1929), वॉल स्ट्रीट का क्रैश होना (1929) और 1933 में हिटलर का सत्तासीन होना (वह चांसलर बन गया) जैसी 1929 के दौरान और बाद में होने वाली घटनाओं के कारण लोकार्नो भावना समाप्त हो गई।

36.1. 1929 का आर्थिक संकट

- 1929 का आर्थिक संकट जर्मनी में भारी बेरोजगारी लाया। 1932 तक जर्मनी में 6 मिलियन बेरोजगार पुरुष थे। इससे नाजियों के विकास को बढ़ावा मिला और वाईमर गणतंत्र का पतन हो गया। नाजियों के उदय के साथ, जर्मनी के प्रति फ्रांसीसी व्यवहार कठोर हो गया क्योंकि नाजियों ने चरम राष्ट्रवादी प्रचार के आधार पर सफलता प्राप्त की थी। नाज़ी सभी जर्मन क्षेत्रों को राइख के अंतर्गत लाना चाहते थे।

36.2. लॉसेन सम्मेलन (1932)

- इस सम्मेलन में ब्रिटेन और फ्रांस ने जर्मनी को शेष बचे युद्ध क्षतिपूर्ति का भुगतान करने की जिम्मेदारी से मुक्त कर दिया। ऐसा इसलिए किया गया था क्योंकि महामंदी के चलते 1932 तक छह मिलियन जर्मन लोग बेरोजगार हो चुके थे।

36.3. विश्व निःशस्त्रीकरण सम्मेलन

- विश्व निःशस्त्रीकरण सम्मेलन 1932-33 में आयोजित किया गया। राष्ट्रसंघ की प्रसंविदा के अंतर्गत सभी सदस्यों ने शस्त्रीकरण में कमी करने पर सहमति व्यक्त की, लेकिन वर्साय की संधि के अनुसार केवल जर्मनी का निःशस्त्रीकरण होना था। जर्मनी ने मांग की कि या तो सभी का निःशस्त्रीकरण होना चाहिए या शस्त्रीकरण के मामले में उसे कम से कम फ्रांस के समान स्थिति दी जानी चाहिए। ब्रिटेन और इटली जर्मनी के साथ सहानुभूति रखते थे। अंत में, जब फ्रांस टस से मस नहीं हुआ, तो हिटलर ने जर्मनी को इस सम्मेलन के साथ-साथ राष्ट्रसंघ से भी बाहर निकाल लिया (दोनों 1933 में)।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

37. फ्रांस-जर्मनी संबंध (1919-33)

वर्साय की संधि के लिए होने वाली बातचीत के दौरान फ्रांस ने कठोर संधि पर बल दिया। फ़्रांस ने भविष्य में जर्मन आक्रमण को रोकने के लिए निम्नलिखित तीन रणनीतियों का अनुसरण किया:-

- **जर्मनी को आर्थिक और सैन्य रूप से कमजोर रखना**। इसमें निम्नलिखित तत्व सम्मिलित थे:
  - फ़्रांस ने इस बात का दबाव बनाया कि जर्मनी युद्ध क्षतिपूर्ति का पूर्ण भुगतान करे।
  - जर्मनी को युद्ध क्षतिपूर्ति का भुगतान करने पर बाध्य करने के लिए रुर पर कब्जा (1923): रुर पर कब्जे का ब्रिटेन ने प्रबल विरोध किया क्योंकि ब्रिटेन जर्मनी के साथ उदार व्यवहार करने के पक्ष में था। ब्रिटेन का मानना था कि समृद्ध जर्मनी यूरोप की स्थिरता और ब्रिटेन के निर्यात के लिए बेहतर होगा।
  - 15 वर्षों तक सार क्षेत्र के कोयले का उपयोग।
  - फ्रांस ने वर्साय की संधि का प्रारूप तैयार करने के दौरान जर्मनी के निःशस्त्रीकरण और राइनलैंड के विसैन्यीकरण पर बल दिया था।

  जब ब्रिटेन जिनेवा प्रोटोकॉल से पीछे हट गया और संयुक्त राज्य अमेरिका ने अलगाव की नीति को पुनः अपना लिया और किसी भी युद्ध की स्थिति में फ्रांस को समर्थन देने का अग्रिम वचन देने से मना कर दिया तो फ्रांस ब्रिटेन और अमेरिका से नाराज हो गया।
- **संधियों पर हस्ताक्षर**: भविष्य में किसी भी जर्मन आक्रमण की रोकथाम के लिए फ्रांस ने 1921 से लेकर 1927 तक यूगोस्लाविया, चेकोस्लोवाकिया, पोलैंड और रोमानिया के साथ संधियों पर हस्ताक्षर किया। इन संधियों को सामूहिक रूप से **लिटिल एंटेंट** के रूप में जाना जाता है। लेकिन **लिटिल एंटेंट** कमज़ोर भागीदारों के कारण बहुत महत्वपूर्ण नहीं था। फ्रांस को व्यग्रतापूर्वक रूस जैसे सहयोगी की आवश्यकता थी क्योंकि इससे जर्मनी को एक साथ दो सीमाओं पर व्यस्त रखना संभव होता। लेकिन, रूस इस समय साम्यवादियों के अधीन था जो जर्मनी की तुलना में अधिक खतरनाक समझा जा रहा था। सोवियत रूस ने फ्रांस के साम्यवादियों की सहायता करने के लिए गुप्त एजेंट भेजकर 1917 में अपनी साम्यवादी क्रांति का निर्यात करने का प्रयास किया था।

- **मेल-मिलाप / मैत्री**: डेविस योजना (1924), लोकार्नो की संधियाँ (1925), यंग योजना (1929) और लॉसेन सम्मेलन (1932) आदि के माध्यम से मेल-मिलाप और मैत्री का प्रयास किया गया। स्ट्रासमान 1923 से लेकर 1929 तक जर्मन विदेश मंत्री था। वह बहुत ही महत्वपूर्ण नेता था और प्रथम विश्व युद्ध के बाद के मुश्किल दशक के दौरान उसने जर्मन विदेश नीति का संचालन किया था। फ्रांस और जर्मनी के बीच के संबंध डेविस योजना (1924) तक कड़वे बने रहे। डेविस योजना के बाद वाईमर गणतंत्र के अंतर्गत जर्मनी में आर्थिक सुधार हुआ और परिणामस्वरूप दोनों राष्ट्रों के

बीच तनाव कम हुआ। मेल-मिलाप के दृष्टिकोण के साथ समस्या यह थी कि लोकार्नो भावना के विकास के पीछे का व्यक्ति स्ट्रासमान भी प्रथम विश्व युद्ध के बाद जर्मन इच्छाओं की पूर्ति और जर्मन शिकायतों का निवारण चाहता था। स्ट्रासमान के नेतृत्व में जर्मनी अभी भी निम्नलिखित व्यवस्था प्राप्त करना चाहता था, हालांकि इन्हें प्राप्त करने के लिए उसने आक्रामक रुख नहीं अपनाया:

- पोलिश गलियारा और डेनजिंग बंदरगाह
- ऑस्ट्रिया के साथ संघ का निर्माण
- चेकोस्लोवाकिया से सुडेटनलैंड
- वर्साय की संधि का संशोधन अर्थात जर्मनी द्वारा दी जाने वाली क्षतिपूर्ति राशि में कमी, निःशस्त्रीकरण खंड की समाप्ति और राइनलैंड का पुनर्सैन्यीकरण।

राइनलैंड

1929 के संकट के बाद, नाजियों का प्रभाव बढ़ गया और इसलिए जर्मनी में चरम राष्ट्रवाद भी बढ़ गया। फ्रांस का व्यवहार जर्मनी के विरूद्ध कठोर हो गया और उसने सोवियत रूस जैसे संभावित भावी सहयोगियों के निकट आना आरंभ किया:

- **ऑस्ट्रिया जर्मन सीमा-शुल्क संघ (1931)**: इसका प्रस्ताव जर्मनी ने किया था और इसका अत्यधिक आर्थिक महत्व था। फ्रांस ने हेग में अंतर्राष्ट्रीय स्थायी न्यायालय में अपील की, जिसने सीमा-शुल्क संघ के विरूद्ध निर्णय दिया।
- **विश्व निःशस्त्रीकरण सम्मेलन (1932-33)**: सम्मेलन में जर्मनी ने सभी देशों द्वारा निःशस्त्रीकरण के लिए सहमति न व्यक्त करने पर फ्रांस के समान मात्रा में हथियार रखने के अधिकार की मांग की। फ़्रांस ने इस पर असहमति व्यक्त की और परिणामस्वरूप हिटलर के नेतृत्व में जर्मनी निःशस्त्रीकरण सम्मेलन और राष्ट्र संघ दोनों से बाहर निकल गया।

38. ब्रिटेन-सोवियत रूस संबंध (1919-33)

निम्नलिखित बिंदुओं के अंतर्गत इस संबंध को निरूपित किया जा सकता है:

- 1907 के ब्रिटेन-रूस समझौते से द्विपक्षीय तनाव में कमी आई और अधिक से अधिक व्यापार एवं निवेश का मार्ग प्रशस्त हुआ।
- **लेफ्ट-राईट विभाजन:** यह कहा जा सकता है कि जब भी लेबर पार्टी सत्ता में होती थी तो दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय संबंध अच्छे होते थे और जब कंजर्वेटिव सत्ता में आते थे तो सम्बन्ध रूखे हो जाते थे। ऐसा वामपंथी रूस और दक्षिणपंथी कंजर्वेटिवों की विचारधारा में अंतर के कारण होता था।
- रूसी गृहयुद्ध (1918-20) में ब्रिटेन की भागीदारी।
- **व्यापार समझौता (1921)**: लेनिन रूसी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए व्यापार और निवेश चाहता था। इसके साथ ही इस समझौते द्वारा एक प्रकार से साम्यवादी सरकार को ब्रिटेन से मान्यता प्राप्त हो गई।
- **जेनोवा सम्मेलन (1922):** यहां ज़ार शासन द्वारा उठाए गए युद्ध कालीन ऋणों के प्रश्न पर रूस और ब्रिटेन के बीच दरार चौड़ी हो गई।
- **अस्थिर राजनयिक संबंध:** 1927 में ब्रिटेन और भारत में कोमिंटर्न की गतिविधियों के संबंध में पता चलने पर ब्रिटेन की कंज़र्वेटिव सरकार ने रूस के साथ राजनयिक संबंध समाप्त कर दिए। 1929 में लेबर पार्टी की सरकार ने सोवियत रूस के साथ राजनयिक संबंध पुन: स्थापित किए।
- **हिटलर का उदय:** 1933 में हिटलर के चांसलर बनने के बाद, दोनों (ब्रिटेन-रूस) राष्ट्रों के बीच सकारात्मकता में वृद्धि हुई। हिटलर के अधीन जर्मनी ने रूसी सीमाओं के लिए खतरा पैदा किया और साथ ही नाजी प्रचार साम्यवादियों की आलोचना में बहुत अतिवादी था। ऐसा इसलिए था क्योंकि जर्मनी में साम्यवादी नाजियों के प्रमुख विरोधी समूह थे और 1917 के बाद, बोल्शेविकों ने जर्मनी में साम्यवादी क्रांति उकसाने का प्रयास किया था।

39. सोवियत रूस-जर्मनी संबंध (1919-33)

1930 तक रूस और जर्मनी के बीच संबंध सामान्यत: अच्छे थे, इसका श्रेय स्ट्रेसमैन के नेतृत्व को दिया जा सकता है। वहीं दूसरी ओर, सोवियत रूस कम से कम एक पूंजीवादी देश के साथ अच्छे संबंध रखना चाहता था। इनके संबंधों में निम्नलिखित महत्वपूर्ण बिंदु थे:

- **व्यापार संधि (1921):** 1921 में सोवियत रूस और जर्मनी के बीच एक व्यापार संधि पर हस्ताक्षर किया गया और आगे चलकर जर्मन उद्योगपतियों को रूस में व्यापारिक रियायतें मिलीं।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

- **रैपलो समझौता 1922**: इसके निम्नलिखित प्रावधान थे:
  - रूस और जर्मनी के बीच पूर्ण राजनयिक संबंध पुन: स्थापित किया गया।
  - रूस और जर्मनी के बीच विशेष संबंध।
  - एक दूसरे को भुगतान की जाने वाली किसी भी युद्ध क्षतिपूर्ति को रद्द कर दिया गया।
  - **जर्मन शस्त्रीकरण आरंभ हुआ**: जर्मनी को वायुयान और गोला-बारूद के निर्माण के लिए रूस में कारखानों का निर्माण करने की अनुमति दी गई। इससे जर्मनी के लिए शस्त्रीकरण से संबंधित वर्साय की संधि की धारा को विफल बनाना संभव हुआ। जर्मन अधिकारियों ने ऐसे हथियारों का उपयोग सीखने के साथ रूस में प्रशिक्षण लेना आरंभ किया जो वर्साय की संधि के कारण जर्मनी में निषिद्ध थे।
  - रूस और जर्मनी के बीच इस सौहार्द्र के कई कारण थे। रूस और जर्मनी दोनों पोलैंड को कमजोर रखना चाहते थे। रूस चाहता था कि भविष्य में पश्चिम से होने वाले किसी भी आक्रमण के विरूद्ध जर्मनी मध्यस्थ राज्य के रूप में कार्य करे। इसका कारण यह था कि पश्चिमी शक्तियाँ साम्यवादी रूस की विरोधी थीं। इसके साथ ही, रूस कम से कम एक पूंजीवादी देश के साथ अच्छे संबंध रखना चाहता था।
- **बर्लिन की संधि (1926)**: इसने रैपलो समझौते का नवीनीकरण 1931 तक के लिए कर दिया। जर्मनी ने सोवियत रूस पर किसी अन्य शक्ति द्वारा आक्रमण किए जाने पर तटस्थ रहने का वचन दिया। इसके साथ ही दोनों ने सहमति व्यक्त की कि उनमें से कोई भी एक दूसरे के विरूद्ध आर्थिक प्रतिबंधों का उपयोग नहीं करेगा।
- **1930 के दशक के बाद:**
  - 1930 के दशक के बाद दोनों देशों के मध्य संबंधों में नकारात्मकता आ गई क्योंकि रूसी जर्मनी में नाजियों के बढ़ते प्रभाव के विरूद्ध थे और नाजी साम्यवादियों के कट्टर विरोधी थे।
  - रूस ने ऑस्ट्रिया-जर्मनी सीमा-शुल्क संघ (1931) के विचार का विरोध किया क्योंकि उसने इसे बढ़ते जर्मन राष्ट्रवाद के संकेत के रूप में देखा जिससे भविष्य में रूसी सीमाओं के लिए खतरा पैदा हो सकता था।
  - स्टालिन धीरे-धीरे पोलैंड, ब्रिटेन और फ्रांस की ओर झुकने लगा था।
  - 1934 के बाद, हिटलर ने रूस के साथ संबंध सुधारने का प्रयास किया। उसने 1939 में रूस के साथ अनाक्रमण संधि पर हस्ताक्षर किया।
- **अनाक्रमण संधि (1939):** इस संधि पर रूस और जर्मनी ने हस्ताक्षर किया था और दोनों ने एक दूसरे पर आक्रमण नहीं करने का वचन दिया था। जर्मनी द्वारा पोलैंड पर आक्रमण करने पर सोवियत रूस के तटस्थ बने रहने की स्थिति में सोवियत रूस और जर्मनी के बीच पोलैंड को आधा-आधा विभाजित करने का एक अनुच्छेद भी इस समझौते में शामिल था। यह हिटलर की एक रणनीतिक जीत थी क्योंकि इसने ब्रिटेन को सोवियत संघ के साथ गठबंधन पर हस्ताक्षर करने से रोक दिया। चूंकि ब्रिटेन ने पोलैंड की सुरक्षा की गारंटी दी थी अतः इस प्रकार के गठबंधन से पोलैंड की रक्षा करना ब्रिटेन के लिए और अधिक आवश्यक हो गया था।

40. सोवियत संघ और फ्रांस के परस्पर सम्बन्ध (1919-33)

निम्नलिखित कारणों से 1930 तक दोनों के बीच अप्रिय सम्बन्ध थे:

- **वर्साय की संधि:** फ्रांसीसी विरोध के कारण वर्साय की संधि वार्ताओं में रूस को आमंत्रित नहीं किया गया था। ऐसा इसलिए था क्योंकि 1917 के पश्चात् बोल्शेविकों ने फ़्रांस के कम्युनिस्टों को फ़्रांस में क्रांति के लिए उकसाने का प्रयास किया था।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

- **रूसी गृह युद्ध (1918-20):** फ़्रांस ने बोल्शेविकों के साथ युद्धरत व्हाइट्स के पक्ष में अपनी सैनिक टुकड़ियां भेजी थीं।
- **रूस-पोलैंड युद्ध (1920):** फ़्रांस ने पोलैंड की सहायता के लिए अपनी सैनिक टुकड़ियाँ भेजी थीं जो बाद में रूसियों को वारसा (पोलैंड की राजधानी) से वापिस धकेलने में सक्षम रहीं।
- **लिटिल एंटेंट (1921-27):** लिटिल एंटेंट के अंतर्गत फ़्रांस-पोलैंड संधि (1912 में हस्ताक्षरित) जितनी जर्मनी के विरुद्ध थी उतनी ही यह रूस के विरुद्ध भी थी।

1930 के पश्चात् जर्मनी में नाजियों के उदय के कारण फ़्रांस-रूस सम्बन्धों में सकारात्मक वृद्धि हुई थी।

40.1. वर्साय की संधि

प्रमुख विषय 1:
वर्साय की संधि जर्मनी के गौरव को आहत करती है और नाजीवाद के विकास को गति प्रदान करती है।

- यह संधि "तीन बड़ों" अर्थात अमेरिका, ब्रिटेन और फ़्रांस को संतुष्ट करती हुई प्रतीत होती है, क्योंकि उनकी दृष्टि में यही शांति थी। इन्हें यह लगता था कि यह संधि जर्मनी को निर्बल तो बनाए रखेगी, परन्तु इतना सशक्त भी रखेगी कि वह समाजवाद के प्रसार को रोक सके। साथ ही यह फ़्रांसीसी सीमा को जर्मन आक्रमण से सुरक्षित भी रखेगी। राष्ट्रसंघ जैसे संगठन की स्थापना भी हो गयी थी जिससे विश्व भर में युद्ध की समाप्ति हो जाएगी।
- परन्तु, इसके कारण सम्पूर्ण जर्मनी में क्रोध व्याप्त हो गया, क्योंकि ऐसा लग रहा था कि एक राष्ट्र के रूप में जर्मनी के साथ अनुचित व्यवहार हुआ था। इन सबसे अधिक जर्मनी पर युद्ध के कारण के रूप में दोषारोपण करने वाले अनुच्छेद और उसके परिणामस्वरूप इस संधि में लगाये गए आर्थिक दंड पर जर्मनी में घृणा व्याप्त थी। जर्मनी के सामान्य नागरिकों का यह मत था कि अगस्त 1914 में की गई जर्मन सरकार की गलतियों के लिए उन्हें दंडित किया जा रहा था, जबकि सरकार ने युद्ध की घोषणा की थी न कि लोगों ने।
- संधि की अपमानजनक शर्तें जर्मनी को वर्षों तक भड़काती रहीं और इसने विभिन्न प्रकार से नाजीवाद के उदय में सहायता प्रदान की।

41. संयुक्त राज्य अमेरिका की विदेश नीति

प्रमुख विषय 2:

- संयुक्त राज्य ने अमेरिका पृथकतावाद की नीति अपनाया और यूरोपीय राजनीतिक मामलों से दृष्टि फेर लिया।
- अमेरिका की आर्थिक मंदी विश्व आर्थिक संकट में तब्दील हो गयी जिसने शीघ्र हीं कई यूरोपीय देशों को अपने चपेट में ले लिया और आने वाले वर्षों में यूरोप के राजनीतिक निर्णयों को प्रभावित किया।

- **वाशिंगटन सम्मेलन (1921-22):** सुदूर पूर्व में जापान के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए अमेरिका द्वारा वाशिंगटन सम्मेलन का आयोजन किया गया था। वाशिंगटन सम्मेलन के आयोजन के पीछे प्रमुख उद्देश्य यह था कि इसके द्वारा अमेरिका जापान के साथ युद्ध और नौसैनिक दौड़ को रोकना चाहता था। इस सम्मेलन के पश्चात् यह सहमति बनी कि जापान किआचाओ द्वीप (Kiachow Island) और चीन के शानतुंग प्रान्त से सेना हटा लेगा और उसके बदले में जापान को जर्मन प्रशांत द्वीपों को अपने पास रखने की अनुमति प्राप्त हो गयी। इसके अतिरिक्त ब्रिटेन, फ़्रांस और अमेरिका; जापान की सीमा के समीप नौसैनिक बेस न बनाने के लिए भी सहमत हो गए।

VISION IAS
WWW.UPSCPDF.com

अमेरिका, जापान, ब्रिटेन और फ्रांस द्वारा चीन की तटस्थता की गारंटी दी गई। इन शक्तियों ने सुदूर पूर्व में एक दूसरे की संपत्तियों का सम्मान करने के लिए भी अपनी सहमति दी। इस समझौते में अमेरिका, ब्रिटेन और जापान के समुद्री बेड़ों की सीमा भी निर्धारित की गई, जिसे क्रमशः 5:5:3 के अनुपात में रखा जाना था। इसके कारण अमेरिका और ब्रिटेन के मध्य तनाव उत्पन्न हुआ, क्योंकि अंग्रेज ब्रिटिश नौसेना पर सीमा लगाए जाने से प्रसन्न नहीं थे। 1930 में जापान ने वाशिंगटन समझौते के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की लेकिन शीघ्र ही इसने नौसेना पर लगाई गयी सीमा का उल्लंघन किया।

- **पृथकतावाद की नीति:** प्रथम विश्व युद्ध में अमेरिका बहुत अधिक उलझा हुआ था। युद्ध के पश्चात् रिपब्लिकन को सत्ता प्राप्त हुई और उन्होंने पृथकतावाद की नीति का अनुसरण किया। रिपब्लिकन के अंतर्गत अमेरिका ने राष्ट्रसंघ में सम्मिलित नहीं होने का निर्णय लिया। इसने किसी भी शांति संधि की पुष्टि नहीं की और फ्रांस की सीमाओं की गारंटी देने से भी मना कर दिया। पृथकतावाद की इस नीति का कारण यह था कि अमेरिकी युद्ध से तंग आ गए थे और उन्हें यूरोपीय राष्ट्रों के प्रति संदेह भी था कि वे शांतिपूर्वक रहेंगे। वे नहीं चाहते थे कि अमेरिका किसी भी प्रकार के सैन्य विवाद में सम्मिलित हो। पुनः उन्होंने राष्ट्रसंघ के विचार को भी अस्वीकार कर दिया, क्योंकि वे इसे एक अतिरिक्त सरकार के रूप में देखते थे। इसी आधार पर उन्होंने फ्रांस और ब्रिटेन द्वारा तैयार किये गये जेनेवा प्रोटोकॉल का विरोध किया, जो सब के लिए सामूहिक सुरक्षा प्रदान कर सकता था। इसके अंतर्गत सदस्य राष्ट्रों को "राष्ट्रसंघ के पक्ष में उनकी सार्वभौमिकता पर महत्त्वपूर्ण सीमाएं लगाने की सहमति देनी थी।"
- पृथकतावाद की नीति के परिणामस्वरूप इसने फासीवादी शासकों द्वारा 1930 के दशक में किए गए विभिन्न आक्रामक गतिविधियों के प्रति निष्क्रियता का प्रदर्शन किया। जापान द्वारा 1931 में मंचूरिया पर किये गए आक्रमण के विरुद्ध अमेरिका ने किसी भी तरह की कार्यवाही नहीं की। यहाँ तक कि ब्रिटेन और फ्रांस ने भी कोई कार्यवाही नहीं की। जब जापान ने मंचूरिया से बाहर निकलने से मना कर दिया तो राष्ट्रसंघ कुछ भी नहीं कर सका।
- **वाल स्ट्रीट के ध्वस्त होने एवं इसके विश्व आर्थिक संकट में परिवर्तित होने के कारण:**
  - **यूरोपीय देशों का युद्ध ऋण:** यूरोपीय देश युद्ध ऋण चुका पाने में कठिनाई का अनुभव कर रहे थे। ब्रिटेन और फ्रांस को अमेरिका से ऋण माफ़ी की अपेक्षा थी क्योंकि अमेरिका को प्रथम विश्व युद्ध से बहुत लाभ प्राप्त हुआ था। इसने यूरोप के पूर्व-निर्यात बाजारों पर अधिकार कर लिया था। परन्तु अमेरिका ने पूर्ण भुगतान पर बल दिया। जब तक फ्रांस ने रूर पर अधिकार नहीं किया था, अमेरिका मित्रराष्ट्रों द्वारा अमेरिका के ऋण का भुगतान करने और जर्मनी द्वारा मित्रराष्ट्रों को युद्ध क्षतिपूर्ति किये जाने में कोई सम्बन्ध नही देख पा रहा था। इसके अतिरिक्त अमेरिका ने विदेशी व्यापार शुल्कों की दरें बहुत ऊंची रखी थीं। इन कारकों ने यूरोपीय अर्थव्यवस्था को आघात पहुंचाया।
  - यद्यपि अमेरिका ने प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् पृथकतावाद की नीति पर लौटने का प्रयास किया, परन्तु शीघ्र ही उसे यह आभास हुआ कि वह अपनी सीमाओं के बाहर होने वाली घटनाओं से आँख नहीं चुरा सकता क्योंकि इन घटनाओं से उसकी अर्थव्यवस्था प्रभावित हो रही थी। 20वीं शताब्दी का दूसरा दशक यूरोपीय अर्थव्यवस्था के लिए बहुत समृद्ध था अतः अमेरिका ने यूरोप में अपना निवेश और व्यापार बढ़ाने का प्रयास किया। यूरोप की आर्थिक समृद्धि और राजनीतिक स्थिरता अमेरिका के व्यापारिक हितों, निवेशों और मित्रराष्ट्रों को दिए गये ऋणों की वापसी के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण थी और अमेरिका यूरोपीय राष्ट्रों में घट रही घटनाओं की उपेक्षा भी नहीं कर सकता था। 1923 में रूर औद्योगिक क्षेत्र पर फ्रांस के अधिग्रहण से जर्मनी में मुद्रास्फीति तेजी से बढ़ने लगी, क्योंकि जर्मनी के श्रमिकों ने अपने निष्क्रिय प्रतिरोध के रूप में काम करना बंद कर दिया था। परिणामस्वरूप जर्मन अर्थव्यवस्था में मांग और आपूर्ति के असंतुलन द्वारा हुए फ्रैंक के तीव्र अवमूल्यन ने जर्मन अर्थव्यवस्था को उथलपुथल कर दिया था। फ्रांस को अमेरिकी ऋणों को चुकाना कठिन लग रहा था। इस घटना के पश्चात् ही अमेरिका को जर्मनी द्वारा युद्ध क्षतिपूर्ति और

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

मित्रराष्ट्रों द्वारा अमेरिकी ऋण चुकाए जाने में सम्बन्ध समझ में आया। इस प्रकार अमेरिका डेविस योजना (1924) के माध्यम से जर्मनी की सहायता के लिए आगे आया, जिसने जर्मनी को युद्ध क्षतिपूर्ति भुगतान में सहायता की और फ्रांस ने रूर पर अधिकार छोड़ने के लिए सहमति दे दी। जब एक विवाद के कारण मैक्सिको ने अमेरिकी स्वामित्व वाले तेल के कुओं का अधिग्रहण करने की धमकी दी तब मैक्सिको में संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई। अमेरिकी सरकार ने हस्तक्षेप किया और समझौता हो गया। इस प्रकार अपनी सीमाओं के बाहर बढ़ रहे आर्थिक हितों के कारण अमेरिका को अपनी पृथकतावाद की नीति से हटना पड़ा।

- **ऋणों का मकड़ जाल:** जैसेकि पहले चर्चा की जा चुकी है, अमेरिका ने प्रथम विश्व युद्ध के समय मित्र राष्ट्रों को धन उधार दिया था। मित्र शक्तियाँ स्वयं अमेरिका से प्राप्त अपने ऋण चुकाने के लिए जर्मनी द्वारा की जाने वाली युद्ध क्षतिपूर्ति पर निर्भर थीं। इस प्रकार जब जर्मनी ने युद्ध क्षतिपूर्ति के भुगतान में चूक करना प्रारम्भ किया तो अमेरिका को जर्मनी की सहायता के लिए *डेविस योजना* (1924) और *यंग योजना* (1929) के माध्यम से ऋण प्रदान करने पड़े। इस प्रकार से ऋणों के मकड़जाल से बन गये थे, जहाँ अमेरिका जर्मनी को युद्ध क्षतिपूर्ति के लिए ऋण देता था, जिससे वह ब्रिटेन और फ्रांस को भुगतान करता था, जिससे फिर ये देश अमेरिका को ऋण वापसी के रूप में उसी धन का भुगतान करते थे। संयुक्त राज्य अमेरिका के संकट का प्रमुख कारण ऋणों का यह मकड़ जाल था जो उसे तेजी से भीषण आर्थिक मंदी की ओर ले जा रहा था। एक बार जब अमेरिका जर्मनी को और अधिक ऋण देने की स्थिति में नहीं था तो उसने यूरोपीय देशों से अपने ऋणों के तुरंत भुगतान की मांग की जिससे पूरे यूरोपीय राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था चरमराने लगी। 1929 की वैश्विक आर्थिक मंदी का अमेरिका ही उत्तरदायी था।

प्रमुख विषय 3: 1930 के दशक में जर्मनी, इटली और जापान की धुरी शक्तियों की फासीवादी शासनों द्वारा आक्रामक गतिविधियों में वृद्धि देखी गई। दमदार आक्रामकता और चतुर कूटनीति के एक चतुर मिश्रण के माध्यम से धुरी शक्तियाँ पड़ोसी देशों के छोटे-छोटे क्षेत्रों को हथियाने के साथ-साथ अपनी सैन्य शक्तियों का भी विस्तार कर रहे थे।

42. अंतर्राष्ट्रीय संबंध (1933-39)

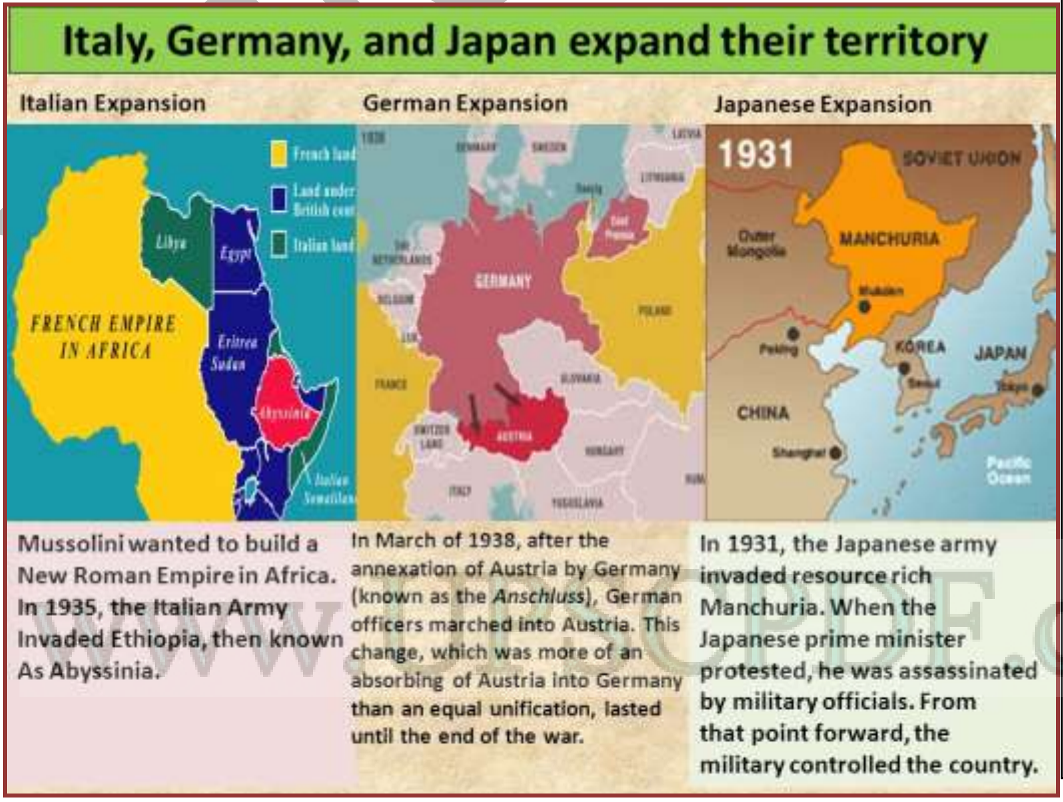

- **भूमिका:** 1933-39 की अवधि इटली, जर्मनी और जापान जैसे फासीवादी शासनों द्वारा शासित आक्रामकता की अवधि थी। यह ऐसा समय था जिसमें जर्मनी ने वर्साय की संधि का उल्लंघन करना प्रारम्भ कर दिया था। लोकार्नो की भावना जो ब्रिटेन, फ़्रांस और जर्मनी के बीच सम्बन्धों का सकारात्मक लक्षण थी, 1929 की महान आर्थिक मंदी और स्ट्रेसमैन (जर्मन विदेश मंत्री, जिन्होंने जर्मनी और फ़्रांस के बीच सामंजस्य स्थापित किया था) की मृत्यु के पश्चात् समाप्त हो गयी थी। 20वीं शताब्दी के तीसरे दशक में जापान, इटली और जर्मनी में राष्ट्रवाद अपने चरम पर पहुंच गया था।
- **घटनाक्रम को संक्षेप में इस प्रकार बताया जा सकता है:**
    - जापान ने मंचूरिया पर आक्रमण किया (1931) और राष्ट्रसंघ जापान को पीछे हटने के लिए विवश नहीं कर सका।
    - 1933 में जर्मनी ने स्वयं को विश्व निःशस्त्रीकरण सम्मेलन से बाहर कर लिया। 1933 में ही जापान और जर्मनी ने अपने आप को राष्ट्रसंघ से बाहर कर लिया। धीरे-धीरे राष्ट्र संघ के अधिकार घटते रहे और 1939 तक यह एक मृतप्राय संगठन बन गया था।
    - 1935 में जर्मनी ने अनिवार्य सैन्य सेवा प्रारम्भ कर दी।
    - जर्मनी द्वारा अनिवार्य सैन्य सेवा प्रारम्भ किए जाने के विरोध में इटली, ब्रिटेन और फ़्रांस के बीच स्ट्रेसा फ्रंट (1935) बना।
    - 1935 के आंग्ल-जर्मन नौसैनिक समझौते से जर्मनी को पनडुब्बियाँ बनाने की अनुमति प्राप्त हो गई और स्ट्रेसा फ्रंट समाप्त हो गया।
    - मुसोलिनी ने अबीसीनिया पर आक्रमण कर दिया (1935)।
    - 1936 में राइनलैंड का पुनर्सैन्यीकरण।
    - रोम-बर्लिन धुरी (1936)
    - हिटलर और जापान के बीच 1936 में कोमिंटर्न विरोधी समझौते पर हस्ताक्षर
    - स्पेन का गृह युद्ध (1936)।
    - जापान ने 1937 में चीन पर पूर्ण रूप से आक्रमण कर दिया।
    - अंसचल्स (Anschluss)-हिटलर ने 1938 में ऑस्ट्रिया पर अधिकार कर लिया।
    - म्युनिख सम्मेलन (1938) – हिटलर को चेकोस्लोवाकिया से इस वचन पर सुडेटेनलैंड प्राप्त हो गया कि वह चेकोस्लोवाकिया के किसी अन्य क्षेत्र पर अपना दावा नहीं करेगा।
    - हिटलर ने म्यूनिख संधि को भंग करके चेकोस्लोवाकिया पर अधिकार कर लिया।
    - हिटलर ने डैंनज़िंग के स्वतंत्र शहर की मांग की। पोलैंड इसके विरुद्ध था। ब्रिटेन और फ़्रांस ने जर्मनी के आक्रमण की स्थिति में पोलैंड की सहायता करने के लिए सहमति प्रदान कर दी।
    - हिटलर ने 1939 में रूस के साथ परस्पर आक्रमण न करने के लिए संधि की और पोलैंड पर आक्रमण कर दिया।
    - ब्रिटेन ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और द्वितीय विश्व युद्ध का आरम्भ हो गया।
- **जापानी आक्रमण:** इस अवधि में जापान की तीन महत्वपूर्ण आक्रामक गतिविधियाँ उल्लेखनीय हैं। इसने 1931 में मंचूरिया पर आक्रमण किया, 1933 में चीन के उत्तरी-पूर्वी भाग पर आक्रमण किया और 1937 में चीन पर सम्पूर्ण आक्रमण का आदेश दे दिया, जिसके परिणामस्वरुप द्वितीय चीन-जापान युद्ध (1937-45) हुआ। यह युद्ध द्वितीय विश्व युद्ध में परिणत हो गया, जो 1945 तक चला।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

जापान का प्रसार

- **मंचूरिया पर आक्रमण (1931):** यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि जापान ने मंचूरिया पर आक्रमण (1931) क्यों किया? आर्थिक मंदी के कारण जापान अत्याधिक आर्थिक तनाव से ग्रस्त था। इसके निर्यात नाटकीय ढंग से कम हो गये थे और भरपूर फसल के उत्पादन के कारण चावल के मूल्यों में कमी आ गयी थी। जापान के लोग अत्याधिक आर्थिक कठिनाइयों से जूझ रहे थे। मंचूरिया में च्यांग काई शेक का प्रभाव भी बढ़ रहा था। जिसके कारण मंचूरिया में जापानी हितों के लिए संकट उत्पन्न हो रहा था। रूस-जापान युद्ध (1904-05) के पश्चात् जब जापान को दक्षिणी मंचूरिया और आर्थर बन्दरगाह पर विशेष अधिकार प्राप्त हुए थे तो जापान ने मंचूरिया के उद्योगों और आधारभूत ढांचे के विकास की योजनाओं में (विशेषरूप से दक्षिणी मंचूरिया में) निवेश किया था। (*1931 तक मंचूरिया के रेलवे और बैंकिंग व्यवस्था पर जापान का नियन्त्रण हो गया था)। अतः सेना ने जापानी सरकार की आपत्तियों की अवहेलना करते हुए मंचूरिया पर आक्रमण कर दिया।
- **मंचूरिया पर आक्रमण के परिणाम:** जापान ने मंचूरिया को स्वाधीन मान्चुको राज्य के रूप में घोषित कर दिया और वहां एक कठपुतली सरकार की स्थापना कर दी। राष्ट्रसंघ का मत था कि मंचूरिया क्षेत्र के प्रशासन को उसके नियन्त्रण में लाया जाना चाहिए, परन्तु जापान ने इसकी उपेक्षा की। संघ कुछ भी नहीं कर सका क्योंकि अमेरिका जापान से युद्ध नहीं चाहता था और ब्रिटेन तथा फ़्रांस ने बिना अमेरिका के समर्थन के किसी भी कार्यवाही से मना कर दिया। इस प्रकार से यह पश्चिमी शक्तियों द्वारा जापान के तुष्टीकरण का एक कार्य बन गया।
- **उत्तरी-पूर्वी चीन पर आक्रमण (1933):** 1933 में जापान चीन के उत्तरी-पूर्वी क्षेत्रों की ओर बढ़ा। इसका कोई औचित्य नहीं था और यह विशुद्ध रूप से एक आक्रामक कार्यवाही थी। 1935 तक जापान कुओमिन्तांग सरकार (KMT) और माओ-ज़ेडोंग (माओत्से तुंग) की चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CCP) के बीच छिड़े गृहयुद्ध का लाभ उठाते हुए चीन के बहुत बड़े क्षेत्र पर अधिकार करने में सफल रहा था।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

- **चीन पर आक्रमण (1937):** 1936 में जर्मनी के साथ कोमिनटर्न विरोधी संधि पर हस्ताक्षर करने के पश्चात् जापान ने चीन पर आक्रमण करने की योजना बनाई। जापान ने पीकिंग में चीनी और जापानी सैनिकों के बीच हुई छोटी सी घटना को आक्रमण के लिए एक बहाना बना लिया। 1938 तक शंघाई और नानकिंग (च्यांग काई शेक की राजधानी) जापानियों के नियन्त्रण में आ गये थे। परन्तु, इससे सम्पूर्ण विजय प्राप्त नहीं हुई थी। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि 1936 तक CCP और KMT के बीच जापानी आक्रमण का प्रतिरोध करने के लिए एक युद्धविराम समझौते पर सहमति हुई थी। इससे पूर्व च्यांग काई शेक ने जापानियों से निबटने के स्थान पर माओ को हराने पर अपना ध्यान केन्द्रित कर रखा था जिससे 1936 तक की जापानी सफलता की व्याख्या हो जाती है। इसके अतिरिक्त रूस ने भी चीन की सहायता की, परन्तु वह इसमें पूरी तरह सम्मिलित नहीं हुआ क्योंकि वह स्वयं भी जापान से पूर्णतः उलझना (चौतरफा युद्ध) नहीं चाहता था।
- **निष्कर्ष:** द्वितीय विश्व युद्ध की पूर्व संध्या पर पूर्वी चीन का अधिकांश क्षेत्र जापान के नियन्त्रण में था, वहीं च्यांग काई शेक और माओ का नियन्त्रण मध्य और पश्चिमी भागों पर था। यह तर्क दिया जा सकता है कि यद्यपि राष्ट्रसंघ ने जापान की निंदा की परन्तु यह इतना सशक्त नहीं था कि जापान के विरुद्ध कोई कठोर कार्यवाही कर सके, क्योंकि:
    - अमेरिका पृथकतावाद की नीति का अनुसरण कर रहा था।
    - रूस (संयुक्त समाजवादी सोवियत गणतन्त्र-USSR) जापान के साथ पूर्णतः उलझना नहीं चाहता था।
    - ब्रिटेन और फ़्रांस हिटलर से ही निबटने में अत्यधिक व्यस्त थे।

मुसोलिनी की विदेश नीति:

- **1919-24:** मुसोलिनी ने 1922 में सत्ता ग्रहण की और तुरंत ही एक आक्रामक विदेश नीति लागू करनी प्रारम्भ कर दी। उसने **1923 की कोर्फू घटना** (*पहले चर्चा की जा चुकी है) को लेकर ग्रीस पर बमबारी की, जहाँ इटली द्वारा ग्रीस को युद्ध की सम्पूर्ण क्षतिपूर्ति के लिए विवश किया गया। यहीं पर राजदूतों के सम्मेलन में राष्ट्रसंघ के मत को अस्वीकृत कर दिया गया। **फ्यूम:** 1924 में इटली ने फ्यूम पर आक्रमण किया और उसपर अधिकार कर लिया। 1920 के पश्चात् से फ्यूम युगोस्लाविया और इटली के बीच विवाद की जड़ बना हुआ था। एक समझौते के रूप में रपालो की संधि (1920) पर हस्ताक्षर किए गये, जिसमें फ्यूम के स्वतंत्र नगर को इटली और फ़्रांस द्वारा संयुक्त रूप से उपयोग किये जाने का प्रावधान किया गया था। 1920-24 तक इसका अस्तित्व एक स्वतंत्र नगर का था। इसके पश्चात् इटली ने अपने सैनिक बल वहां भेज दिए और युगोस्लाविया ने इटली द्वारा फ्यूम के अधिग्रहण को मान्यता प्रदान कर दी।
- **1924-34:** इस अवधि में इटली की विदेश नीति की दो महत्वपूर्ण चिंताएं थीं। **पहली** – इटली-फ़्रांस प्रतिद्वंद्विता, क्योंकि फ़्रांस युगोस्लाविया का सहयोगी था (*लिटिल एंटेन्ट* को स्मरण करें) और भूमध्यसागर और बाल्कन में इटली भी प्रभाव बनाने के लिए फ़्रांस के साथ प्रतिस्पर्धा कर रहा था। **दूसरी**, इटली को यह आशंका थी कि जर्मनी आस्ट्रिया पर अधिकार कर सकता है, जो इटली के उत्तर-पूर्व में था और इटली और जर्मनी के बीच एक तटस्थ राज्य का कार्य करता था।
- **लोकार्नो सन्धियाँ और इटली:** इटली 1925 की लोकार्नो संधि में प्रतिभागी था। लोकार्नो सन्धियों पर राष्ट्रसंघ के अधिकार-क्षेत्र से बाहर हस्ताक्षर किये गये थे:
    - जर्मनी ने राइनलैंड के असैन्यीकरण की पुन: पुष्टि की थी।
    - इसके अतिरिक्त, जर्मनी, फ़्रांस और बेल्जियम ने एक दूसरे की सीमाओं का सम्मान करने का वचन दिया। इटली और ब्रिटेन ने इसका उत्तरदायित्व लिया था। तीनों में से (फ़्रांस, बेल्जियम, जर्मनी) किसी के द्वारा भी आक्रमण की स्थिति में अन्य सभी आक्रमण के पीड़ित की सहायता करेंगे।

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

- ○ जर्मनी, पोलैंड और चेकोस्लोवाकिया के बीच एक समझौता हुआ था, जिसमें सीमा विवादों के मुद्दों के लिए मध्यस्थता न्यायाधिकरण या स्थायी अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय द्वारा मध्यस्थता की अनुमति थी। परन्तु जर्मनी ने पोलैंड और चेकोस्लोवाकिया के साथ अपनी सीमाओं की कोई गारंटी नहीं दी थी। पोलैंड या चेकोस्लोवाकिया में से यदि किसी पर भी जर्मनी का आक्रमण हुआ तो फ़्रांस ने उनकी सहायता के लिए अपनी सहमति दी थी। परन्तु जब लोकार्नो संधि में प्रदान की गयी गारंटी के अनुरूप इटली-आस्ट्रिया की सीमाओं की गारंटी की कोई व्यवस्था नहीं दी गई तो इटली को बहुत निराशा हुई।

- **बाल्कन क्षेत्र में इटली:** इस दशक में इटली ने अल्बानिया, बुल्गारिया और ग्रीस से अच्छे सम्बन्ध बना कर बाल्कन क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ाने का प्रयास किया। अल्बानिया जोकि इटली का दक्षिणी पड़ोसी था, दोनों के बीच परस्पर आर्थिक और सैन्य संधियों के कारण इटली के आर्थिक प्रभाव में आ गया। अल्बानिया युगोस्लाविया का विरोधी था। ऐसा इसलिए था; क्योंकि सर्बिया, जो अब युगोस्लाविया का अंग था प्रथम बाल्कन (1912) युद्ध के पश्चात् अल्बानिया का क्षेत्र चाहता था। परन्तु शांति समझौते के समय अल्बानिया को एक स्वाधीन राज्य बना दिया गया था। अल्बानिया पर इटली के प्रभाव से इटली को एड्रियाटिक सागर पर नियन्त्रण प्राप्त हो गया था।

- **इटली और ब्रिटेन:** इटली ने ब्रिटेन से भी, विशेषकर उपनिवेशों के प्रश्न पर अच्छे सम्बन्ध विकसित करने का प्रयास किया। उसने इराक के मोसुल प्रान्त पर ब्रिटेन के दावे का समर्थन किया, जिसमें टर्की भी अपना हित देखता था। राष्ट्रसंघ ने इस विवाद में ब्रिटेन का पक्ष लिया और 1926 में टर्की इस निर्णय से सहमत हो गया। इसके बदले में ब्रिटेन ने सोमालीलैंड इटली को दे दिया। इसके अतिरिक्त इटली ने सोवियत संघ (USSR) के साथ 1933 में अनाक्रमण संधि पर हस्ताक्षर कर लिए। इस प्रकार से इस दशक में इटली ने स्वयं को आक्रामक विदेशी नीति के स्थान पर कूटनीति में अधिक व्यस्त रखा।

- **1934 के पश्चात्:** प्रारम्भिक विरोध के पश्चात् मुसोलिनी का झुकाव हिटलर की ओर हो गया और इटली ने कई आक्रामक कार्यवाहियाँ कीं।

www.UPSCPDF.com

- **आस्ट्रिया, जर्मनी और इटली:** मुसोलिनी ने व्यापारिक समझौतों पर हस्ताक्षर करके आस्ट्रिया की नाजी-विरोधी सरकार के समर्थन द्वारा नाज़ी जर्मनी के विरुद्ध आस्ट्रिया को सशक्त करने का प्रयास किया। 1934 में नाजी प्रदर्शनकारियों ने आस्ट्रिया के चांसलर की हत्या कर दी। इसके पश्चात् मुसोलिनी ने जर्मनी द्वारा आस्ट्रिया पर अधिकार करने के किसी भी प्रयास को पहले से ही रोकने के लिए इटली-आस्ट्रिया सीमा पर सैन्यबल भेज दिए। इसके साथ ही जर्मनी द्वारा आस्ट्रिया को अपने नियन्त्रण में लेने का पहला प्रयास विफल रहा और फ़्रांस-इटली के सम्बन्धों में सुधार हुआ।
- **स्ट्रेसा मोर्चा (1935):** इसका उद्देश्य लोकार्नो संधियों की पुष्टि करना तथा आस्ट्रिया की स्वतंत्रता को घोषित करना था। इसके हस्ताक्षरकर्ता जर्मनी द्वारा भविष्य में वर्साय संधि में परिवर्तन करने के किसी भी प्रयास का विरोध करने के लिए भी सहमत हुए थे। 1935 में हिटलर के कांस्क्रिपशन (अनिवार्य सैन्य सेवा) निर्णय की निंदा करने के लिए इटली के साथ फ़्रांस और ब्रिटेन भी सम्मिलित हो गये। यह अनिवार्य सैन्य सेवा का निर्णय वर्साय की संधि का उल्लंघन था। इसके अतिरिक्त ब्रिटेन और फ़्रांस ने इटली की सीमाओं की गारंटी भी दी। इससे मुसोलिनी को बहुत राहत प्राप्त हुई, जो आस्ट्रिया में जर्मनी की महत्वाकांक्षा के प्रति आशंकित था।
- **आंग्ल-जर्मन नौसेना समझौता (1935)** के अंतर्गत हिटलर को पनडुब्बियाँ बनाने की अनुमति प्राप्त हो गयी। इस घटना के पश्चात् मुसोलिनी का ब्रिटेन से विश्वास उठ गया। फ़्रांस भी ब्रिटेन से निराश था और आंग्ल-जर्मन समझौते से स्ट्रेसा मोर्चा भंग हो गया। हिटलर के लिए यह कूटनीतिक विजय थी। इसके पश्चात् हिटलर की सफलता से मुसोलिनी बहुत प्रभावित हुआ और हिटलर समर्थक बन गया।
- **अबीसीनिया पर आक्रमण (1935):** इसके तुरंत बाद मुसोलिनी ने अबीसीनिया (इथियोपिया) पर आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण के निम्नलिखित प्रमुख कारण थे:
    - 1896 में अबीसीनिया के साथ हुए युद्ध में इटली को जो क्षति पहुंची थी वह इसका प्रतिशोध लेना चाहता था। मुसोलिनी सोचता था कि इस विजय से देश के भीतर उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।
    - मुसोलिनी स्थानीय समस्याओं से जन सामान्य का ध्यान हटाना चाहता था और अपनी लोकप्रियता में वृद्धि करना चाहता था। यह स्मरण रखा जाना चाहिए कि इटली अभी तक महान वैश्विक मंदी के प्रभाव का सामना कर रहा था।
    - इटली को एक निर्यात बाजार प्राप्त हो जायेगा और उसे अपनी आर्थिक समस्याओं से जूझने में सहायता मिलेगी।

स्ट्रेसा मोर्चे को पुनर्जीवित करने के प्रयास में ब्रिटेन और फ़्रांस ने अबीसीनिया संकट के लिए मीडिया में इटली की निंदा नहीं की। इसके अतिरिक्त यह प्रथम अवसर था जब राष्ट्रसंघ ने किसी देश को आक्रामक घोषित कर उसके विरुद्ध आर्थिक प्रतिबन्ध लगाने का निर्णय लिया हो। परन्तु इटली को प्रतिबंधित करने का निर्णय आधे मन से किया गया और यह औपचारिकता मात्र बन कर रह गई। इटली के आर्थिक प्रतिबंधों में कोयला, इस्पात और तेल के निर्यात को प्रतिबंधित नहीं किया गया था। ये वस्तुएँ इटली में प्रमुखता से आयात होती थीं और इनके व्यापार को प्रतिबंधित किये बिना कोई भी प्रतिबंध सशक्त नहीं हो सकते थे। वे इटली को अबीसीनिया से बाहर जाने के लिए विवश करने में विफल रहे। ब्रिटेन और फ़्रांस, दोनों ही आर्थिक और सैन्य रूप से उस युद्ध के लिए तैयार नहीं थे जो इटली के तेल और कोयला निर्यात पर प्रतिबन्ध लगाने के कारण हो सकता था। इस प्रकार ब्रिटेन और फ़्रांस ने तुष्टीकरण की नीति का अनुसरण किया। राष्ट्रसंघ अबीसीनिया की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने में विफल रहा। राष्ट्रसंघ और इसकी सामूहिक सुरक्षा की अवधारणा की साख में कमी आई। प्रतिबन्ध इतने कठोर नहीं थे फिर भी मुसोलिनी इनसे क्रोधित था। स्ट्रेसा मोर्चा मृतप्राय हो गया था और मुसोलिनी का झुकाव हिटलर की ओर होने लगा था। हिटलर द्वारा इटली के आक्रमण की निंदा न करने से उसे इटली में मुसोलिनी के रूप में एक सहयोगी प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हो गया था। इसके बदले में मुसोलिनी ने 1938 में जर्मनी द्वारा आस्ट्रिया पर किए गए अधिकार के विरुद्ध कोई आपत्ति नहीं की।

- **स्पेन के गृह युद्ध में इटली की भूमिका (1936):** स्पेन का गृह युद्ध दक्षिण और वाम पंथों के बीच हुआ था। दक्षिण पंथ का नेता फ्रैंको था। मुसोलिनी ने स्पेन में अपनी सेनाएं फ्रैंको के पक्ष में युद्ध लड़ने के लिए भेजीं। इसके लिए मुसोलिनी ने इस बहाने का उपयोग किया कि वह यूरोप में

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

साम्यवाद के प्रसार को रोकना चाहता था। परन्तु फ्रैंको को समर्थन देने के पीछे उसके वास्तविक उद्देश्य इस प्रकार थे:

- फ़्रांस को धमकाने के लिए मुसोलिनी स्पेन में अपना नौसैनिक अड्डा बनाना चाहता था।
- मुसोलिनी यूरोप में एक और फासीवादी राज्य चाहता था जो उसके सहयोगी के रूप में कार्य करे और शक्ति संतुलन इटली के पक्ष में झुक जाए।

- **रोम-बर्लिन धुरी:** 1936 में मुसोलिनी ने रोम-बर्लिन धुरी की घोषणा के साथ ही हिटलर से हाथ मिला लिया। इसका अर्थ यह था कि यूरोप के सभी शांतिप्रिय देश इटली और जर्मन गठबन्धन की काल्पनिक रेखा से निर्मित धुरी के चारों ओर घूमते रहेंगे। इस प्रकार से इटली और जर्मनी का मुख्य उद्देश्य जितना संभव हो सके उतने राज्यों को इस गठबन्धन व्यवस्था के प्रभाव के अंतर्गत लाना था।
- **कोमिन्टर्न विरोधी समझौता:** 1937 में इटली कोमिन्टर्न विरोधी समझौते में सम्मिलित हो गया जिसमें अब जापान, इटली और जर्मनी सदस्य थे। इस समझौते पर हस्ताक्षर करने से इटली के लोगों के बीच मुसोलिनी की लोकप्रियता घट गयी क्योंकि जनसामान्य इसे अंतर्राष्ट्रीय मामलों में एक आक्रामक दिखावे के रूप में देखता था। इटली की जनता को यह भय था कि कहीं मुसोलिनी इटली को एक और युद्ध में न धकेल दे।
- **म्यूनिख सम्मेलन (1938):** इसके परिणामस्वरूप जर्मनी को जर्मन जनसंख्या वाला क्षेत्र सुडेटनलैंड (चेकोस्लोवाकिया) प्राप्त हुआ। सम्मेलन में भाग लेने के फलस्वरूप घरेलू मोर्चे पर मुसोलिनी की लोकप्रियता में वृद्धि हुई क्योंकि यह सम्मेलन युद्ध से बचाव का प्रतीक था।
- **अल्बानिया पर आक्रमण (1939):** मुसोलिनी ने 1939 में अल्बानिया पर आक्रमण कर दिया। यह एक अनावश्यक आक्रामक कार्यवाही थी। इसका कारण यह था कि अल्बानिया पहले से ही इटली के आर्थिक प्रभाव में था तथा दोनों देशों के बीच मित्रवत सम्बन्ध थे और इसके अधिग्रहण से कोई वास्तविक लाभ भी नहीं मिलने वाला था। यहाँ इसका विशेष उद्देश्य केवल हिटलर की सफलताओं के समकक्ष पहुंचना था जिसने हाल ही (1938) में आस्ट्रिया पर अधिकार किया था। हिटलर के साथ लोकप्रियता की इस दौड़ में मुसोलिनी पिछड़ा हुआ नहीं दिखना चाहता था तथा वह उसके समकक्ष स्थिति प्राप्त करने की अभिलाषा रखता था।
- **इस्पात का समझौता (Pact of Steel- 1939):** यह समझौता इटली और जर्मनी के बीच किया गया था। इस संधि के द्वारा इटली पूर्ण रूप से जर्मनी का सहयोगी बन गया था और युद्ध की स्थिति में उसने पूर्ण सैन्य समर्थन देने का वचन दिया था।

42.1. एडोल्फ हिटलर और नाजी

चित्र: नाज़ी समर्थकों के साथ हिटलर

www.UPSCPDF.com

- 1933-39 तक की घटनाओं का आगे विवरण देने से पहले इस प्रश्न का उत्तर देना प्रासंगिक है कि "हिटलर के उद्देश्य क्या थे?"

42.1.1. हिटलर के उद्देश्य

- हिटलर 1933 में चांसलर बन गया था। हिटलर ने यह पहले ही स्पष्ट कर दिया था कि यदि नाजी पार्टी सत्ता में आई तो उसके उद्देश्य क्या होंगे। हिटलर जर्मनी को एक महान शक्ति बनाना चाहता था और उसकी प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करना चाहता था। उसके उद्देश्यों के पहले समूह में निम्नलिखित लक्ष्यों को रखा जा सकता है:
  - वर्साय की संधि को समाप्त करना।
  - शक्तिशाली सेना का निर्माण करना।
  - सभी जर्मन मूल के लोगों को थर्ड राइख़ के अंतर्गत लाने के लिए आस्ट्रिया एवं पोलैंड और चेकोस्लोवाकिया के कुछ भागों का अधिग्रहण करना, इन दोनों क्षेत्रों में काफी बड़ी मात्रा में जर्मन जनसंख्या अल्पसंख्यकों के रूप में निवास करती थी।
  - सार क्षेत्र, डेनजिंग बन्दरगाह और पोलैंड गलियारे को वापस प्राप्त करना।
- चूँकि इनमें से अधिकांश उद्देश्यों को 1938 तक बिना किसी युद्ध के प्राप्त कर लिया गया था तो अब प्रश्न यह उठता है कि द्वितीय विश्व युद्ध को क्यों रोका नही जा सका। यह प्रश्न हमें हिटलर के लक्ष्यों के दूसरे समूह की ओर ले जाता है, जिन पर विद्वानों में कुछ असहमति है। ये उद्देश्य इस प्रकार थे:
  - लेबेन्स्रम (Lebensraum अर्थात् रहने का स्थान): कुछ विद्वानों का तर्क है कि आस्ट्रिया और चेकोस्लोवाकिया एवं पोलैंड के कुछ भागों पर अधिकार का लक्ष्य, हिटलर के लक्ष्यों का आरम्भ मात्र था, उसके पश्चात् उसका उद्देश्य सम्पूर्ण चेकोस्लोवाकिया और पोलैंड पर अधिकार करना था। वह रूस में यूराल पर्वत तक अधिकार करना चाहता था। जर्मनी के इन मंसूबों के भय से रूस ने अपने कई कारखानों को यूराल के पूर्व में स्थानांरित कर दिया। इन क्षेत्रों पर जर्मनी के अधिग्रहण से जर्मनी को **लेबेन्स्रम या रहने का स्थान** प्राप्त हो जाता। इससे जर्मनी की खाद्य सुरक्षा भी सुनिश्चित हो जाती और यह ऐसे क्षेत्र का कार्य करता, जहाँ भविष्य में बढ़ी हुई जर्मन जनसंख्या को बसाया जा सकता था। इस प्रकार की योजना का एक अतिरिक्त लाभ साम्यवाद का विनाश भी होता।
  - अगला चरण था- अन्य यूरोपीय शक्तियों के अफ़्रीकी उपनिवेशों पर विजय और अटलांटिक महासागर में नौसैनिक अड्डों की स्थापना।
- कुछ विद्वानों का तर्क है कि हिटलर एक विश्व युद्ध नहीं, अपितु पोलैंड के साथ सीमित युद्ध चाहता था। हिटलर को यह पता नहीं था कि ब्रिटेन पोलैंड की रक्षा करने के वचन के प्रति गम्भीर है। चेकोस्लोवाकिया की तुलना में पोलैंड सैन्य रूप से कमजोर था और जब हिटलर ने चेकोस्लोवाकिया पर अधिकार किया तो ब्रिटेन ने तुष्टीकरण की नीति का अनुसरण किया। इससे पहले म्यूनिख सम्मेलन (1938) में ब्रिटेन ने सुडेटनलैंड को वस्तुतः हिटलर को भेंट में दे दिया था। यदि ब्रिटेन जर्मन विस्तार को रोकना चाहता तो पोलैंड की तुलना में चेकोस्लोवाकिया एक बेहतर सहयोगी हो सकता था।

42.1.2. हिटलर की सफलताएँ

- **विश्व निःशस्त्रीकरण सम्मेलन (1932-33)**: जब फ्रांस शस्त्रीकरण में जर्मनी को समान स्थिति दिए जाने पर सहमत नहीं हुआ तो हिटलर ने जर्मनी को विश्व निःशस्त्रीकरण सम्मेलन से अलग कर लिया। ब्रिटेन जर्मनी की मांग के प्रति सहानुभूति रखता था, क्योंकि उसे जर्मन मांग उचित लगती थी। इसमें जर्मनी की एक कुटनीतिक विजय थी, क्योंकि इस सम्मेलन के बाद हिटलर को जर्मनी का पुनः शस्त्रीकरण करने का बहाना मिल गया था।
- **पोलैंड के साथ दस वर्षीय अनाक्रमण संधि (1934):** पोलैंड सदा से ही जर्मनी की चालों के प्रति सशंकित था। उसे डर था कि जर्मनी पोलिश गलियारे को वापस लेने का प्रयास करेगा, जिसमें निम्नलिखित क्षेत्र सम्मिलित थे:

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

जैसा कि मानचित्र से स्पष्ट है, पोलिश गलियारे ने पूर्वी प्रशा को जर्मनी के शेष भागों से अलग कर दिया था और यह स्थिति जर्मनी की असंतुष्टि का कारण बनी। मित्र राष्ट्रों द्वारा युद्ध उद्देश्य के रूप में किये गए वादे के अनुसार बाल्टिक सागर तक पहुँच प्रदान करने के लिए वर्साय की संधि में पोलैंड को पोलिश गलियारा प्रदान किया गया था। पोलिश गलियारा प्राप्त हो जाने के पश्चात् पोलिश लोगों द्वारा किये गए दमन के कारण इस क्षेत्र से अल्पसंख्यक जर्मन लोगों का अत्यधिक पलायन हुआ। इस क्षेत्र की जनसंख्या में पोलिश लोग बहुसंख्यक थे। चूँकि पोलिश गलियारा पोलैंड को बाल्टिक सागर तक पहुंच प्रदान करता था अतः पोलैंड की आर्थिक स्वतंत्रता के लिए पोलिश गलियारा बहुत महत्वपूर्ण था। डेनजिंग शहर पोलैंड और जर्मनी दोनों ही से स्वतंत्र था।

इस दस वर्षीय अनाक्रमण संधि के प्रभाव निम्नलिखित थे :

- ब्रिटेन ने इसे हिटलर की शांतिपूर्ण भावना के प्रमाण के रूप में लिया।
- इस संधि ने लिटिल एंटेट (लघु सुदृढ़ संघ) को नष्ट कर दिया, जिस पर सहयोगियों के एक समूह के रूप में फ्रांस, युगोस्लाविया, चेकोस्लोवाकिया, रोमानिया और पोलैंड ने हस्ताक्षर किए थे। जर्मनी के आक्रमण की स्थिति में निवारक के रूप में लिटिल एंटेन्ट पोलैंड पर बहुत अधिक निर्भर था।
- इस संधि में चेकोस्लोवाकिया और आस्ट्रिया के विरुद्ध जर्मन आक्रमण की स्थिति में पोलिश तटस्थता की गारंटी दी गई थी। इस प्रकार यह जर्मनी की रणनीतिक जीत थी। उसका इरादा पहले चेकोस्लोवाकिया से सुडेटनलैंड लेना और फिर आस्ट्रिया पर अधिकार करना था। पोलैंड को संघर्ष से बाहर रख कर उसने अपने इन लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में अपनी स्थिति को सुदृढ़ कर लिया।
- इस संधि ने फ्रांस और रूस के सम्बन्धों में सुधार किया क्योंकि दोनों ही जर्मनी की महत्वाकांक्षाओं से खतरा अनुभव करते थे।

- **सार क्षेत्र (1935):** वर्साय की संधि के अंतर्गत यह वादा किया गया था कि 15 वर्ष पश्चात् (1920 से) सार में जनमत संग्रह कराया जायेगा। तब तक इसकी कोयला खदानों का उपयोग फ्रांस द्वारा किया जायेगा। लीग ऑफ़ नेशन्स के मैंडेट कमीशन ने सफलता पूर्वक जनमत संग्रह आयोजित किया और जब 90% लोगों ने जर्मनी के पक्ष में मत दिया तो उसे यह क्षेत्र सौंप दिया गया। पोलैंड के साथ गैर-आक्रामक संधि (1934) के पश्चात् हिटलर ने फ्रांस को शांत करने के लिए कहा कि सार के हस्तांतरण के पश्चात् फ्रांस और जर्मनी के सभी गिले-शिकवे समाप्त हो गये हैं।
- **कांस्क्रिपशन (Conscription-1935)**: कांस्क्रिपशन का अर्थ अनिवार्य सैन्य सेवा है। वर्साय की संधि में जर्मनी द्वारा इसे आरम्भ किये जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। परन्तु हिटलर ने

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

1935 में अनिवार्य सैन्य सेवा प्रारम्भ कर दी। ऐसा करने के पीछे उसका बहाना था कि ब्रिटेन ने अभी ही अपनी वायु सेना की शक्ति में वृद्धि की है और फ़्रांस ने अनिवार्य सैन्य सेवा की अवधि 12 महीने से बढ़ा कर 18 महीने कर दी है। यहाँ यह स्पष्ट है कि फ़्रांस और ब्रिटेन भी भविष्य की किसी भी सम्भावित आक्रामकता का सामना करने के लिए अपनी सेना को तैयार कर रहे थे। अनिवार्य सैन्य सेवा प्रारम्भ करने के पश्चात् हिटलर ने घोषणा की कि वह 6 लाख की संख्या में सैन्यबल तैयार करेगा। यह पुनः वर्साय की संधि का उल्लंघन था, जिसमें इसकी सीमा 1 लाख सैनिक निर्धारित की गयी थी। ब्रिटेन, फ़्रांस और इटली जो हिटलर की चालों के प्रति सशंकित थे, उन्होंने अपने आप को 1935 में स्ट्रेसा मोर्चे (Stresa Front) के रूप में संगठित कर लिया, जिसने हिटलर की अनिवार्य सैन्य सेवा की निंदा की और आस्ट्रिया पर अधिकार करने की किसी भी जर्मन योजना के विरुद्ध आस्ट्रिया की सीमाओं की रक्षा करने की गारंटी दी।

- **ब्रिटिश-जर्मन नौसैनिक संधि (1935):** यह फिर से हिटलर की कूटनीतिक जीत थी, क्योंकि इसके परिणामस्वरूप स्ट्रेसा मोर्चे को भंग (1935) कर दिया गया था। ब्रिटेन अपने सहयोगियों से परामर्श किये बिना ही इस समझौते पर आगे बढ़ गया था। इस संधि के अंतर्गत हिटलर ने जर्मन नौसेना को ब्रिटेन की नौसेना के 35% तक सीमित करने का प्रस्ताव रखा। इस संधि पर सहमत होने के पीछे ब्रिटेन का यह विचार था कि जब जर्मनी ने अनिवार्य सैन्य सेवा आरम्भ कर ही दी है तो इस संधि के माध्यम से अब ब्रिटेन जर्मनी के शस्त्रीकरण को नियंत्रित करने में सफल हो जाएगा। चूँकि ब्रिटेन युद्ध नहीं चाहता था अतः उसके अनुसार एक शांत जर्मनी सुनिश्चित करने का यह सर्वश्रेष्ठ उपाय था। ब्रिटिश-जर्मन नौसैनिक संधि के प्रभाव से ही जर्मनी के शस्त्रीकरण में अत्यधिक वृद्धि हुई। 1938 तक, जर्मनी के पास 8 लाख एक्टिव और रिज़र्व सैनिक, 5000 वायुयान, 47 यु-बोट (पनडुब्बियाँ) और 21 विशाल पोत थे, जिनमे युद्ध-पोत, क्रूजर और डिस्ट्रॉयर थे।
- **राइनलैंड का पुनः सैन्यीकरण (1936):** ब्रिटेन और फ़्रांस के एबीसीनिया के संकट में व्यस्त होने का लाभ उठाते हुए हिटलर ने राइनलैंड में सैन्यबल भेज दिया। यह वर्साय संधि का और लोकार्नो संधियों (1925) में स्ट्रेसमेन की वचनबद्धता का उल्लंघन था।
- **रोम-बर्लिन धुरी (1936):** यह इटली और जर्मनी के बीच एक संधि थी। इसका आशय यह था कि यूरोप के सभी शांतिप्रिय देश इटली और जर्मनी के मध्य एक काल्पनिक रेखा के इर्द-गिर्द घुमते रहेंगे।
- **कोमिंटर्न विरोधी संधि (1936):** यह गठबंधन बनाने की दिशा में एक कदम था। जर्मनी और जापान इसके मूल हस्ताक्षरकर्ता थे। 1937 में इटली भी इस कोमिंटर्न विरोधी संधि में सम्मिलित हो गया। इस गठबंधन का लक्ष्य सम्बन्धित देशों में साम्यवाद के प्रसार को रोकना था। यह फ़्रांस और ब्रिटेन के लिए एक संकेत भी था कि सदस्यों का आक्रामक रुख रूस की ओर अधिक था न की फ़्रांस और ब्रिटेन की ओर।
- **स्पेन का गृह युद्ध (1936):** जर्मनी ने फ्रैंको के पक्ष में युद्ध में भाग लिया। हिटलर ने स्पेन पर बमबारी का आदेश दिया, जिसके परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में निर्दोष नागरिकों को जान गंवानी पड़ी। इससे ब्रिटेन और फ़्रांस भयभीत हो गये और इस प्रकार के किसी भी विनाशक युद्ध को टालने के लिए हिटलर को प्रसन्न रखने का प्रयास करने लगे।
- **आस्ट्रिया के साथ अंसचल्स (Anschluss) (1938):** अंसचल्स का अर्थ है संघ। आस्ट्रिया में लाखों की संख्या में जर्मन निवास करते थे। वर्साय की संधि में जर्मनी और आस्ट्रिया के एकीकरण को प्रतिबंधित कर दिया गया था। 1931 में जर्मनी ने इस एकीकरण की दिशा में पहला कदम आस्ट्रिया-जर्मनी के मध्य सीमा शुल्क संघ की स्थापना करने के सुझाव के रूप में उठाया। फ़्रांस ने अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में अपील की, जिसने सीमा शुल्क एकीकरण के विरुद्ध निर्णय दिया। रूस और इटली भी सीमा शुल्क एकीकरण के विरुद्ध थे क्योंकि यह जर्मन राष्ट्रवाद का प्रतीक था। 1934 में हिटलर ने आस्ट्रिया पर अधिकार करने का पहला प्रयास किया। इस प्रयास को इटली ने विफल कर दिया, क्योंकि जब आस्ट्रिया के नाजियों ने आस्ट्रिया के चांसलर की हत्या कर दी और जर्मनी आस्ट्रिया पर आक्रमण करने वाला था तो इटली ने आस्ट्रिया की सीमाओं पर स्थित ब्रेनर पास (दर्रे)

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

पर अपनी सेना भेज दी। इटली से युद्ध होने के भय से हिटलर आगे नहीं बढ़ा। परन्तु शीघ्र ही उसने इटली के विरोध को निष्प्रभावी करने के प्रयास किए। जब मुसोलिनी ने अबीसीनिया पर आक्रमण किया (1935) तो हिटलर ने कोई आपत्ति नहीं की। इसके अतिरिक्त 1936 में उसने रोम-बर्लिन धुरी बनाकर के इटली को अपना सहयोगी बना लिया। अबीसीनिया पर अधिकार करने पर हिटलर द्वारा प्रतिबन्ध न लगाए जाने के बदले में इटली ने आस्ट्रिया पर अधिकार के अपने दावों को वापस ले लिया। 1938 में अंततः अंसचल्स संपन्न हुआ। आस्ट्रिया के नाजियों ने आस्ट्रिया में सरकार के विरुद्ध विशाल प्रदर्शन किया। जर्मनी ने आस्ट्रिया के सम्मुख 10 मांगें प्रस्तुत कीं, जिनमें से एक मांग थी की गृह मंत्री के पद पर एक नाजी को नियुक्त किया जाए। चांसलर ने शीघ्र ही आस्ट्रिया एवं जर्मनी के एकीकरण के प्रश्न पर जनमत संग्रह आयोजित किया। चांसलर कुछ हद तक एक नकारात्मक परिणाम के लिए आश्वस्त था। परिणामों की अनिश्चितता से हिटलर ने आस्ट्रिया पर आक्रमण की धमकी दी। उसने कहा कि वह "वियना को आस्ट्रिया का स्पेन बना देगा" परिणामस्वरूप चांसलर ने त्यागपत्र दे दिया, जिसके बाद आस्ट्रिया की नाजी सरकार ने आस्ट्रिया पर अधिकार करने के लिए हिटलर को आमंत्रित किया। ब्रिटेन और फ्रांस ने मौखिक रूप से विरोध किया। उन्हें जर्मनी के साथ युद्ध का भय था और स्पेन के गृह युद्ध (1936) में हिटलर द्वारा निर्दोष नागरिकों पर की गई बमबारी को देखते हुए वह युद्ध से होने वाली नागरिकों की जान की संभावित क्षति को रोकना चाहते थे।

विलय का प्रभाव:

- चेकोस्लोवाकिया के लिए यह एक गम्भीर खतरा था, जिस पर अब तीन दिशाओं से आक्रमण हो सकता था अर्थात दक्षिण से (आस्ट्रिया), पश्चिम और उत्तर से (जर्मनी)।
- शीघ्र ही जर्मनी ने म्यूनिख सम्मेलन (1938) में सुडेटनलैंड की मांग की और उसे प्राप्त कर लिया और इस प्रकार चेकोस्लोवाकिया के बहुत से उद्योग जर्मनी को चले गए।

- **म्यूनिख सम्मेलन (1938)**: इसके परिणामस्वरूप जर्मन जनसंख्या वाला क्षेत्र सुडेटनलैंड (चेकोस्लोवाकिया) जर्मनी को प्राप्त हो गया। चेकोस्लोवाकिया में लोकतंत्र के कारण हिटलर चेकोस्लोवाकिया से घृणा करता था, क्योंकि इसकी रचना वर्साय की संधि से हुई थी। जर्मनी के लिए लेबेन्स्राम के अपने स्वप्न को पूरा करने हेतु हिटलर चेकोस्लोवाकिया पर अधिकार करना चाहता था। उसे विशेषरूप से सुडेटनलैंड चाहिए था, क्योंकि यह औद्योगिक रुप से बहुत समृद्ध था और वहां जर्मन जनसंख्या भी अधिक थी। हिटलर ने यह तर्क देना प्रारम्भ किया कि सुडेटनलैंड में सरकार जर्मन लोगों से भेदभाव करती है। यह इस तर्क पर आधारित था कि अन्य समूहों की तुलना में जर्मन लोगों में बेरोजगारी अधिक थी। सुडेटनलैंड में नाजियों ने विशाल विरोध प्रदर्शन आयोजित किए। ऐसा महसूस किया जा रहा था कि सुडेटनलैंड पर अधिकार करने के लिए हिटलर चेकोस्लोवाकिया पर आक्रमण करेगा और इसलिए म्यूनिख में एक सम्मेलन आयोजित किया गया। म्यूनिख सम्मेलन में, इटली, फ्रांस और जर्मनी ने भाग लिया। USSR और चेकोस्लोवाकिया को आमंत्रित भी नहीं किया गया था। सम्मेलन का यह निर्णय था कि जर्मनी सुडेटनलैंड पर तो अधिकार कर सकता है परन्तु वह चेकोस्लोवाकिया पर इससे अधिक दावा नहीं करेगा। ब्रिटेन और फ्रांस ने चेकोस्लोवाकिया को यह भी बता दिया कि यदि वे म्यूनिख समझौते को स्वीकार नहीं करते तो जर्मनी द्वारा आक्रमण की स्थिति में वे उसकी सहायता के लिए नहीं आएंगे। यह लोकार्नो संधियों के विरुद्ध था। हालांकि लोकार्नो संधि में जर्मनी ने चेकोस्लोवाकिया के साथ अपनी सीमाओं को लेकर कोई गारंटी नहीं दी थी परन्तु फ्रांस ने पोलैंड और चेकोस्लोवाकिया पर जर्मनी के आक्रमण की स्थिति में उनकी सहायता के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की थी। ब्रिटेन और फ्रांस द्वारा सहायता से इनकार करने के फलस्वरूप चेकोस्लोवाकिया म्यूनिख संधि पर सहमत हो गया। सुडेटनलैंड को गंवा कर उसने अपने भारी उद्योगों का 70% और जर्मनी के विरुद्ध अपनी किलेबंदी को खो दिया था। परिणामस्वरूप सरकार के प्रभाव में कमी और आर्थिक समस्याओं के कारण स्लोवाकिया ने भी अलगाव की मांग प्रारम्भ कर दी। शीघ्र ही, कानून और व्यवस्था की समस्याएं भी खड़ी होने लगी थीं।
- **शेष चेकोस्लोवाकिया का अधिग्रहण (1939):** म्यूनिख सम्मेलन के पश्चात् उत्पन्न परिस्थितियों में, हिटलर ने चेकोस्लोवाकिया के राष्ट्रपति को कानून व्यवस्था बहाल करने के लिए जर्मन सैनिकों से

VISION IAS
WWW.UPSCPDF.com

अनुरोध करने के लिए विवश किया। शीघ्र ही जर्मन सेना चेकोस्लोवाकिया में प्रवेश कर गई और उस पर अधिकार कर लिया। ब्रिटेन और फ्रांस ने केवल मौखिक विरोध ही किया। ब्रिटेन ने कहा कि शेष चेकोस्लोवाकिया पर गारंटी लागू नहीं होती है, क्योंकि उसने स्वयं ही जर्मन सेनाओं को आने का अनुरोध किया था और तकनीकी रूप से यह आक्रमण नहीं था।

- **पोलैंड पर आक्रमण (1939):** चेकोस्लोवाकिया पर अधिकार के पश्चात्, ब्रिटेन ने यह निर्णय लिया कि अब जर्मनी का और अधिक तुष्टीकरण नहीं किया जाएगा। पोलैंड का अधिग्रहण अनुचित था। अब तक हिटलर ने अपने सभी क्षेत्रीय अधिग्रहणों को जातीयता और वर्साय की संधि के आधार पर उचित ठहराया था। गैर-जर्मन जनसंख्या वाले क्षेत्र के अधिग्रहण की यह पहली कार्यवाही थी। जब हिटलर ने घोषणा की, कि उसे डेनजिंग चाहिए तो ब्रिटेन और फ़्रांस ने पोलैंड की रक्षा के लिए अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। हिटलर पोलिश गलियारे के मध्य से रेल और सड़क मार्ग चाहता था, ताकि शेष जर्मनी को पूर्वी प्रशा से जोड़ा जा सके। यद्यपि यह मांग अनुचित नहीं थी, क्योंकि डेनजिंग में 95% जर्मन जनसंख्या रहती थी और पूर्वी प्रशा से कनेक्टिविटी तार्किक थी, परन्तु यह माँग चेकोस्लोवाकिया की हार के तुरंत बाद उठी थी, इसलिए पोलैंड इसके पश्चात् होने वाले सम्पूर्ण आक्रमण की आशंका से भयभीत था। ब्रिटेन ने पोलैंड वासियों पर दबाव बनाने का प्रयास किया, परन्तु उन्होंने जर्मन मांगों को अस्वीकार कर दिया। हिटलर ने रूस को तटस्थ रखने के लिए 1939 में रूस के साथ एक अनाक्रमक संधि पर हस्ताक्षर किये और पोलैंड पर पूर्ण आक्रमण कर दिया। इसके साथ ही द्वितीय विश्व युद्ध आरम्भ हो गया।

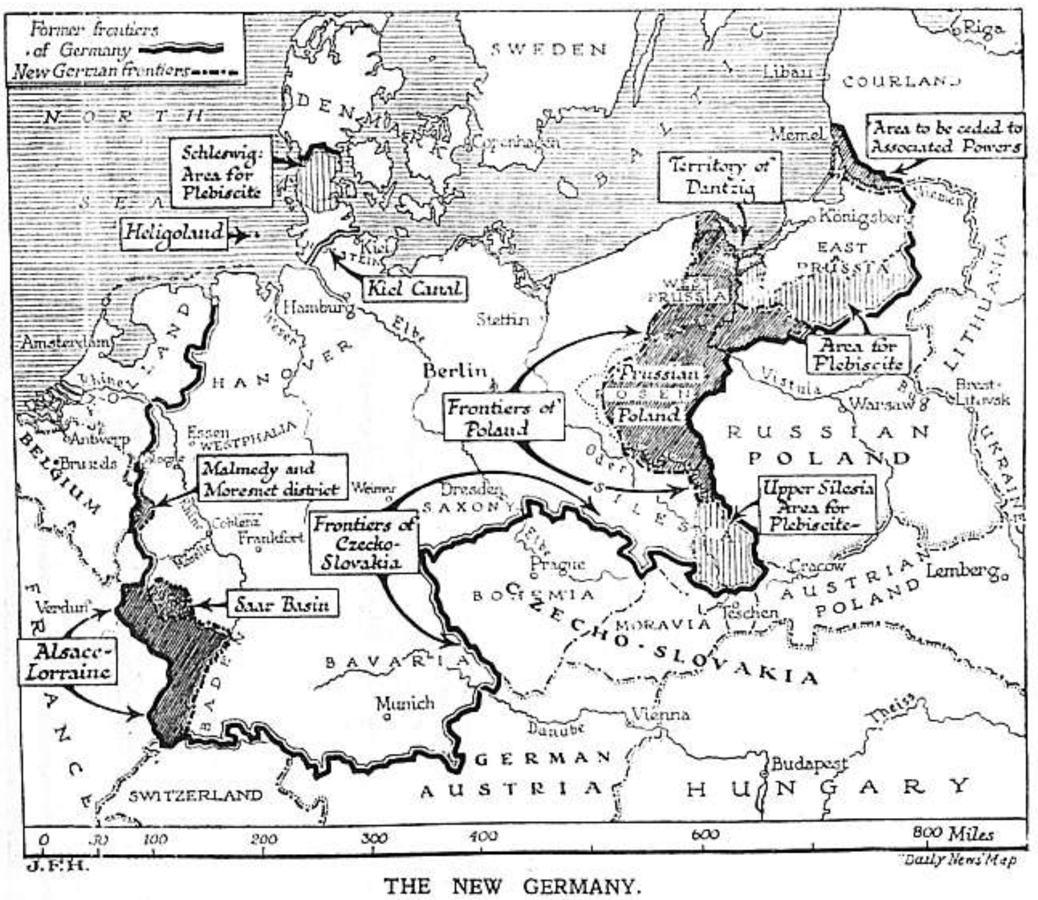

THE NEW GERMANY.

चित्र: जर्मन विस्तार

प्रमुख विषय 4: ब्रिटेन और कुछ सीमा तक फ़्रांस ने भी पुनरुत्थानशील जर्मनी के प्रति तुष्टीकरण की नीति अपनाई। इटली और जापान भी अपने आक्रामक कृत्यों के परिणामों से बच निकलते हैं, क्योंकि राष्ट्रसंघ विस्तारवादी प्रवृत्तियों की धमकियों से निबटने में पूर्णतः विफल रहा।

www.UPSCPDF.com

जर्मनी द्वारा वर्साय की संधि का उल्लंघन और जापान एवं इटली का आक्रामक कार्यवाहियों के लिए प्रतिबंधों से बच निकलना सीधे तौर पर तुष्टीकरण की नीति का परिणाम था। इस नीति का अनुसरण करने के निम्नलिखित कारण हैं:

- **युद्ध को टालना**: अन्य शक्तियाँ युद्ध से बचना चाहती थीं, क्योंकि वे आर्थिक और सैन्य रूप में सशक्त नहीं थीं इसलिए वे उस प्रकार के युद्ध में विजय प्राप्त नहीं कर सकती थीं। इस प्रकार के युद्ध का परिणाम सम्भवतः गतिरोध ही होता। ब्रिटेन और फ़्रांस अपने नगरों पर बमबारी और नागरिकों की मृत्यु से भयभीत थे, जिसका विभत्स प्रदर्शन जर्मनी द्वारा स्पेन के गृह-युद्ध (1936) में किया जा चुका था।
- **आर्थिक संकट (1929):** अन्य यूरोपीय शक्तियाँ शस्त्रीकरण के अत्यधिक खर्च का वहन नहीं कर सकती थीं। वे अभी पूरी तरह से आर्थिक संकट से उबर नहीं पाई थीं।
- **जनमत:** ब्रिटेन के लोग युद्ध के विरुद्ध थे। प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् युद्ध के प्रति लोगों के दृष्टिकोण में नाटकीय परिवर्तन आया था। व्यवसायी भी युद्ध के विरुद्ध थे क्योंकि यह उनके आर्थिक हितों को ठेस पहुँचाता था। एक युद्ध पूरी अर्थव्यवस्था को सैन्य उत्पादन के अनुकूल बना देता है और बमबारी से मूलभूत ढांचों एवं औद्योगिक हितों को हानि पहुँचती है।
- **सहानुभूति:** कई समूह यह महसूस कर रहे थे कि जर्मनी और इटली की शिकायतें वास्तविक थीं। इसने जर्मनी और इटली से निबटने के लिए सैन्य बल का प्रयोग रोक दिया। विशेषकर, ब्रिटेन में कई नेताओं का दृष्टिकोण सहानुभूतिपूर्ण था और संभावित युद्ध को रोकने के लिए इसके कई नेता स्वयं ही वर्साय संधि की कठोर शर्तों को संशोधित करने की मांग कर रहे थे। इस प्रकार अंग्रेज़ वर्साय की संधि को ही युद्ध के वास्तविक कारण के रूप में देख रहे थे और इसलिए उन्होंने जर्मनी की उन मांगों के प्रति सहमति जताई, जो संधि के कठोरतम शर्तों को निरस्त करने के लिए लक्षित की जा रही थी। इसलिए उन्होंने तुष्टीकरण की नीति का अनुसरण किया।
- **राष्ट्रसंघ की विफलता**: राष्ट्रसंघ निष्प्रभावी सिद्ध हुआ और इसका संकेत 1937 में निर्वाचित प्रधानमन्त्री चैम्बरलेन के कथन से मिलता है कि "अंतर्राष्ट्रीय कानून का सम्मान करने के लिए वार्ता के माध्यम से विभिन्न नेताओं के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क महत्त्वपूर्ण है।" उसने जर्मनी के साथ विवादों को सुलझाने के लिए युद्ध के स्थान पर कूटनीति का समर्थन किया।
- **आर्थिक सहयोग:** ब्रिटेन के लिए जर्मनी एक निर्यात बाजार था और इसलिए ब्रिटिश यह मानते थे कि आर्थिक सहयोग दोनों देशों के हित में है। ब्रिटेन का विश्वास था कि यदि वह जर्मनी की आर्थिक बहाली में सहायता करेगा तो जर्मनी ब्रिटेन के प्रति मित्रतापूर्ण सम्बन्ध रखेगा।
- **साम्यवादी रूस का भय** नाजियों के भय से कहीं अधिक था। यह विशेष रूप से ब्रिटेन और फ़्रांस के रूढ़िवादी समूहों के सम्बन्ध में सत्य था। उन्होंने नाजी जर्मनी को पश्चिम की ओर बढ़ने वाले साम्यवादी विस्तार के प्रतिरोधक के रूप में देखा। इसलिए उन्होंने जर्मन शस्त्रीकरण का विरोध नहीं किया।
- **विलम्ब करना**: कुछ विद्वानों का तर्क है कि अंग्रेजों ने तुष्टीकरण की नीति का अनुसरण स्वयं का शस्त्रीकरण करने के लिए समय प्राप्त करने के लिए किया। आर्थिक संकट के कारण आर्थिक समस्याओं और प्रथम विश्व युद्ध के परिणामों के कारण, ब्रिटेन और फ़्रांस में कुछ नेताओं का यह मत था कि तुष्टीकरण की प्रक्रिया जितनी अधिक लम्बी होगी, उतना ही समय उन्हें शस्त्रीकरण के लिए मिल सकेगा। चैम्बरलेन ने तुष्टीकरण की नीति के साथ साथ शस्त्रीकरण में भी वृद्धि की। उसका यह मत था कि शस्त्रीकरण और तुष्टीकरण की दोहरी तलवार एक निवारक का कार्य करेगी।

प्रमुख विषय 5 : तुष्टीकरण की नीति फासीवादियों की सहायता करती है, परन्तु इसके कारण गलत पूर्वानुमान भी हो जाता है, जो अंततः द्वितीय विश्व युद्ध की ओर ले जाता है। जर्मनी को रोकने के लिए यूरोपीय शक्तियों का प्रयास अंततः निरर्थक सिद्ध हुआ।

तुष्टीकरण के अन्य पक्ष

- इसने फासीवादी शक्तियों के बीच एक धारणा उत्पन्न किया जिसके कारण गलत अनुमान लगाए गए। हिटलर ब्रिटेन और फ़्रांस की सुस्ती और निर्बलता के विषय में आश्वस्त था। उसने सोचा था

VISION IAS
www.UPSCPDF.com

कि यदि जर्मनी; पोलैंड (जिसकी सुरक्षा की गारंटी अंग्रेजों ने दी थी) पर आक्रमण भी करता है, तो भी कोई कुछ कार्यवाही नहीं करेगा।

- **जर्मनी को रोकने के लिए अन्य शक्तियों के प्रयास:**
  - फ़्रांस तुष्टीकरण के विरुद्ध था। उसने जर्मनी को आस्ट्रिया-जर्मनी कस्टम एकीकरण (1931) के प्रस्ताव के विरुद्ध अंतर्राष्ट्रीय स्थायी न्यायालय में खींचा था। इसने जर्मनी के अनिवार्य सैन्य सेवा (1935) के विरुद्ध स्ट्रेसा मोर्चा बनाया। स्ट्रेसा मोर्चे ने जर्मन आक्रमण को रोकने के लिए आस्ट्रिया की सीमाओं की गारंटी दी थी।
  - 1934 में इटली ने अंसचल्स (Anschluss) के पहले प्रयास को रोका था।
  - फ़्रांस ने यह सुनिश्चित किया था कि USSR 1934 में राष्ट्रसंघ में प्रवेश करे। इसे जर्मनी के विरुद्ध उपयोग किया गया था। फ़्रांस इटली तथा सोवियत संघ के साथ मिलकर एक जर्मन विरोधी गठबन्धन बनाना चाहता था।
  - इटली ने 1933 में USSR के साथ एक अनाक्रमण संधि पर हस्ताक्षर किया था। परन्तु रूस-फ़्रांस गठबन्धन में सैन्य सहयोग के लिए कोई प्रावधान नहीं था क्योंकि फ़्रांस का नेतृत्व कम्युनिस्टों पर विश्वास नहीं करता था। ऐसा इसलिए था क्योंकि मास्को ने लम्बे समय तक कम्युनिस्टों को यह निर्देश दे रखा था कि वे फ़्रांस के अन्य वामपंथी दलों के साथ सहयोग न करें।
- **होअरे-लवाल संधि (Hoare-Laval pact- 1935):** यह ब्रिटेन और फ़्रांस के बीच एक गुप्त संधि थी। इस संधि का उद्देश्य अबीसीनिया का विभाजन करना और इसका अधिकांश भाग इटली को देना था। यह समझौता असफल हो गया क्योंकि इसकी जानकारी लीक हो गई थी जोकि ब्रिटेन और फ़्रांस की जनता में आक्रोश का कारण बनी।
- **फ़्रांस ने तुष्टीकरण की नीति का अनुसरण क्यों किया?:** फ़्रांस तुष्टीकरण को रोकने में विफल रहा और कई बार स्वयं भी तुष्टीकरण की नीति पर चला, क्योंकि फ़्रांस दक्षिणपंथियों और वामपंथियों में विभाजित हो चुका था। दक्षिणपंथी साम्यवादी रूस के विरुद्ध प्रतिरोधक के रूप में हिटलर का समर्थन करते थे।

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.